

भूमिका ।

मनुष्योंकी आरोग्यताके निमित्त वैद्यकशास्त्रकी बहुतही आवश्यकता होती है, कारण कि, द्रव्याके गुण दोष जानकर उनका व्यवहार करनेसे शरीरमें सदृश रोगोंका सञ्चार नहो होता है, रोगपानके वाक्पदार्थ हैं सभीमें गुण दोष विद्यमान हैं, इस कारण जो उनको जानकर भोजनादिमें प्रवृत्त होता है, वह सुखपाता है, वैद्यकशास्त्र तीन भागोंमें विभक्त है, निघण्ट, निदान और चिकित्सा निघण्टमें द्रव्योंके गुणदोष, निदानमें रोगोंके लक्षण और चिकित्सामें रोगोंका निवारण औषधियां द्वारा वर्णन किया है, यद्यपि तीनों भाग बड़ेही उपकारी हैं परन्तु इनमें पहला "द्रव्यगुण" सबसे उपयोगी और वैद्यकशास्त्रमें प्रवेश होनेका दायें है। प्रथम औषधी आदिके गुण दोष जानकर फिर निदानसे रोग निश्चयकर उसकी दूर करनेवाली औषधी प्रदान की जाती है इसकारण सबसे प्रथम निघण्टका अनुशीलन करना उचित है और केवल वैद्याहीणों नहीं गृहस्थभावकों निघण्टका ज्ञानन उचित है, जिसे जानकर अहितकारक वस्तुओंका सेवन न करके रोगसे बचकर पूर्णभाग्य भोगसकत है।

प्रथमही जब वैद्यकशास्त्रकी प्रवृत्ति हुई थी, तब इस भारतवर्षमें महात्मा ऋषिर्षे निवेदाद्वारा भनक ग्रन्थ निर्माण कर इसदेशको वरतिवे शिखरपर पहुँचादिपाया, यत्कालमेंसे जब अनन्तरपर यवनाने इतदेशको आक्रमण किया तब सदृशो प्रथ सत्कार्ये भस्मि जलादिवेग्ये, तब इच्छिणीयपुत्रचाने उनको पराजितकर यह भारतभूमि कुछ हस्त्यकी और बहुत रोगकर प्राचीन ग्रन्थाया उद्धार किया और पश्चात् इस देशनिवासिपानभी अनेकपन्न स्थापितकर प्राचीनग्रन्थोंको रोगपर पुनरुद्धारकरना निषयकिया है और बहुत रोगपर विविधविषयकप्रथ प्रकाशित विषयगत है।

परन्तु सदृश वैद्यकशास्त्रोंके प्रथम अर्भातक खेवडा प्रथमी प्रकाशित नहीं हुए हैं, इसकारण देशभाषाविसद्वित सर्वसाधारणके उपकारके निमित्त वैद्यक ग्रन्थ प्रकाशित होनेकी बहुतही आवश्यकता है कारण कि, सर्व साधारणको सदृश वा ज्ञान न होनेसे शास्त्राया मर्म समझमें नहीं आता, इसकारण भाषांतरकर उनको शास्त्रोंका भाव समझना बहुतउचित है, जिससे ये अपने पुरंगोंके परिश्रमको देखकर लाभ उठाये।

यही विचारकर हमने वैद्यक महामहोपाध्याय श्रीमच्छत्राणिदत्तविरचित "द्रव्य गुण" का भाषाटीकाकर वैद्यकशास्त्रसंगुणप्रादव "श्रीचक्रेश्वर" यन्त्रापिपत्ति श्रीपुत खेमराज श्रीकृष्णदासजी महाशयको सब प्रकारके स्वागतहित समर्पण कर दिया है।

यद्यपि यह टीका सर्वसाधारणके उपकारके निमित्त है। प्रकाशित किया है परन्तु भाषाद्विषी जीवि भाषाजी "मूर्धमनोरजनी" बहवरमी भाषने वाक्पदार्थ भाषामही नियाँद करते हैं ये महाशय वदाचित इससे सङ्गृह न होगे, कारण कि ऐसेही महात्माभावे यत्नोंमें भीहुईसरकृतकी अनेकपुस्तकें उपनिद्धाभावा भाषादोर्गद।

शेषमें पाठ्य महाशयोंके प्रार्थना है कि, आप यदि इसमें कोई भूत्पूर पाये तो अपनी वदार्तासे क्षमाकर हस्तके समान गुणप्रादीहो यहप्रथम भाषने उपकारके निमित्तही प्रकाशित किया गया है।

आपका-पण्डित ज्वालाप्रसादमिश्र, मोहनादीनगपुरा-मुरादाबाद

भूमिका ।

मनुष्योंकी आरोग्यताके निमित्त वैद्यकशास्त्रकी बहुतही आवश्यकता होती है, कारण कि, द्रव्योंके गुण दोष जानकर उनका व्यवहार करनेसे शरीरमें सहसा रोगोंका सञ्चार नहीं होता है, खानपानके यावत्पदार्थ है सभीमें गुण दोष विद्यमान है, इस कारण जो उनको जानकर भोजनादिमें प्रवृत्त होता है, वह सुखपाता है, वैद्यकशास्त्र तीन भागोंमें विभक्त है, निषण्ड, निदान और चिकित्सा निषण्डमें द्रव्योंके गुणदोष, निदानमें रोगोंके लक्षण और चिकित्सामें रोगोंका निवारण औषधियों द्वारा वर्णन किया है, यद्यपि तीनों भाग बड़ेही उपयोगी हैं परन्तु इनमें पहला "द्रव्यगुण" सबके उपयोगी और वैद्यकशास्त्रमें प्रवेश होनेका द्वार है। प्रथम औषधी आदिके गुण दोष जानकर फिर निदानसे रोग निश्चयकर उसकी दूर करनेवाली औषधी प्रदान की जाती है इसकारण सबसे प्रथम निषण्डका अनुशीलन करना उचित है और केवल वैद्योंहीको नहीं गृहस्थमात्रकी निषण्डका ज्ञान भी उचित है, जिसे जानकर अहितकारक वस्तुओंका सेवन न करके रोगसे बचकर पूर्णआयु भोगसकता है।

प्रथमही जब वैद्यकशास्त्रकी प्रवृत्ति हुई थी, तब इस भारतवर्षमें महात्मा ऋषियोंने वेदानुसार अनेक ग्रन्थ निर्माण कर इसदेशको उन्नतिके शिखरपर पहुँचा दिया था, फाल्गुनमें जब भगवत्पाद परमार्थने इतने वैश्वकी आक्रमण किया तब सहस्रो ग्रन्थ सस्कृतके भाषिमें जलादिये गये, तब इंग्लैण्डीय पुरुषोंने उनकी पराजितकर यह भारतभूमि कुछ स्वस्वकी और बहुत खोजकर प्राचीन ग्रन्थोंका उद्धार किया और पश्चात् इस देशनिवासियोंभी अनेक पन्थ स्थापितकर प्राचीनग्रन्थोंको खोजकर पुनरुद्धारकरना निश्चय किया है और बहुत खोजकर विविधविषयकग्रन्थ प्रकाशित किये जाते हैं।

परन्तु सहस्रो वैद्यकशास्त्रोंके ग्रन्थोंमें अभी तक सैकड़ों ग्रन्थोंभी प्रकाशित नहीं हुए हैं, इसकारण देशभाषाकेसहित सर्वसाधारणके उपकारके निमित्त वैद्यकोंके ग्रन्थ प्रकाशित होनेकी बहुतही आवश्यकता है कारण कि, सर्व साधारणको सस्कृत का ज्ञान न होनेसे शास्त्रोंका मर्म समझमें नहीं आता, इसकारण भाषान्तरकर उनको शास्त्रोंका भाषण समझना बहुत उचित है, जिससे वे अपने पूर्वजोंके परिश्रमको देखकर लाभ उठावें।

यही विचारकर हमने वैद्यवर महामहोपाध्याय श्रीमन्नरूपानिन्दितविरचित "द्रव्यगुण" का भाषाटीकाकर वैद्यवशावतसगुणग्राहक "श्रीवैकटेश्वर" यन्त्राधिपति श्रीगुप्त खेमराज श्रीकृष्णदासजी महाशयको सब प्रकारके स्वागतसहित समर्पण कर दिया है।

यद्यपि यह टीका सर्वसाधारणके उपकारके निमित्त ही प्रकाशित किया है परन्तु भाषाद्वेषी जोकि भाषाको "मूर्खमनोरंजनी" कहकर भी अपने यावत्कार्य भाषामें ही निर्याद करते हैं वे महाशय कदाचिद् इससे सन्तुष्ट न होंगे, कारण कि ऐसे ही महात्माओंके घरोंमें वैद्यीहर्ष सस्कृतकी अनेक पुस्तकें उपनिद्धाओंका आहार हो गई।

शेषमें पाठक महाशयोंसे प्रार्थना है कि, आप यदि इसमें कोई भूलभूक पावें तो अपनी उदारतासे क्षमाकर इसके समान गुणग्राहीही यह ग्रन्थ आपके उपकारके निमित्त ही प्रकाशित किया गया है।

आपका-पण्डित ज्वालाप्रसादमिश्र, मोहल्ला दीनदारापुरा-मुरादाबाद.

विषय.	पृष्ठांक.
मोरकामांस	११
कबूतरकामांस	११
जंगलीकबूतरकामांस	१३
जंगलीभैतकबूतरकामांस	११
वनकेमुरगेकामांस	१४
ग्राम्यमुरगेकामांस	११
वनकुलिंगकामांस	११
ग्रामकुलिंगकामांस	११
तोतेका मांस	११
हंसकामांस	११
शरारि, वक्रकलहंस बलाका मांस	११
कुर्मादिकेगुण	११
कालेकैकडेकामांस	१५
गोयकामांस	११
खेदीकामांस	११
गूपककामांस	११
मांसभेद	११
जागलभनूपमांस भेद	११
जंघलजीवोंकामांस	११
विष्किरजीवोंका	१६
मनुदजीवोंका	११
गुहाशापीजीवोंका	११
प्रसहजीवोंका	११
पर्णमृगोंकामांस	१७
घिलमंशयनकरनेवालोंका	११
ग्राम्यजीवोंका	११
नदीकेकिनारेफिरनेवालेजीवोंका	११
क्षेत्रेबाछेजीवोंका	११
घोशस्थ औरचरणवालोंका	११
मत्स्यगुण	१८
रोहूमांस्यगुण	११
शकुलमत्स्य	११
शिलिन्दमत्स्य	११
धाडीमत्स्य	११
इल्लिमत्स्य	१८
एलद्रमत्स्य	११
पर्वतमत्स्य	११
भाकुटमत्स्य	१९

विषय.	पृष्ठांक.
पाठीनमत्स्य	११
वर्मिमत्स्य	११
कुलिसमत्स्य	११
कुब्जमत्स्य	११
मनूरमत्स्य	११
गुथमत्स्य	११
चलदंष्ट्रमत्स्य	११
क्षुद्रमत्स्य	११
मत्स्यकच्छपादिकेअण्डे	११
देशभेदेसीयोंकेअवयवगुण	११
निषिद्धमांस	२०
वर्जितमांस	२१
श्रेष्ठमांस	११
लघुमच्छिपोंकेअण्डे	११
मत्स्यकेअण्डे	११
हंसकेअण्डे	११
सूक्ष्ममछली	११

शाकवर्गः । २२

शाकगुणभेद	११
जीवन्तीगुण	११
पौलंडी	११
बधुआ	११
चिल्लीशाक	११
मूलकपोतिका	११
पकीमूली	११
सखीमूली तथा फल	२३
हुलहुल	११
पौई	११
सुनसुनिर्ण	११
मरसा	११
पालक	१८
कत्तौबी	११
कालशाक	२४
मटर और उसकेपत्ते	११
समीलिक	११
चना	११
पुनर्नवा	११

विषय.	पृष्ठांक.
कंचट	११
अम्बिलोना	११
चूका	११
कलम्बिका	११
सरसोकाशाक	२५
सुन्दरीशाक	११
नाडीशाक	११
पडोळपात	११
नीम	११
परपट धेतअग्र	११
काकमाखी कवैया	११
वत्सादनी	११
सरसो	२६
करज	११
शठ गूलर पीपल शाकसिपते	११
खोमराजी	११
बंगन	११
कटरीबोफल	११
फारिखलफाकोडी	११
पेठा	११
पफापेठा	२७
पेठकीनाडी	११
गडीकवली	११
कफोच	११
गवीनककडी	११
खीरा	११
शीर्णवृन्त (सपूजनेव)	११
अळानूकड	११
दुम्भीपीनोडी	११
कडवीदुम्भी	२८
कुसुमदत्तपलकीनालफूलफल	११
हस्तिमधु आलुका	११
विदारीकन्द	११
शभावरी	११
तळट (सीलकमलकीनड)	२९
भर्तीडापंधोलकसेक	११
पिण्डाल	११

विषय.	पृष्ठांक.
वज्रकंद	११
चांसकाकड्डा	११
पेन्हुक ठन्दीमान, नदीमाय	११
वनकन्द	११
जिमीकन्द	११
मानकन्द	११
केलेकीनड पफी	११
कच्ची	११
वापडीकन्द	३०
वालनारिपलखजूरेक फल	११
सुपारी	११
सनकोविदारउफेदकचनार खेमल	११
अडुसा	११
अगस्त्यफेकड	११
रानवृक्ष मोलाकारकांशिनिकेफूल	११
कमलमूल	३२
ऊई	११
सिम्हालनिगुण्डी कावोली	११
जवव, प्याळ	११
निपिदपदार्थ	११
शाकपणोभेष्ट	११
शाकवेष्टवसुण	११
अथलवणादिवर्गः । ३२	
सैथा	११
समुद्रलवण	११
विरिपाखोचरनोन	३२
कालानोन	११
सौधचल	११
एखोकेगीतरखेनिकललवण	११
रोमकनदीकालवण	११
गुडिकाळवण	११
क्षारगुण	११
अवाखारखजीक्षार	३४
डेकणक्षार	११
अडल	११
खोड	११
पीपलीमीली सूखी	११

विषय	पृष्ठान्क	विषय	पृष्ठान्क
सूखी कालीमिरच	३३	बहुगुणपीपलपावडभादिवेफल	१
मीलीमिचं	३५	मौलसिखेफल	४१
श्वेतकालीमिचं	१	कच्चाफालसा	११
हींग	११	पकाफालसा	११
जीरा	११	कच्चाबिल	११
अजयायन (कालाजीरा)	११	पकाबिल	१
धनियौ	११	दाम्ब	१
एहसुन	११	भूरीदास	११
प्याजगुण	६६	वभापीफल	११
फलवर्गः ।		खजूरफल	४२
दाडिमी (दोमभारकी)	११	महुएकापवाफल	११
पुरानापानीभामला	११	नारिफल	११
चेर (चुखारिला)	३७	पकातारफल	११
कच्चाभाम	११	बेलेकीफाली	११
पकाभाम	११	काटहर	१
अम्रोठी	१	हरड	४३
अम्बाडा	११	आमले	११
बडहर	३८	बहेडा	११
करीदा	११	हरडकीमुठली	११
कमरख	११	बहेडा	११
कच्चाअम्लवेत	१	चिरोनीकीनींग	११
इम्ली	१	वृक्षानुसारफलगुण	४४
पझीइम्ली	११	मिरापकीमुठलीछात्रमुद्रा	११
हरफारेवडी	११	वरजभटिसूनीमकाफल	११
जम्बीरीफल	३९	वायविडदू	११
नारजी (फल)	११	कच्चेवेडकागुण	११
विजौरानीपू	११	वारिवर्गः ।	
विजौरेकीछाल	११	जलभद्र	११
विजौरेकागूदा	१	धारानर	११
नागवेश्वर	११	गमाजल	११
कचोत्तर	११	समुद्रजल	११
कैयकागूदा	४०	गमाजलकीपरीक्षा	११
जामन	१	आवश्यकपतितजल	११
तैयू	११	बोलेकाजल	४६
राजादन	१	हिमकाजल	१
तोदन	१	नदीपानर	१
अनुषा	१	शौणभद्रभादिकानजल	१
		स्नयदुपसरोवरपानजल	१

विषय.	पृष्ठांक.	विषय.	पृष्ठांक.
वालापकाजल	११	ऊँठनीकादूध	११
बावडीकाजल	११	एकधुरवालेचौपापोकादूध ..	११
कुपैकाजल	११	खियाँकादूध	५३
नयेबनेकुपैकाजल	११	दूधकीविकृति	११
करनेकाजल	११	बिनाभौटायादूध	११
स्रोतेकाजल	४७	दुहतेमेंदूधपीना	११
वालुकाविछाकरनिकालाजल	११	बहुतभौटाहुआदूध	११
केदारऔरतृणादिसेअच्छाभरप		यजितदुग्ध	११
सरोवरकाजल	११	दहीगुण	११
समुद्रकाखारीजल	११	गौकादही	५४
अनूपदेशकाजल	११	बकरीकादही	११
साधारणजल	११	महिषीकादही	११
पश्चिमसाहिनीनदीकाजल	११	भेडकादही	११
पत्थरोंमेंगिराखेदितजल	११	योडीकादही	११
हिमालयसह्याद्रिकीगुहाकाजल	४८	खीकदूधकादही	११
चन्द्रफान्त और चन्द्रकिरणसंयुक्त		हथिनीकादही	५५
जल	११	दहीसंयोगीपदार्थ	११
नारियलकानधीनजल	११	भौटेहुएदूधकादही	११
जीर्णजल	११	पीनिकालाहुआदही	११
मुगंधवालाआदियुक्तजल	११	दहीकीमलाई	११
तालकाजल	४९	मट्टा	५६
शीतलजल	११	दहीकापानी	११
शीतलजलयजित	११	मलाईयुक्तमट्टा	११
वष्णुजलकेगुण	११	घोलतकटदधितमधित	११
भौटायाहुआजल	११	वातादितकऔषधीढालकरपीना	११
गुणागुण	५०	सताहिमतकसेयननिषेध	११
आकाशादिकेजलकान्तुओंके		तक्रकृषिका	५७
अनुसारग्रहण	११	अण्ड	११
दृढसिवारकीयादिकाजल	११	किलाड	११
क्षीरवर्गः ।		पीयूष और मोटर	११
क्षीरकेगुण	११	साजामपरान	११
गौकादूध	११	दूधसेमथकरनिकालामदहन	११
छागीकादूध	११	गौकेदहीकामख्यान	११
बकरीकादूध	११	घृतकेगुण	५८
भेरीकादूध	५३	गौकाघृत	११
मेथकादूध	११	भैसकाघृत	११
हथिनीकादूध	११	बकरीकाघृत	११

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
भेडकायुत	११	मवादिवर्गः ।	
पुरानायुत	११	मव्यगुणा	११
दूधसेनिकालायुत	११	सुरगुणा	११
पृतमण्ड	५९	श्वेतासुरा	११
तैलवर्गः ।		प्रसन्ना	११
तेलगुण	१	यवकीसुरा	६५
सरसौवातेल	११	घत्वहीमघ	१
अण्डरातेल	११	कोदलमघ	११
अलसीकातेल	६०	घञ्जसमघ	११
वरज और नर्मकातेल	१	शीघ्रमघईखेपवादेरसी	११
तिलकातेलसर्वभेद	११	विनापकाये रसी शीघ्र	६६
दूधरूपदायकतेल	११	गुडकी शीघ्र	११
यक्षा और मीनीगुण	११	शर्वरावीसीघ्र	११
पेक्षादिवर्गः ।		महुषकेकूलकीशीघ्र	१
ईलकारस	११	जामन और गुड मिलीशीघ्र	११
कोलमेपेलास	६१	औरपी सुरा	११
गन्नेकेतीनभागकारस		भैरेय मव	१
पकारस	११	कन्दमूलादिका आसव	६७
रसकाकाट	११	अरिष्ट	१
महुषकेकूलरसकाकाट	१	अरिष्टादिकाप्रयोग	११
गुड	११	रपान्य मघ	११
पुरानागुड	११	प्रसन्नामघ	६८
खाद	६२	शुक्तगुण	११
शक्कर	११	शुक्तमें अन्य द्रव्यका उपयोग	११
तमराज (शर्वराभेद)	११	गुडमधुपुक्तशुक्त	११
खेदयुक्तगुड	११	कांजीगुणा	६९
मधुसेडपन्नशर्वरा	११	गुपगुणा	१
मत्स्यपिण्डिका	११	गौचकीभादिकेभूभोगेगुण	११
मधुगुण	१	गोमूत्रगुणा	७०
मधुवैभेद	१	भैसेकामूत्र	११
माक्षिकर्वाश्रेष्ठता	६३	छागकामूत्र	११
भ्रामरक्षौद्रादिकीपरीक्षा	११	भैदकामूत्र	११
नवीनमधु	११	खोदकामूत्र	११
पुरानामधु	११	दायीकामूत्र	११
पक्कमधु	११	गण्डकामूत्र	११
मधुकायोग	१	जलकामूत्र	११
उष्णमधु	६४	कृतान्नवर्गः ।	
		कृतान्नगुण	११

विषय	पृष्ठांक.
धोवे चावलोंका भात	७१
भुने चावलोंका भात	११
मण्ड	११
खील्लोंका मण्ड	११
पेयाविलेपी अदि	७२
क्षीरगुणाः	११
खिचडी	११
मांसादि संयुक्तभक्ष	७३
रसओदन (रसा)	११
पोलभक्त	११
ताकालजलसेधोयाभक्ष	११
पचगुनेजलमेंपकाभात	११
दाल	११
जोशकियाभात	११
जोशकियामांस घृतादियुक्त	११
खालिकगुणाः	११
घृतादियुक्त शुष्कमांस	७४
भुनासुखामांस उसकेपनानेकोविधि	११
कुतपिष्ट	११
शूलपरभूनामांस	११
तेलमें सिद्ध कियामांस	११
बेसवारमें छिद्र कियाछोरमा	
मांसरस	७५
रसके कररक्षा स्वच्छभाग	११
रसरहितमांस	११
जलामत्स्य	११
भुनामत्स्य	७६
मृगकापूष	११
दाडिमीयुक्तपूष	११
मसूरमृगादिकापूष	११
दाडिमीभुनकोनसहितपूष	११
पटोलनीमिकापूष	११
मूलीकापूष	११
मृगभामलेव्रजपूष	११
जोकोलकुलभीकापूष	११
धानोंकापूष	११
पद्मेद	११

विषय.	पृष्ठांक.
दाडिमीआदिअम्लपदार्थोंकापूष	११
धान्य और अम्लद्रव्योंकापूष	११
दही अम्लपदार्थोंकापूष	११
तक्रअम्लपूष	७८
गोरसादिद्रव्योंका पूष	११
तिलकी खलसिण्ढाकीकेगुण	११
रागपाटवविधि	११
रसाख (सिखन)	११
गुडकेसापद्दी	७९
दाखक्षजूरकालीमिर्चकापूष	११
दूध भक्षणभक्षणगुण	११
मन्यगुण	११
अम्लसेहयुक्तमन्य	११
शक्तुपिण्डी	८०

भक्षवर्गः ।

चौले	११
दूधमें डाले चौले	११
धानोंकेहोले	११
सदू	११
दूधकल्सी	११
घृतपूर बेसर	८१
गोदिया	११
रसमरी ' गुहिमा '	११
पहक	११
गेहूँकाकस्तार	११
गोधूमचूर्ण	११
केणक	८२
बेसवारकेसापमृगादिद्रव्यपूष	११
मांसयुक्तबेसवार	११
तिलकल्ककेपटाल	८३
हूरी	११
शालीधान्यके भोजनपदार्थ	११
मृग उरद आदिकीदाल	११
मृगादिकेभक्ष्य	११
तेलपत्रपदार्थ	११
जीकरे और अंगारोंपरसेकेपदार्थ	११
कुल्माष	११

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
द्रव्यानुसार भक्ष्यगुण		रोगरहितको	११
मुनेजौषापदार्थ		दहीभादिभग्नपदार्थोंपर	११
वैद्यवाक्यसेप्रमाणकियेपदार्थ	१	बहुतभोजनपर	११
आहारविधिः ।	८४	अनुपानवेगुण	९३
रसोर्ध्वर कैसाहोनाचाहिये	१	आदिमध्यमन्तमेजलपानके गुण	११
सूपकारणी श्रेष्ठता	११	अनुपानकानिषेध	११
घी और भोजनपरसेसनेकेपदार्थ	१	अनुपानकरवर्जितकृत्य	९४
दिनप्रातःमें क्याधरै	१	व्यापीमें अनुपान प्रमाण	११
भोजनपरसेसनेकीविधि	८५	गुणकर्मविधि ।	
कैसेस्थानमें भोजनकरै		शीतलपदार्थ	११
भोजनका परिमाण	८६	स्निग्धपदार्थ	९५
भोजनपर सौक्यदमचलै		कृष्णपदार्थ	११
घामकर बटसेलेटै	१	पिच्छिलपदार्थ	११
भोजनकरकेदौड़नकानिषेध		विशदपदार्थ	११
ताम्बूलभक्षण		तीक्ष्ण और मृदुपदार्थ	११
अन्नपाकविधि	८७	अम्लितक	११
हुगंधित अन्नसेइन्द्रियाकी शक्ति	१	द्रवपदार्थ	१
अम्लिसेपाक होना	११	सूक्ष्मपदार्थ	११
सातधनुआवेभद	११	दुर्गन्धपदार्थ	९६
रससकृदधिरादिबीडत्पति	८८	खरपदार्थ	११
उपधातुआकारपूर्णवर्णन	८९	व्यवारी	११
उपधातुआवेमल	१	विकासीपदार्थ	
जाडराशिबीडरुष्टता	११	आशुकारीपदार्थ	११
अन्नकी उत्कृष्टता	९०	सूक्ष्मपदार्थ	११
अनुपानविधिः ।		करजादिकीदंतौन	११
अनुपानकेपदार्थ	१	देवगुरुआदिकप्रपूजन	११
चातादिकीनाधिकतामनुपान		चरणधोनेकेगुण	११
रनेहपरअनुपान	९१	नेत्राका आजन	९७
तेलपर	१	वस्त्ररत करनेकेगुण	११
पिसेअन्नपर		तेलकामालिस	११
मद्यसेआतहुणपर	११	पूषकामालिस	११
पिष्टपदार्थोंपर		स्नानगुण	११
चायलमूगपर		गरमजलकास्नान	११
मांसपर	९२	चन्दनादिआलेपनकेगुण	११
क्षीणाग्निवालाको		नवीनवस्त्रधारण	११
मद्यपाननकरनवालाको अ०		रत्नवेगहनैव हरने	११
व्रती, मार्गसेआयेहुएआदिको	१	एगडीधारणगुण	११
		छदीधारणकेगुण	११

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
दादप्यन्यत्रनेहेतुम्	१८	कुम्भर	१००
यामेकानादिना	१९	मृद्वन्मृद्वी	१०१
परादायना	२०	कन्दको यद्	१०२
निद्राचरन्निद्रा	२१	मेरुका	१०३
निद्राचरन्निद्रासक्तौ	२२	करोते	१०४
रजिन्वन्मरुत दिनमेवला	२३	बडी करोते	१०५
वाटकेनेकीपवन	२४	हालिपनी इलिपनी	१०६
वाटकेनेकी पवनकेगुण	२५	खरैदी	१०७
मौर और वाटकेपवन	२६	नागपडा	१०८
मौर और वाटकेनेकीपवन	२७	अरुगंधा	१०९
मुखदापकपवन	२८	वातायरी	११०
अत्यन्तपवनकेगुण	२९	एस्तिकर्ण पलाश	१११
पूर्वकीपवन	३०	पसरन	११२
पश्चिमकी पवन	३१	मावपणी	११३
उत्तरदिशिपकी पवन	३२	विशाला	११४
सबमोरवाँवापुकेगुण	३३	सारिषा	११५
धूमकेगुण	३४	अनन्तमूल	११६
जुजाम	३५	मिथ्यु	११७
अग्नि	३६	लोप	११८
आम	३७	पञ्जनीलोप	११९
धूप और छायाके गुण	३८	मज्जीठ, मूत्र...	१२०
चंदनी अंधकार कुहरेकेगुण	३९	हाल...	१२१
घषाके गुण	४०	मपौण्दरीप	१२२
मरुदेशके गुण	४१	जीयन्ती	१२३
अनूपदेशका गुण	४२	अष्टवर्गः ।	
सामान्य देशका गुण	४३	मुलेडी	१२४
हेमन्त ऋतुके गुण	४४	अर्जुन वृक्ष	१२५
शिशिर	४५	दादमाया	१२६
वसन्त	४६	भोगरा	१२७
ग्रीष्म	४७	भेमार	१२८
शरद	४८	दण्डोत्पल	१२९
प्राणहारका छावस्तु	४९	रुदन्ती	१३०
प्राणदायक छावस्तु	५०	तालमूली	१३१
आयुकर विधान	५१	द्रोणपुष्पी	१३२
द्रव्य गुणकी समाप्ति	५२	विष्णुक्राम्ता	१३३
दूसरेग्रन्थसिद्धान्तकी औपधी ।	५३	गुणिगाली	१३४
पेलाकी जड़	५४	मुदवाला	१३५

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
भारणी	१०५	कूठ	११
चोमली	"	सेजना	१०९
हुरहुर	"	डुरालभा	"
झिपटी	"	कुठकी	"
वाकिलाश	"	पस्ना	"
लाल तालमखाना	"	शायन्ती	"
कलहारी कनर	१०६	चरना और ठसवे फूल	"
पापातकी	"	देवदास	"
ज्योतिष्मती	"	भइसा	"
मझी	"	गिलोप	"
घच	"	अजवायन	"
भाग	"	पीपलामूल	"
बाखपुष्पी	"	जम्म, मजपावर	११०
दारस	"	चीता	"
दलदी	१०७	दन्ती	"
दादहलवी	"	दुपी	"
खामराजी	"	सेहुका वृक्ष	"
खकवड	"	भाक वृक्ष	"
घरज	"	भाकका वृक्ष	"
नीमकेफल	"	जमालगाढा	"
वायविडङ्ग	"	धतूरा	"
रेणुका	"	मिलावेके फल	"
भाजपत्र	"	इसका पलीबधन	"
सारिया	"	गूगल	१११
तिरिण्ड	"	नया गूगल	"
धापक वृक्ष	"	पुराना और सूखा गूगल	"
असन	"	छालनिशोष	"
अतलौर	"	कुटवी	"
नीम	"	निस्तोष	"
महुनिम्ब	१०८	राजवृक्ष	"
चिरापता	"	उसका फल	"
पित्तपापङ्गा	"	रोहिदा	"
पाठा	"	वृद्धवार	११२
इद्रजौ	"	निर्गुण्डी	"
इसके बीज	"	सुरसीदल	"
सुगंधवाला	"	मिरोरफली	"
भापा	"	वशलोचन	"
असीस	"	तवक्षीर	"
वाकडाशनी	"		
चायफल	"		

इति वनौषधिवर्गः सम्पूर्णः ।

मण्ड-शुद्ध चावलको चौदह गुने पानीमें डालकर ओटावे जब चावल खीजजाय तब मण्ड निकाल ले यह शुद्ध मण्ड है ।

फांट-एक पल औषधी लेकर अच्छी रीतिसे कुटकर सौलह तोले जलपात्रमें भरकर धरे जब गरम होजाय तब कुटी औषधी डालकर खूब ओटावे फिर उसपानीको ऊपरसे छानले यह फांट है ।

मंथ-फांटका भेद है ।

जौकामंथ-साधितजौको भुनाय चूत पिसयाले उसे क्षीतिल जलमें दूसमकार मिलावे जिससे न बहुतपतलाहो न बहुत गाढ़ा फिर उसमें पीसिलाकर पिये जो वाद्द घेद्यकमें ऐसेआयेह कि इनका पपाय नहीं लिखाह इनको लिखते हैं ।

अभिम्यन्दि-जोद्रव्य अपने चिच्छल गुणोंके भारीपनेसे रस लेजानेवाली माछियोंको रोषकर शरीरको भारी करताहै यह अभिम्यन्दि (खातछापी) पपा-वही ।

प्रमापी-जो मुरगनासिका आदि छिद्रोंसे कफादिदोष संव्ययी निकाले यह प्रमापी है (पथ)

शार्ङ्गकरण धीपकी प्रवृत्तकरनेवाली औषधी एरंडी, शतापर, व्यवपी भवकही सबदेहमें फैलनेवाली ।

रसायन-जो देहकी बुद्धावस्था और ज्वरादिरोगको नाशकरे यथा मिश्रण इदमती ।

स्तम्भन-जो औषधी रुद्धगुणकरके शीतवीर्यकरके और कखले रसयुक्तहो तेसे पाकमें दृढ़की हो बादीको उपश्र करेयह औषधी स्तम्भनहै यथाकुडा और स्तोत्रक प्रादी जो भस्मिदासकरे और आमादिका पाणनकरे और उष्ण होने से जलस्वरूप कफादि धातुगोंके दोष और मलको शोषण करे यह प्रादी यथा मजरीपल सोउ जीत ।

हृत्पान-जो रसादि धातु और घाता दिदोषको सुषाकर दृढ़से बाहर निका लदेहसे हृत्पान पदमेहै यथा रजशहता ।

भेदन-जो औषधि घातादि दोषके

सूक्ष्ममलको पतलाकर गुदाके द्वारा निकालतीहै यह भेदनहै ।

रेचन-जो पेटके भन्नादिका उत्तम पाकहोने अथवा कुत्ते होनेपर भन्ना दि तथा वातादिमलोंको पतला करके अधोभागमें प्राप्तकर गुदाद्वारा रेचन करे वहरेचकहै यथा निशातु ।

संशोधन-जो स्वस्थानमें संचित मलको ऊपर भागमें लाकर मुख ना खिचाद्वारा निकाले और अधोभागमें लेजाकर गुदादिन द्वारा बाहर निकाले यह संशोधकहै यथा वंदाल ।

उद्दन-जो परस्पर मिलेकफादि दोषों को अपनी शक्तिसे तोड़ घुसक करदे यह उद्दनहै यथा काळीमिर्च शिला जीत ।

धमन-जो पक्षदशाको न मात्राह पित्त कफकी बलसे मुखके मार्गको निकाले यह धमनकारक है यथा मैतफल ।

दीपनपाचन-जो भ्रामको न पचाकर भस्मिको प्रदीप्तकरे यह दीपन है यथा सौक और जो भ्रामको पचाकर फिर भस्मिको प्रदीप्तकरे यह पाचनहै यथा नागकेशर औरजो दोनों कार्य करे यह दीप न पाचन है यथा पीता ।

संस्तन-जो पीछ पाकहोने योग्य घाता दिदोष फोष्टमें आश्रित हुओंको घिता ही पाककरे बीचके भागमें लाकर गुदाके द्वारा निकाले यह संस्तन यथा भमल तासकर गूदा ।

अनुलोमन जो घातादि दोषोंके और कोशान्तकर परस्पर यद्द वा भयङ्गकों भिन्न २ कर नीचे गिराये अथवा घाता वृ-पुषिषादिसे बद्ध फोष्टको स्वच्छ करके मलादिको गुद्दद्वारा मात्राकर बाहर निकाले यह अनुलोमनहै यथा हरद ।

संशामन-जो औषधी मार्गके भोजन किये पदार्थको न धमन द्वारा निकाले न दस्तकराये किन्तु दोषोंमें मिश्रकर उन्हे यहीं शान्तकरदे वहशामनसंशकहै यथा मिश्रीय ॥

सम्पूर्णम् ।



श्रीगणेशाय नमः ।

द्रव्यगुण-सटीक ।

मंगलाचरणम् ।

शंकरंशंकरंदेवंगिरिशंगिरिजापतिम् ॥

गणेशंविघ्नहर्तारंघन्देहंकामदम्प्रभुम् ॥ १ ॥

रचितश्वकदत्तेनयोद्रव्यगुणसंग्रहः ॥

मयाज्जालापसादेनतस्यव्याख्यामिश्रियते ॥ २ ॥

प्रायः पृच्छन्ति यत्रेशास्तद्रव्यगुणसंग्रहः ।

धारणस्मरणोन्मुखो यथास्याल्लिख्यते तथा ॥ १ ॥

वैद्यराज श्रीचक्रवर्तजी सर्व साधारणके ऊपर कृपा दृष्टि कर द्रव्य गुण वर्णन करनेकी इच्छासे कहते हैं कि, मधुरादि रस और यावत्पदार्थ हैं वे सब द्रव्य कहलाते हैं उन सब द्रव्योंमें गुण दोष रहते हैं वे गुण दोष जानकर प्राणी उनका धारण स्मरण करे तो परम सुखपाता है आरोग्यता होती है इसी कारण मैं यथा योग्य उनको लिखता हूं तात्पर्य यह है कि जब द्रव्य गुणके पूछनेपर उसे जानकर अतृकूल आहार विहार करनेसे मनुष्य चिरकालतक आरोग्य रह सकता है इस कारण उसकी जिज्ञासा करना सबको उचित है उन सबके उपकारके निमित्त न बहुत विस्तार और न बहुत संक्षेपसे मैं द्रव्यगुण लिखता हूं ॥ १ ॥

अथ मधुररसगुणाः ।

मधुरो धातुविवर्द्धन आयुर्वलवर्णतृप्तिकृत्कण्ठयः ।

सन्धानकृन्मुखादिहादकरः स्निग्धगुरुशीतः ॥ २ ॥

सम्पूर्ण रसोंमें आयुष्यादिके गुण योगसे मधुररस प्रथम उच्चारण किया है, इस कारण पहले उसीके गुण कहे जाते हैं

मधुररस धातुका बढ़ानेवाला, आशुर्वल वर्णका करनेवाला कंठ-
का हित करनेवाला, घ्राण जिह्वा कंठ ओष्ठका, तथा उरक्षत
मुखका सन्धान करनेवाला, चिकना, भारी और ठंडा है, इस
कारण वात पित्तकामी जीतनेवाला है, शीतलपन इसमें स्वाभा-
विक है, कहीं उष्णभी होजाता है, सो संयोगसे होता है, जैसा
चरकमें लिखा है 'मधुरकिञ्चिदुष्णस्याद्यथानूपमामिषम्' मधुर
रस अनूप देशके मांसकी समान कुछ गरम है. यद्यपि निर्गुण
होनेसे रसोंमें गुण नहीं, परन्तु उपचारसे द्रव्यगुणही रसोंमें
निर्देश किये जाते हैं ॥ २ ॥

अम्लोरुचिर्दीप्तिकरो मन इन्द्रियबोधनो हृदयतर्पी ।

वातार्जवकृद्वत्यः कण्ठदहः स्निग्धलघुरुष्णः ॥ ३ ॥

अम्लरस रुचिकरनेवाला, दीप्तिकारक, मन इंद्रियको बोधन
करनेवाला, हृदयको तृप्तिकारक, पवनका अनुलोम करनेवाला,
बलकारक, कण्ठमें दाह करनेवाला, स्निग्ध लघु और उष्ण है ॥ ३ ॥

लवणः क्लेदन पाचनो दीपनो विच्छेदनः सरस्तीक्ष्णः ।

कफविष्यन्दीरुचिकृत् स्निग्धगुरुष्णो मुराविशोधी ॥ ४ ॥

लवण रस क्लेदकारक, पाचक, दीपन, भग्नकारक, सारक,
तीक्ष्ण, कफ श्रावक, रुचिकारक, स्निग्ध, गुरु, उष्ण, मुखका
शोधन करनेवाला है, सेंधेमें शीतलता जलकी अधिकतासे
है और 'कदम्ललवणा आग्नेया इति सुश्रुतोक्तेः ॥ ४ ॥

कटुरास्यंशोपयतिघ्राणाशिविरेचनः क्रिमीन्हन्ति ।

रसनोद्विगकृदुष्णोलघुरूक्षः कुष्ठहारीच ॥ ५ ॥

कटु रस मुरा शोषक नासिका नेत्र का विरेचक, क्रि-
मिहारी, जिह्वाको उद्वेग करने वाला, उष्ण, लघु, रुखा, कुष्ठ
हरनेवाला है ॥ ५ ॥

तिक्तोन्नीरोचते स्वयमरोचकग्नौ विषमश्च ।

दीपनपाचन शोधन रुक्षः शीतोलघुश्चापि ॥ ६ ॥

तिक्त रस स्वयं नहीं रुचताहै, परन्तु अरुचि आर वि-
पको दूर करताहै, दीपन, पाचन, शोधन करने वाला, शीतल
और हलका है ॥ ६ ॥

तुवरोहिमगुरुरुक्षः स्तम्भीशमनश्च पीतनोग्राही ।

व्रणपाकार्तिक्केदान्निहन्ति कण्ठश्वभ्राति ॥ ७ ॥

कषाय रस ठंडा भारी रुखा स्तम्भन करनेवाला, शमन
कारक, ग्राही, व्रणपाक, दुःख, क्लेद, को दूर करनेवाला और
कण्ठ को बांधनेवालाहै और ' रुक्षः शीतो लघु श्वेति ' ऐसा
जो चरक में लिखाहै और यह गुरु लिखाहै सो विरोध नहीं
आसक्ता अकारका प्रक्षेप करने से अलघु होकर भारी काही
अर्थ होताहै, बाग्भट्टमें भी लिखा है " कषायः कफपित्तघ्नो गुरु
वास्ति विशोधनः " हरीतकी को जो उष्ण लिखाहै और भेदक
लिखाहै वह अपवादतासे जाना उत्सर्गतासे नहीं ॥ ७ ॥

शीतं कफमारुतकृद्दीर्यं गुरुपित्तनाशनं वल्यम् ।

उष्णं कफघातहरं पित्तकरं लघुवृष्यञ्च ॥ ८ ॥

रसके गुणोंके अनन्तर वीर्य कथन करतेहैं वीर्य मृदु, ती-
क्ष्ण, गुरु, स्निग्ध, लघु, रुक्ष, उष्ण और शीतल इन भेदोंसे आठ
प्रकारकाहै, किसी किसीके मतमें शीत और उष्ण इन भेदोंसे
दो प्रकारका है, शीतरस कफ और पवन का करने वालाहै,
गुरु, पित्त नाशक तथा बलकारीहै, उष्ण रस कफ घातका हरने
वाला, पित्तकारी, लघु और बल करताहै ॥ ८ ॥

शीतं वीर्येणयद्रव्यं मधुरं रसपाकयोः ।

तयोरम्लं यदुष्णञ्च यच्चोक्तं कटुकं तयोः ॥ ९ ॥

जो द्रव्य वीर्यमें शीतल है, वह रस पाकमें मधुर है और
उन रस और पाकमें जो अम्ल है, वह वीर्यमें उष्ण जानना
और जो द्रव्य रस पाकमें कटु है, वह वीर्यमें उष्ण जानना ॥ ९ ॥

कटुर्विपाकः शुक्रप्रोवक्ष्यविदूवातलोऽलघुः ।

स्वादुगुरुः सृष्टगलोविपाकः कफशुक्रलः ।

पाकोऽम्लः सृष्टविष्णूत्रः पित्तकृत् शुक्रनुल्लघुः ॥ १० ॥

अब विपाकका स्वरूप निरूपण करते हैं, जठराग्नि के योगसे जो रसका परिणाम होता है, उसे विपाक कहते हैं कटु रसका विपाक वीर्यका नाशक, विष्टाका बांधनेवाला, पवन का करनेवाला तथा लघु होता है, स्वादिष्ट पदार्थोंका पाक गुरु, मल निस्तारक, कफ और शुक्र कारक होता है, अम्ल पदार्थोंका पाक विष्टाका निकालने वाला मूत्र सारक पित्तकरने वाला शुक्र का नाशक और लघु होता है ॥ १० ॥

शालयोमधुराः शीता लघुपाकावलप्रदाः ।

पित्तघ्नाल्पानिलकफाः स्निग्धवद्दाल्पवर्चसः ॥ ११ ॥

हेमन्त ऋतुके उत्पन्न हुए धान्य लघु और परिपाक में बल देने वाले हैं, पित्त नाशक थोड़ासा वात और कफ करनेवाले स्निग्ध मल बंधक और अल्पमल बढ़ानेवाले हैं ॥ ११ ॥

रक्तशालिस्त्रिदोषघ्नश्चक्षुष्यः शुक्रमूत्रलः ।

तृष्णाघ्नोवलकृत्स्वर्ग्यो हृद्यस्तदनुचापरे ॥ १२ ॥

रक्त शालि त्रिदोष दूर करने वाले चक्षुको हितकारक मूद्य तथा वीर्यके करने वाले, तृष्णा नाशक घलकारी खरकारी हृदय को हितकारी हैं, दूसरे धान्य गुणोंमें इन से हीन वीर्य्य वाले हैं ॥ १२ ॥

पट्टिकोमधुरः शीतो लघुवृष्य स्त्रिदोषहा ॥ १३ ॥

सांठीके चावल ठंडे मधुर हलके वीर्यकारी और त्रिदोष नाशक हैं ॥ १३ ॥

मधुरश्चाम्लपाकश्चब्रीहिः पित्तकरोगुरुः ।

बहुमूत्रपुरीषोष्मा त्रिदोषस्त्वेवपाटलः ॥ १४ ॥

ब्रीहि (जौ) मधुर अम्लपाकी पित्तकारी और गुरु हैं, बहुत मूत्रपुरीषके करने वाले त्रिदोषकारी उष्ण वीर्य करनेवाले पाटल धान्य हैं ॥ १४ ॥

धान्यं शरद् ग्रीष्म भवं पाकेऽम्लं पित्तकृद्गुरु ॥ १५ ॥

जो शरद् और ग्रीष्म में होने वाले धान्य हैं वे पाक में अम्ल पित्तकारी और गुरु हैं ॥ १५ ॥

धान्यं सर्वं समातीतं पथ्यं लघ्वन्यथानवम् ।

ततःपरं लघुतरं रुक्षं वातप्रकोपणम् ॥ १६ ॥

और एक वर्ष के पुराने होकर सब धान्य पथ्य और लघु हो जाते हैं और इसके उपरान्त और भी लघु रुक्ष और वात के कोपकरने वाले हो जाते हैं ॥ १६ ॥

दग्धायामवनौजाताः शालयोलघुपाकिनः ।

कपायावद्भविष्मूत्रा रुक्षाःश्लेष्मापकार्पणः ॥ १७ ॥

दग्ध पृथ्वीमें उत्पन्न हुए धान्य शीघ्र पाकी होते हैं कसेले विट्मूत्र के बांधने वाले रुखे, श्लेष्माको दूर करते हैं ॥ १७ ॥

स्थलजाः कफपित्तघ्नाः कपायाः कटुकानुगाः ।

किञ्चित् सतिक्तमधुराः पवनानलवर्द्धनाः ॥ १८ ॥

जाङ्गल भूमिमें उत्पन्न हुए कफपित्तको दूर करते हैं पचनेमें चरपरे किञ्चित् कड़वे मधुर वात तथा अग्निके बढाने वाले हैं ॥ १८ ॥

रोप्यातिरोप्यालघवः शीघ्रपाकागुणोत्तराः ।

अदाहिनोदोषहरा वल्यामूत्रविवर्द्धनाः ॥ १९ ॥

जो एकवार लगाकर फिर दूसरी जगह लगाये जाते हैं वे लघु शीघ्र पाक देनेवाले गुणोंमें श्रेष्ठ दाह नहीं करते दलकारक और मूत्रके बढानेवाले हैं ॥ १९ ॥

शालयश्छिन्नरूढायेरुक्षास्ते वद्धवर्धसः ।

तिक्ताःकपायाः पित्तघ्नालघुपाकाः कफापहाः ॥ २० ॥

जो धान्य एकवार छिन्न करके फिर बढाये गये हैं वे रुखे और मलवर्द्धक हैं तथा तीखे कसेले पित्तनाशक लघुपाकी कफ नाशक हैं ॥ २० ॥

गोधूमःस्थैर्यकृदृण्यः स्निग्धःशीतः सरोगुरुः ।

सन्धाता बृंहणोबल्यो जीवनोवातपित्तहा ॥ २१ ॥

गेहूं स्थिरता करनेवाले, बलकारक, स्निग्ध, शीतल, सारक और गुरुहं सन्धान करने वाले बृंहण बलदायक जीवन दायक वात पित्तके हरनेवाले हैं ॥ २१ ॥

यवः स्वादुः कषायश्च कफपित्त हरोहिमः ।

व्रणेषु सर्वदापथ्यस्तिलवत् पाकतः कटुः ॥

बहुवातपुरीषश्च मेदोवात तृपापहः ।

वृण्योबल्योबद्धमूत्रस्थैर्यग्निस्वरवर्णकृत् ॥ २२ ॥

यव स्वादु कसेला कफपित्त हरनेवाला ठंडाहै ॥ व्रणोंमें तिलकी समान सदा पथ्य है जैसे व्रण के ऊपर तिलका तैल वात पित्त कफमें हितकारी है इसी प्रकार यवभी सब अवस्थाओंमें व्रणमें हितकारी है जैसा कहा है “ तिलवत् यव कल्कंतु केचिदाहुर्मनीषिणः । अविदग्धंतु शमयेद्विदग्धं पाचयत्यपि ॥ पक्वं भिनात्ति मन्यश्च शोधयेद्रोपयेदपि ” यव काकलक तिलकी समान है ऐसा किन्ही माहात्माओंका मत है यह अविदग्ध व्रणको शान्त करता और विदग्धको पचा देताहै पक्केको फोड़ कर शोधन रोपण करदेता है कोई व्रणपर यवका मण्ड सदैव अच्छा समझते हैं इसी कारण शुश्रुतमें हित अहित व्रणहित वर्गमें यवका पाठ किया है. कोई इसकी पाकमें कटु कहते हैं कटु पाकित्य होनेसे लघुत्व कहाहै कुक्षिमें बहुत वात और पुरीषका करनेवाला मेदकी वात निवारणमें समर्थ, तृषानाशक, वीर्यवर्द्धक बलकारक, मूत्रका बांधनेवाला स्थिरता अग्नि और स्वरवर्णका करनेवालाहै ॥ २२ ॥

श्यामकः शोषणोरुक्षो वातलः श्लेष्मपित्तहा ।

तद्वच्चकटुनीवारकोरदूपाः प्रकीर्तिताः ॥ २३ ॥

श्यामक (समा) सोखनेवाला, रुखा वातकारी श्लेष्म पित्तका हरनेवाला है और इसीके समान गुणकारी कंगनी निवार कोदी भी हैं ॥ २३ ॥

मुद्गः कपायोमधुरः कफपित्तास्रजिल्लघुः ।

ग्राहीशीतः कटुः पाके चक्षुष्यो नातिवातलः ।

प्रधानाहरितास्तत्रवल्पा मुद्गरसाः स्मृताः ॥ २४ ॥

मूंग कसैली मधुर कफपित्त रक्तकी नाशनेवाली लघु है मलरोधक शीतल पचनेमें कटु नेत्रोंको हितकारी किञ्चित वात वर्धक है उसमें हरी मूंग प्रधान हैं और मूंगकारस बलकारक है २४

मसूरोमधुरः शीतः संग्राही कफपित्तहा ॥ २५ ॥

मसूर मधुरशीत संग्राही और कफपित्त हरनेवाली है ॥ २५ ॥

मापोबहुमलोवृष्यः स्निग्धोष्णमधुरोगुरुः ।

वातमुद्गहणोवल्गो मेदोमांसकफप्रदः ॥ २६ ॥

उडद बहुत मलके करनेवाले बलदायक स्निग्ध उष्ण मधुर गुरु हैं वातको दूर करने वाले वीर्य करने वाले बलदायक मेदमांस और कफके बढाने वाले हैं ॥ २६ ॥

राजमाषः सरोरुच्यः कफशुक्राम्लपित्तनुत् ।

तत्स्वादुर्व्यातलोरुक्षः कपायो विपदोगुरुः ॥ २७ ॥

राजमाष सारक रुचिकारक कफशीर्ष्य तथा अम्लपित्तके दूर करनेवाले हैं उनका स्वाद वातकारी कृत्वा कसैला. विषदायक गुरु है ॥ २७ ॥

चणकोवातलः शीतः कफामृक् पित्तपुंस्त्वनुत् ॥ २८ ॥

चना वात करने वाला ठंडा है कफ रुधिर पित्त और पुरुषता नाशक है ॥ २८ ॥

सतीलावातलारक्तपित्तघ्ना वद्धवर्चसः ॥ २९ ॥

मटर घादी रक्तपित्तका नाश करने वाली, तथा मलको बांधनेवाली है ॥ २९ ॥

तुवरी कफपित्तघ्ना कलायश्वातिवातलः ॥ ३० ॥

अरहर कफ पित्त नाशक मलबांधती और अधिक वात करनेवाली है ॥ ३० ॥

मकुटः शीतलो ग्राही कफ पित्त ज्वरापहः ॥ ३१ ॥

मोठ शीतल आही कफ पित्त और ज्वरको हरने वाली है ३१

कुलथः कफवातघ्नो ग्राह्युष्णस्तुवरः कटुः ।

शुक्राश्मरी गुल्मकासश्वासानाहान् सर्पिनसान् ।

हन्त्यशोभेदसीहिकां रक्तपित्तकरश्च सः ॥ ३२ ॥

कुलथी कफ घात नाशक आही गरम कपाय कटु है वीर्य पथरी, गुल्म, कास, श्वास, अनाह, पीनस, अर्श, भेदरोग, हिचकी हरती तथा रक्तपित्तके करनेवाली है ॥ ३२ ॥

वन्यः कुलथस्तद्वच्च विशेषान्नेत्र रोगनुत् ॥ ३३ ॥

इसी प्रकार वनकी कुलथी है वह विशेष कर नेत्ररोग को दूर करती है ॥ ३३ ॥

काकाण्डो मात्मगुप्तानां मापवत् फलमादिशेत् ॥ ३४ ॥

शुकशिम्बी कोलशिम्बीकामी फल उददकी समान है ऐसा जानना ॥ ३४ ॥

ईपत्कपायो मधुरः सतिक्तः संग्राहकः पित्तकरस्तथोष्णः ।

तिलोविपाके मधुरो बलिष्ठः स्निग्धो घ्राणालेपन एव पथ्यः ।

दन्त्योग्निमेधाजननोऽल्पमूत्रस्त्वच्योऽतिकेऽयोऽ

निलहा गुरुश्च ॥ ३५ ॥

कुछ कसेला मधुर तीखा संग्राही पित्तकारक उष्ण और विपाकमें मधुर ऐसे तिल होते हैं, यह बलकारक, स्निग्ध, घ्राण लेपन, पथ्य, दाँतोंको हितकारक अग्नि बढ़ानेवाला बुद्धि बढ़ानेवाला थोड़ा मूत्र लानेवाला त्वचामें हितकारी केशोंको बढ़ानेवाला बात हर और गुरु है ॥ ३५ ॥

तिलेषु सर्वेष्वसितः प्रधानं मध्यः सितो हीनतरास्तथान्ये ॥ ३६ ॥

सब तिलोंमें फाले तिल प्रधान हैं, श्वेतमध्यम, ॥ और पीत हरित रंगके गुणोंमें इससे हीन हैं ॥ ३६ ॥

शिम्वास्तु विविधारुक्षावलघ्नाः स्वादुशीतलाः ।

विदाहिनोऽग्निशमनाविज्ञेयाः कफनाशनाः ।

शुकदुष्टिस्तयकराः कटुपाकाः प्रमाथिनः ॥ ३७ ॥

सब प्रकारके शिम्बीधान्य रुखे बलनाशक स्वादु शीतल होते हैं, यह विदाही अग्निके शान्तकरनेवाले और कफ नाशक जानने, वीर्यकी दुष्टता क्षय करनेवाले पाकमें कटु और मलको बांधनेवाले हैं ॥ ३७ ॥

सितासिताः पीतकरक्तवर्णा भवन्ति येऽनेकविधास्तु शिम्बाः ।

यथोदितस्ते गुणतः प्रधानज्ञेयास्तथोष्णा रसपाकयोश्च ३८

श्वेत काले पीले लाल वर्णके अनेक प्रकारके शिम्बी धान्य होते हैं, वे यथोक्त कहे हुए गुणसे प्रधान हैं वे रसवीर्य विपाकके गुणोंसे एक दूसरेसे श्रेष्ठ हैं अर्थात्, कालेसे श्वेत पीलेसे काले, और कालेसे पीले गुणमें श्रेष्ठ हैं, और रसपाकमें उष्ण हैं ॥ ३८ ॥

सहाद्वयं मूलकजाश्च शिम्बाः कुशिम्ववल्लीप्रभवाश्च शिम्बाः ।

ज्ञेया विपाके मधुरारसे च बलप्रदाः पित्तनिवर्हणश्च ॥ ३९ ॥

मुद्गपर्णी मापपर्णी मूलकशिम्बी कुशुमवल्लीसे उत्पन्न हुए शिम्ब यह विपाकमें मधुर रसवाले जानने, बल देनेवाले, तथा पित्तके दूर करनेवाले हैं ॥ ३९ ॥

विदाहवन्तश्च भृशं विरुक्षा विष्टभ्य जीर्यन्त्यनिलप्रदाश्च ।

रुचिप्रदाश्चैव सुदुर्जराश्च सर्वे स्मृता वैदलिकाश्च शिम्बाः ४०

यह विदाही अत्यन्त रुखे देरसे जीर्ण होनेवाले, वात वर्द्धक रुचि देनेवाले देरमें जीर्ण होनेवाले, वैदलिक अर्थात् गीले शिम्बी धान्य इतने गुणयुक्त हैं ॥ ४० ॥

पण्डिकायवगोधूमा लोहिताये च शालयः ।

मुद्राढकीमसूराश्च धान्येषु प्रवराः स्मृताः ॥ ४१ ॥

सांठी जो गेहूँ लाल चावल मूंग आढकी मसूर यह धान्योंमें श्रेष्ठ कहे हैं ॥ ४१ ॥

कफवातहरस्तीक्ष्णः सिद्धार्थैरक्तपित्तकृत् ।

स्निग्धोष्णः क्रिमिकुष्ठघ्नः कटुकोरसपाकतः ॥ ४२ ॥

कफ वातको हरनेवाला तीक्ष्ण रक्त पित्तको करनेवाला

श्वेत सरसों होता है, यह क्षिग्ध उष्ण कृमि और कुष्ठको दूर करनेवाला, रसपाकमें कटु है ॥ ४२ ॥

तद्गुणाराजिकावाच्यात्तद्गुणोऽन्योपि सर्पपः ।

रसेपाके च कटुकः कुसुम्भः कफनाशनः ॥ ४३ ॥

वही गुणराईमें है वही गुण दूसरे प्रकारके सरसोंमें होते हैं कुसुम्भ रस पाकमें कटु और कफ नाशी है ॥ ४३ ॥

अनार्त्तवं व्याधिहतमपव्यागतमेव च ।

अभूमिजं नवश्चापिनधान्यं गुणवत् स्मृतम् ॥ ४४ ॥

ये क्लृप्तमें उत्पन्न हुए व्याधिसे भारे हुए कष्टे ऊपर अपत्य-कादि विपैली भूमिमें उत्पन्न हुए और नये धान्य गुणवाले नहीं होते हैं ॥ ४४ ॥

यवगोधूममापाश्च तिलाश्चाभिनवाहिताः ।

पुराणान्नीरसारुक्षानतथार्थकरामताः ।

विदादिगुरुविष्टम्भिविरूढं दृष्टिदूषणम् ॥ ४५ ॥

इति धान्यवर्गः ।

जौ गेहूं उड़द तिल यह नये अच्छे होते हैं यह पुराने पड़-कर नीरस-सूखे होकर उतने गुण युक्त नहीं रहते हैं, और अंकुरित हुए धान्य विदादि भारी मलरोधक, विरूढ़ तथा दृष्टिको दूषण करनेवाले हैं ॥ ४५ ॥

इति धान्यवर्गः ।

अथ मांसवर्गः ।

सर्वं वातहरं मांसं वृष्यं वल्यं स्मृतं गुरु ।

प्रीणनं वृंहणं हृद्यं मधुरं रसपाकयोः ॥ १ ॥

संपूर्णमांस वात हारक, वीर्य वर्द्धक, बलवर्द्धक तृप्ति कारक भारी हृदयको हितकारी रस तथा पाकमें मधुर है ॥ १ ॥

हरिणः शीतलोवद्धविष्मूत्रोदोषनोलघुः ।

मधुरो मधुरः पाके सुगन्धिर्दोषनाशनः ॥ २ ॥

हरिणका मांस शीतल मलबन्धक मूत्ररोधक दीपन लघुहृद्, मधुरहृद्
पाकमें भी मधुर सुगन्धिका करनेवाला त्रिदोष कानाशकहै ॥ २ ॥

कपायोमधुरोद्द्व्यः पित्तासृक् कफवातहा ।

संग्राहीरोचनोवल्यस्तेषामेणोज्वरापहः ॥ ३ ॥

काले हरिणका मांस कसेला मधुर रक्तपित्त निवारक कफ
निवारक, हृदयको हितकारी संग्राही रुचिकारक बलदायक
ज्वरका हरनेवालाहै ॥ ३ ॥

शशः स्वादुः कपायश्चलघुः पित्तकफापहः ।

नातिशीतलवीर्यत्वाद्वातसाधारणोमतः ॥ ४ ॥

खरगोशका मांसस्वादु, कसेला, लघुपित्त, और कफका
हरनेवाला है, वीर्य करनेसे अति शीतल नहीं है, वातमें
साधारणहै ॥ ४ ॥

नातिशीतं गुरुस्निग्धं मांसमाजमदोपलम् ।

शरीरधातुसामान्यादनभिप्यन्दिबृंहणम् ॥ ५ ॥

बकरेका मांस अधिक शीतल नहीं है, भारी स्निग्ध और
दोष रहितहै, अभिप्यदि, किंचित् वृष्ण और धातु साम्य-
कारकहै ॥ ५ ॥

मेपस्य मधुरं मांसं पित्तश्लेष्महरं गुरु ॥ ६ ॥

मेपकामांस मधुरपित्त और श्लेष्माकाजीतनेवालाहै भारीहै ६

मेदः पुच्छोद्भवं वृष्यमौरभ्रसदृशं गुणैः ॥ ७ ॥

मेद पुच्छनाम मेपका मांस अर्थात् पुच्छ देशमें लम्बा यमानं
मांसपिण्ड पुरुषत्वका बढ़ानेवाला, गुणोंमें बकरेकीसमान है ॥ ७ ॥

माहिपं तर्पणं वृष्यं स्निग्धोष्णं मधुरं गुरु ।

निद्राप्रुंस्त्वबलस्तन्यवर्धनं मांसदाढ्यकृत् ॥ ८ ॥

माहिपका मांस तृप्तिकारक, बलकारक, स्निग्ध वृष्ण और
मधुर तथा भारी है, निद्राकारक पुरुषता बल और स्तनोंमें
दूध बढ़ानेवालाहै, तथा शरीरके मांसको दृढ़ करनेवालाहै ॥ ८ ॥

शुष्ककासश्रमात्यग्नि विषमज्वरपीनसान् ।

काश्यै केवलवातांश्च गोमांसं सन्नियच्छति ॥ ९ ॥

सूखी खांसी श्रम अग्नि विषम ज्वर पीनस कृशता और केवलवात रोगोंको गोमांस दूर करताहै ॥ ९ ॥

हयमांसं बलकरमुष्णं मारुतनाशनम् ॥ १० ॥

घोड़ेका मांस, बलकारक, उष्ण वातका नाशकरनेवाला है १०

गवयस्यापिमांसन्तु स्निग्धंकासनिवर्हणम् ।

रसेपाकेच मधुरं व्यवायस्यतुवर्द्धनम् ॥ ११ ॥

गवयका मांस स्निग्ध और कास रोगको दूर करने वालाहै ॥ रस और पाकमें मधुर तथा धीर्यको बढ़ानेवालाहै ॥ ११ ॥

खड्गिमांसं कफघ्नन्तु कपायमनिलापहम् ।

पैत्र्यपवित्रमापुष्यं वद्धमृत्रारिरुक्षणम् ॥ १२ ॥

गैडेका मांस कफ नाशक कसेला अनिल रोगका दूर करनेवालाहै, पितरोंका हित कारक अवस्था-स्थापक, मूत्र रोधक और रुखाहै ॥ १२ ॥

वराहपिशितं बल्यं रोचनं स्वेदनं गुरु ।

स्नेहनं बृंहणं वृष्यं श्रमघ्नमनिलापहम् ॥ १३ ॥

वराहका मांस बलकारक, रोचक, स्वेद कारक, भारी है स्नेहन, पुरुषत्व कारक, बलकारक, श्रम और वात नाशकहै ॥ १३ ॥

लावोलघुः कटुर्याही स्वादुः शीतघ्नि दोषनुत् ॥ १४ ॥

लवापक्षीकामांस लघु कटु ग्राही स्वादु शीतल और त्रिदोषका दूर करनेवालाहै ॥ १४ ॥

तित्तिरिः सर्वदोषघ्नो ग्राही वर्णप्रसादनः ।

ईषद्वरूष्णमधुरो वृष्यो मेधाग्निवर्द्धनः ॥ १५ ॥

तीतरका मांस सब दोषका दूर करनेवाला ग्राही और वर्णका प्रसादन करनेवालाहै, कुछ गरम मधुर बल वर्द्धक बुद्धि और अग्निका बढ़ाने वालाहै ॥ १५ ॥

पित्तश्लेष्मविकारेपुसरक्तेषु कपिञ्जलाः ।

मन्दवातेषु शस्यन्ते शैत्यमाधुर्यलाववात् ॥ १६ ॥

कपिञ्जल (गौरातीतर) का मांस ॥ पित्तकफके विकारमें रक्त तथा मन्दवातमें शीत मधुर और लघु होनेसे हितकारी है ॥ १६ ॥

ईषदुष्णागुरुस्निग्धावृंहणावर्तकाः स्मृताः ॥ १७ ॥

कुछ गरम स्निग्ध और वृंहण वर्तकका मांस होता है ॥ १७ ॥

क्रकरालघवोद्ध्यास्तथाचैवोपचक्रकाः ।

वातपित्तहरावल्या मेषाग्निबलवर्द्धनाः ॥ १८ ॥

क्रकर लघाकी समान कपिञ्जल (तीतर) से कुछ स्थूल का मांस लघु, हृदयको हितकारक होता है, चक्रा और उपचक्रके मांसभी इसी प्रकार वात पित्तके हरनेवाले बुद्धि अग्निके बढ़ानेवाले हैं ॥ १८ ॥

वर्हीढक्श्रोत्रमेधाग्निवयोवर्णस्वरायुषाम् ।

हितोबलयोगुरुश्रोणोवातघ्नोपांसशुक्रलः ॥ १९ ॥

मोरकामांस दृष्टि श्रोत्र बुद्धि अग्नि वयवर्ण स्वर आयुका बढ़ानेवाला हितकारी बल दायक भारी उष्ण वात नाशक मांस और वीर्य वर्द्धक है ॥ १९ ॥

पारावतो गुरुः शीतो रक्तपित्तहरः स्मृतः ।

रसेपाकेच मधुरः कपायो विपदोपि च ॥ २० ॥

कबूतरका मांस भारी शीतल रक्तपित्त हरनेवाला है, रसपाकमें मधुर कसेला तथा विपदाता है ॥ २० ॥

तेभ्यो लघुतराः किञ्चित् कपोतावनवासिनः ।

शीताः संप्राहिणश्चैव स्वल्पमूत्रकराश्च ते ॥ २१ ॥

जंगली कबूतरके मांसके गुण कुछ उनसे न्यून हैं, वे ठंडे संप्राही और स्वल्प मूत्र कारक हैं ॥ २१ ॥

जंगली पाण्डु वर्णका कपोत (गयदासकामत) कसेला स्वादु और नूनखरा है ॥ २१ ॥

कपायः स्वादुलवणा गुरुकाणकपोतकः ॥ २२ ॥

वनके मुरगे का मांस स्वेद स्वर और बल कारक है ॥ २२ ॥

कुकुटोवृंहणो वन्यः स्वेदस्वरवलावहः ।

स्निग्धोष्णोनिलहावृष्योग्राम्यस्तद्वद्गुरुस्तुतः ॥ २३ ॥

और ग्राम्य मुरगेका मांस स्निग्ध उष्ण वात नाशक वृष्य और भारी है ॥ २३ ॥

कुलिङ्गोमधुरः स्निग्धः कफशुकविवर्द्धनः ।

सन्निपातहरोवेश्मकुल्लिङ्गस्त्वतिशुकलः ॥ २४ ॥

कुल्लिङ्ग चिडियाकामांस मधुर स्निग्ध कफ और वीर्यका बढ़ाने वाला सन्निपातका हरने वाला है और घर का कुल्लिङ्ग अधिक वीर्य करता है ॥ २४ ॥

शुकमांसं कपायाम्लं विपाकेरुक्षशीतलम् ।

शोषकासक्षयहितसंग्राहिलघुदीपनम् ॥ २५ ॥

तोते का मांस कसेला अम्ल विपाकमें रुखा और शीतल है शोष रोग, खांसी, क्षयमें हितकारक संग्राहि लघु और दीपन है ॥ २५ ॥

गुरुष्णस्निग्धमधुराः स्वरवर्णबलप्रदाः ।

वृंहणाः शुक्रलाश्रोक्ता हंसाः पवननाशनाः ॥ २६ ॥

हंसोंके मांस भारी स्निग्ध मधुर स्वर वर्णबलके देनेवाले, वृंहण वीर्यवर्द्धक वातके हरनेवाले हैं ॥ २६ ॥

शरारिवक्कादम्बवनाकाः पवनापहाः ।

स्निग्धाः मृष्टमलावृष्या रक्तपित्तहराहिमाः ॥ २७ ॥

शरारी और वक्क कलहंस नलाका का मांस वात जित स्निग्ध मल सारक बल कारक रक्त पित्त हरनेवाला और शीतल है ॥ २७ ॥

कूर्मादयः स्वादुपाकरसावल्यानिलापदाः ।

शीताः स्निग्धाहिताः पित्तवर्चस्याः श्लेष्मवर्द्धनाः ॥ २८ ॥

कूर्मादिक स्वादुपाक रसवाले बलकारक वातजित् शीतल,
स्निग्ध, हितकारी, पित्तमें हितकारी मल कारक श्लेष्मवर्द्धकहैं २८

कृष्णः कर्कटकस्तेषां वल्यः कोष्णोऽनिलापहः ।

शुक्रसन्धानकृत् सृष्टविण्मूत्रोऽनिलपित्तहा ॥ २९ ॥

काला कैंकडा बलकारक कुछ उष्ण, वातजित् वीर्यका
सन्धान करने वाला विष्टामूत्रका उत्पन्न करता वात पित्त
हरनेवालाहै ॥ २९ ॥

गोधाविपाकेमधुरा कषायकटुकारसे ।

वातपित्तप्रशमनीघृहणी बलवर्द्धिनी ॥ १ ॥

गोधा (गोय) का मांसपाकमें मधुर कसेलाहै रसमें कटुहै
वातपित्तका शान्त करनेवाला घृहण और शलको बढ़ानेवाला है

शल्यकः स्वादुपित्तघ्नोलघुशीतोविपापहः ॥ २ ॥

शल्यक (सेही) का मांस स्वादु पित्त का नाश करनेवा
ला लघु शीतल और विषका नाशकहै ॥ २ ॥

मूषिकोमधुरःस्निग्धोव्यवायीशुक्रवर्द्धनः ॥ ३ ॥

मूषक का मांस मधुर स्निग्ध सब शरीर में व्याप्त होकर
पकनेवाला तथा वीर्यका बढ़ाने वालाहै ॥ ३ ॥

दुर्नामानिलदोषघ्नाः क्रिमिदूषीविपापहाः ।

चक्षुष्यामधुराःपाके सर्पा मेधाग्निवर्द्धनाः ॥ ४ ॥

दुर्नाम (यवासीर) वात दोषका हरनेवाला, कृमि दूर
करनेवाला, विष का नाशक है, नेत्रोंको हितकारी पाकमें मधुर
बुद्धि और अग्निका बढ़ाने वाला सर्पका मांस होता है ॥ ४ ॥

जंघालावातपित्तघ्ना स्तीक्ष्णावस्तिविशोधनाः ।

कषायमधुराश्चैव लघवोवलवर्द्धनाः ॥ ५ ॥

मांस दो प्रकारके होतेहैं, जाङ्गल और अनूप, जाङ्गल
वर्ग आठ प्रकारकाहै, जङ्गल (शीघ्रगामी हिरण आदि)
विष्किर (चोंच चरणसे बखेरकर खानेवाले, बतक मोर मुरगा
आदि) प्रतुद (बहुत प्रकार प्रहार करनेवाले मैना भृङ्गराजतो-

ते आदि, (गुहावासी सिंहव्याघ्रादि) प्रसह्य (हठसे खेंचकर खानेवाले काक कुररकङ्क गृध्रादि) पर्णमृग (पत्तेवाले वृक्षोंमें विचरनेवाले वानर वनमानस आदि वृक्ष मूषिक आदि (विलेशय शल्यक गोयमूसा आदि) ग्रामचराः (गांवमें रहनेवाले छागमेपादि) और अनूप पांच प्रकारकाहै कूलचर (पानीके समीपमें फिरनेवाले, हाथी गवय महिष आदि) (प्लव जलमें तैरनेवाले हंस सारस क्रौञ्च चक्रवाचकवी आदि) कोपस्थ (कोपमें स्थित होनेवाले शंखशुक्ति शम्बूक आदि) पादवन्ताः (चरणवाले कूर्म कुंभीर कर्कट आदि) और मत्स्य प्रसिद्ध हैं जाङ्गल जीवोंका मांस घात पित्तका दूर करनेवाला तीक्ष्ण तथा वस्तीका शुद्ध करनेवालाहै, कसेला मधुर लघु और बलका बढ़ाने वालाहै ५

विष्किरामधुराः शीताः कपाया लघुपाकिनः ॥ ६ ॥

विष्किर जीवोंका मांस मधुर शीतल कसेला लघुपाकीहै ॥ ६ ॥

प्रतुदाः कपायमधुराः श्लेष्मपित्तहराहिमाः ।

वद्धमूत्रमलरुक्षाः फलाहारानिलावहाः ॥ ७ ॥

प्रतुदजीवोंका मांस कसेला मधुर कफ, पित्तका हरनेवाला ठंडाहै, मूत्रमलका बांधने वाला रुखाहै फलका आहार पवनका करनेवालाहै ॥ ७ ॥

गुहाशयावातहरा नेत्रगुह्यविकारिणाम् ॥

हितागुरुष्णमधुराः स्निग्धामांसाशिनोधिकम् ॥ ८ ॥

गुहामें शयन करनेवाले जीवोंका मांस घात हारक नेत्र तथा गुह्य स्थानमें विकार करनेवालाहै हितकारी गुरु गरम मधुर स्निग्धता यह अधिक करताहै ॥ ८ ॥

प्रसहाः स्वादुवीर्योष्णास्तेषां मांसाशिनस्तुये ।

तेशोपभस्मकोन्मादे हिताः क्षीणेविशेषतः ॥ ९ ॥

प्रसह जीवोंका मांस स्वादुवीर्यमें उष्णहै जो इनका मांस खातेहैं उनका शोष भस्मक उन्माद और क्षीण रोग विशेष करके दूर होताहै ॥ ९ ॥

दृक्शुक्रासहितः पर्णमृगः स्वादुर्गुरुस्तथा ।

मृष्टमूत्रपुरीषश्च कासार्षः श्वासनाशनः ॥ १० ॥

पर्ण मृगवाले जीवोंका मांस स्वादु और भारीहै मूत्र पुरी-
षका बनानेवालाहै खांसी बवासीर और द्वास रोमका दूर कर-
नेवालाहै ॥ १० ॥

विलेशयावातहरा वृंहणारसपाकयोः ।

मधुरावद्धविण्मूत्रा वीर्योष्णाश्च प्रकीर्तिताः ॥ ११ ॥

विलमें शयन करनेवाले जीवोंका मांस घात हारकहै
रस पाकमें वीर्यकी वृद्धि करताहै तथा यह मांस मधुर विष्टा
मूत्रके बांधनेवाले उष्ण वीर्य कहे हैं ॥ ११ ॥

ग्राम्यावातहराः सर्वे वृंहणाः कफपित्ताः ।

मधुरारसपाकाभ्यां दीपनावलवर्द्धनाः ॥ १२ ॥

ग्राम्य जीवोंका मांस घातका हरनेवाला वीर्य वर्द्धक
कफपित्त का करनेवाला रस पाकमें मधुर दीपन और बलका
बढानेवालाहै ॥ १२ ॥

कूलचरामरुत्पित्तहरावृष्या बलावहाः ॥

मधुरस्निग्धशीताश्च मूत्रलाः श्लेष्मलास्तथा ॥ १३ ॥

किनारेपर फिरनेवाले जीवोंका मांस घात पित्त हारक
वीर्य वर्द्धक बलकारक, मधुर स्निग्ध शीतल मूत्र सारक तथा
कफ कारकहै ॥ १३ ॥

पुष्याहिमाः स्निग्धास्तपित्तानिलापहाः ।

मृष्टमूत्रपुरीषाश्च मधुरा रसपाकयोः ॥ १४ ॥

तेरनेवाले जीवोंका मांस वृष्य ठंडा स्निग्ध रक्त पित्त और
घात हरताहै मूत्र पुरीषका निर्माता रस पाकमें मधुरहै ॥ १४ ॥

कोपस्थाः पादिनश्च स्निग्धाः शीतानिलापहाः ।

वर्द्धस्याः मधुरावृष्याः पित्तघ्नाः कफकारकाः ॥ १५ ॥

कोशस्थ और चरणवालोंका मांस स्निग्ध शीतल तथा
अम्रिका बढानेवालाहै, मलकारक मधुर शुक्रकारक पित्तनाशी
और कफकारकहै ॥ १५ ॥

मत्स्याः स्निग्धोष्णमधुरा वातजिन्मललोमनाः ।

पित्तमांसवलश्लेष्मशुक्राभिष्यन्दकारकाः ॥ १६ ॥

मत्स्य स्निग्ध उष्ण मधुर वातजित् मलके करनेवाला पित्त मांस बलश्लेष्मा शुक्र और स्वेदका करनेवाला है ॥ १६ ॥

रोहितः सर्वमत्स्यानां वरोवृष्योऽर्दितातिजित् ।

कषायानुरसः स्वादुर्वातघ्नोनातिपित्तकृत् ॥ १७ ॥

सब मछलियोंमें रोहू मछली श्रेष्ठ है यह बलकारक अर्दित और दुःखको जीतनेवाली है, यह रसमें कसेली स्वादु वात नाशक बहुत करके पित्तको नहीं- करती है ॥ १७ ॥

शकुलोमधुरोरुच्यः कषायोविपंदोलघुः ॥ १८ ॥

शकुल (एकप्रकारकी) मछली मधुर रुचिकारक कसेली विषदायक मधुर है ॥ १८ ॥

शिलिन्दः श्लेष्मलोबल्योविपाके मधुरोगुरुः ।

वातपित्तहरोवृष्य आमवातकरोमतः ॥ १९ ॥

शिलिन्द मत्स्य श्लेष्मा कारक बलदायक विपाकमें मधुर और गुरु है, वात पित्तहारक बलकारक तथा आम वातका करनेवाला है ॥ १९ ॥

आडिमत्स्यो गुरुःस्निग्धः स्वादुर्बृष्योवलप्रदः ॥ २० ॥

आंढी मत्स्य गुरु स्निग्ध स्वादुवीर्य और बलका करनेवाला है २०

इल्लिसोमधुरः स्निग्धः पित्तश्लेष्मप्रकोपणः ।

मृणां व्यवायनित्यानां हितोवह्निविवर्द्धनः ॥ २१ ॥

इल्लिस मत्स्य मधुर स्निग्ध पित्त और श्लेष्माका क्रोध करने वाला मनुष्योंके शरीरमें फैलनेवाला हितकारी आगिका बढ़ाने वाला है ॥ २१ ॥

एलङ्गः स्निग्धः मधुरोगुरुविष्टम्भिशीतलः ॥ २२ ॥

एलङ्ग मत्स्य स्निग्ध मधुर गुरु विष्टम्भी और शीतल है ॥ २२ ॥

पर्वतोमधुरः स्निग्धः कषायानुरसोगुरुः ॥ २३ ॥

पर्वत मत्स्य मधुर स्निग्ध कसेला रसकारक और गुरु है ॥ २३ ॥

भाकुटोमधुरोवृष्यः कषायानुरसोगुरुः ॥ २४ ॥

भाकुट मत्स्यका मांस मधुर पुरुषार्थकारक कसैलारसमें गुरु है २४

पाठीनः श्लेष्मलोवृष्यो निद्रालः पिशिताशनः ॥

दूषयेद्रक्तपित्तञ्च कुष्ठरोगं करोत्यसौ ॥ २५ ॥

पाठीन मत्स्य श्लेष्मा कारक पुरुषार्थकारक निद्राकारक है इसका मांस रक्त पित्तको दूषितकर कुष्ठ रोग करता है ॥ २५ ॥

वर्मिमत्स्यस्तथावृष्यो मधुरोरसपाकतः ॥ २६ ॥

वर्मि मत्स्य बलकारक रसपाकमें मधुर है ॥ २६ ॥

कुलिशः कषायमधुरः कुब्जकः कफपित्तहा ॥ २७ ॥

कुलिश मत्स्य कसैला मधुर है, कुब्जक कफ पित्त दूर करता है २७ ॥

शृङ्गीतु वातशमनी स्निग्धाश्लेष्म प्रकोपणी ॥ २८ ॥

शृङ्गीवात शान्त करनेवाला, स्निग्ध श्लेष्माका करनेवाला है २८ ॥

महूरोमधुरोवृष्योविषाकं मधुरोगुरुः ॥ २९ ॥

महूर मत्स्य मधुर वृष्य विषाकमें मधुर और गुरु है ॥ २९ ॥

गुत्थमत्स्योगुरुःस्निग्धःश्लेष्मलोवातनाशनः ॥ ३० ॥

गुत्थ मत्स्य मारी स्निग्ध कफकारी वात नाशक है ॥ ३० ॥

कवय्यःस्निग्धमधुराः चलदङ्गो गडो यथा ॥ ३१ ॥

कवय्य मृगका मांस मधुर है और चलदंग मत्स्य कछा है ३१ ॥

क्षुद्रमत्स्यास्तुल्यवो ग्राहिणो ग्रहणीहिताः ॥ ३२ ॥

क्षुद्र मत्स्य लघु ग्राही ग्रहणी रोगमें हितकारक है ॥ ३२ ॥

मत्स्य कूर्मखगाण्डानि स्वादुवाजीकराणि च ॥ ३३ ॥

मत्स्य कछुए और पक्षियोंके अण्डे स्वादु और वाजी कर हैं ३३

चरः शरीरावयवः स्वभावोधातवः क्रियाः ।

लिङ्गं प्रमाणं संस्कारोमात्राचास्मिन् परीक्ष्यते ॥ ३४ ॥

मांस भक्षणमें चरजीवोंके शरीरके अवयव स्वभाव धातु क्रिया लिंग प्रमाण संस्कार, मात्राकी परीक्षा कही है, अर्थात् देश विशेषसे भक्ष्य विशेषसे भुगादिका गुरु लघु पना

वर्णन किया है, इस कारण जल चरादि जीवोंकी परीक्षा अवश्य करनी, शरीर अवयवकी परीक्षा करनी जैसा लिखा है कि विहंगोंकी उरु और ग्रीवा विशेषकर गुरु हैं, सकृधि मांस सभी भारी, जोड़ स्कंध शिर स्थान और भी भारी हैं, स्वभाव सबमें जातीय धर्म है, जैसे मूंग लावक कर्पिजल स्वभावसेही हलके हैं, धातु शोणित आदि उत्तरोत्तर एक दूसरे से भारी हैं, चेष्टा, बहुत चेष्टावाले प्राणी, आलसियों से विशेष हैं, अर्थात् लघु हैं, लिंगमें पुरुष गुरु और स्त्री लघु है, हारीतने कहा है, चौपायोंमें स्त्री लघु है, पक्षियोंमें पुरुष लघु हैं, जातू कर्णने भी कहा है वन्ध्याछागी श्रेष्ठ है वहन मिले तो बकरी लेनी, पाराशरकहते हैं चौपायोंमें स्त्री और विहंगोंमें पुरुष लेना, प्रमाणमें जैसे महा शरीरवाले अपनी जातिमें भारी हैं संस्कार जैसे मांस रसके निदेशमें सुश्रुतने कहा है खेद गोरस धान्य अम्ल फल और जो वस्तु अम्ल युक्त हैं वह यथोत्तर गुरु हैं, ऐसाही चरकमें लिखा है "गुरुणां लाघवं विद्यात् संस्काराद् सविपर्ययम् ब्रीहिर्लाजा यथा वस्युः शकुनासिद्ध पिण्डिका" इति संस्कारसे लघु भारी हो जाते हैं, जैसे भारी धानोंकी स्त्रीलें हलकी होती हैं, लघु सज्जोंकी सिद्ध पिण्डिका भारी होती हैं (अग्निमें पकाये पिण्ड) मात्राके वशसे हलका भारी और भारी हलका हो जाता है, थोड़ी देनेसे भारी की मात्रा हलकी, और हलकी की भारी होजाती है, चकारसे अग्निबलसे लघु भारी जानना ॥ १४ ॥

कृशात्स्वयंमृतान्मांसंविषव्याहृतादपि ।

बालंतोयाग्निविक्त्रिन्नरोगिशुष्कं नपूजितम् ॥

अगोचरभृतयज्ञमेध्यंवृद्धंतथैवच ।

सिद्धं पथ्युपितंतद्द्रुर्गन्धिग्रथितश्चयत् ॥

क्रिमिजग्धश्चयन्मांसमायुःकामोविवर्जयेत् ॥ १५ ॥

कृशजीवका, स्वयं मृतक हुएका, विषखायेका व्याघ्रादिसे हत हुएका बाल अवस्थाका जल अग्निसे व्याकुलका रोगी तथा शुष्कजीवका मांस अच्छा नहीं होता जो अनूप धन्व देशमें पुष्ट हुआ हो जिसका भेद बढ़ गया हो बनाकर खासी

हो गया हो जिसमें दुर्गन्धि और गांठ पड़ गई हो, जो मांस कीड़ों का खाया हो, आयु की इच्छावाला उसे न खाये ॥ ३५ ॥

एभ्योऽन्येषामुपादेयं मांसं दोषविवर्जितम् ।

लावतित्तिरि सारङ्ग कुरङ्गेणकपिञ्जलः ॥

मयूर वर्मिकूर्माश्च श्रेष्ठामांसगणेष्विह ॥ ३६ ॥

इससे अन्यदोष रहित मांसको लेना चाहिये, लावा, तीतर सारंग, कुरंग, षण्मृग, कपिञ्जल, मयूर, रोहित, मत्स्य, और कूर्म इनका मांस अच्छा होता है ॥ ३६ ॥

पोताधानास्तुसर्वेषां सुस्निग्धा लघुदीपनाः ।

महाप्रमाणागुरवः क्रियावन्तोऽल्पचेष्टिनः ॥ ३७ ॥

छोटी मछलियोंके समूह के अण्डे सबके लघु और दीपन होते हैं, तथा स्निग्ध होते हैं महा प्रमाण वाले भारी क्रियावाले और अल्पचेष्टा वाले होते हैं ॥ ३७ ॥

मत्स्याण्डानि विशेषेण वातपित्तहराणि च ।

ह्रैयानिहृद्यरुच्यानि कटुपाकीनि चैव हि ॥ ३८ ॥

मत्स्यके अण्डे विशेषकर वात पित्त को हरते हैं, यह हृदयकी रुचिकारक और कटु पाकी हैं ॥ ३८ ॥

हंसबीजं परं वल्यं बृंहणं वातनाशनम् ।

पाकेलघुतरं प्रोक्तं सर्वामयविवर्जितम् ॥ ३९ ॥

हंसका अंडा परम बलकारक पुरुषार्थ कारक वात नाशक है पाकमें अत्यन्त लघु सर्व रोग वर्जित है ॥ ३९ ॥

विष्टम्भिणः शुष्कमत्स्या अमल्यादुर्जरामताः ।

सिद्धलाग्रहणीदोषशमनी पवनापहा ॥ ४० ॥

इति मांसादिवर्गः ।

सूखी मच्छी मलरोकने वाली, बल रहित देरमें पचती है, विष्टम्भी ग्रहणी दोषको शान्त करने वाली तथा वात नाशक है ४०

इति मांसवर्गः ।

शाकानिप्रायशस्तानिविष्टम्भीनि गुरूणिच ।

रूक्षाणिवहुवर्चांसि सृष्टविण्मारुतानिच ॥ १ ॥

प्रायःसम्पूर्ण श्रेष्ठ शाक विष्टम्भी और मल रोकनेवाले तथा भारी होतेहैं, रूखे अधिक मलप्रवृत्त करनेवाले वात युक्त होतेहैं ?

पत्रं पुष्पं फलं नालं कन्दं संस्वेदजं तथा ।

शाकं षड्विधमुद्दिष्टं गुरुविद्याद्यथोत्तरम् ॥ २ ॥

पत्र, पुष्प, फल, नाल, कन्द, संस्वेदजके भेदसे शाक छः प्रकारकाहै, यह उत्तरोत्तर गुरु जानना ॥ २ ॥

जीवन्ती सर्वं दोषघ्नी चक्षुष्या मधुराहिमा ॥ ३ ॥

जीवन्ती (डोढी) सब दोषोंको दूर करनेवाली चक्षुओंको हितकारक मधुर है ॥ ३ ॥

तण्डुलीयमसृक्षपित्तविषनुत्सादुपाकतः ॥ ४ ॥

चौलाईका शाक रुधिरं पित्त विकार विष दूर करनेवाला पाकमें स्वादुहै ॥ ४ ॥

वास्तूकस्तुसरोहृद्यो दोषनुत्पाकतोलघुः ।

स क्षारः क्रिमिहामेघ्यो रुच्योऽग्निबलवर्द्धनः ॥ ५ ॥

वास्तूक (बधुआ) सारक हृदयको हितकारी दोष नाशक पाकमें लघुहै, उसका क्षार क्रिमि नाशक, बुद्धि बढ़ानेवाला, रुचिकारक अग्नि और बलका बढ़ानेवालाहै ॥ ५ ॥

लघुपत्रीतुयाचिल्ली सावास्तूकसमामता ॥ ६ ॥

और लघुपत्रवाला चिल्ली शाक वास्तूककी समान कहाहै ६ ॥

मूलकपोतिका कण्ठ्या सर्वं दोषहरीलघुः ।

कटु तिक्त रसाहृद्या रोचनीवह्निदीपनी ॥ ७ ॥

मूलकपोतिका (छोटी मूली) कंठको हितकारक सब दोष नाशक और लघुहै, रसमें कटु और तिक्त हृदयको हितकारक सर्व दोष हरनेवाली रुचिकारक अग्नि प्रदीप करनेवालीहै ॥ ७ ॥

महत्तद्गुरुविष्टम्भीतीक्ष्णमामं त्रिदोषकृत् ॥ ८ ॥

और पकी हुई मूलीविष्टम्भी तीक्ष्ण आम और त्रिदोषकी करनेवालीहै ॥ ८ ॥

तदेवस्निग्धसिद्धन्तु वातनुत्कफपित्तकृत् ॥ ९ ॥

और यही स्निग्ध सिद्धकी हुई वात नाशक कफ और पित्तकी करनेवाली है ॥ ९ ॥

शुष्कन्तु शोथशमनंगरदोषहरंलघु ॥ १० ॥

सूखी शोथ रोगकी शान्त करनेवाली विष दोष नाशक लघु है ॥ १० ॥

तत्फलंकफवातघ्नं तत्पुष्पं कफ पित्तजित् ॥ ११ ॥

इसका फल कफ वातका नाश करनेवाला और इसका पुष्प कफ पित्तका जीतनेवाला है ॥ ११ ॥

हिलमोचीतु कुष्ठघ्नीभेदनीकफपित्तनुत् ॥ १२ ॥

हिलमोच (हुलहुल) कुष्ठ दूर करनेवाला है भेदन और कफ पित्तनाशक है ॥ १२ ॥

उपोदिकासरास्निग्धा वल्याश्लेष्मकरीहिमा ।

स्वादुपाकरसावृष्या वातपित्तमदापहा ॥ १३ ॥

उपोदिका (पोई) सारक है स्निग्ध बल और श्लेष्माकी करने वाली है पाकमें स्वादु रस युक्त बलकारक वातपित्त मदकी दूर करनेवाली है ॥ १३ ॥

सुनिषण्णन्तु संग्राहि अविदाहि विदोषनुत् ॥ १४ ॥

सुनिषण्ण (सुनसुनिया) संग्राही अदाहक और विदोष दूर करनेवाली है ॥ १४ ॥

मारिपोमधुरःशीतोविष्टम्भीगुरुपित्तनुत् ॥ १५ ॥

मारिप (भरसा) मधुर ठंडा विष्टम्भी मारी और पित्तका दूर करनेवाला है ॥ १५ ॥

पालङ्क्यावद्धविष्णूत्राकफघ्नी तण्डुलीयवत् ॥ १६ ॥

पालङ्क्य (पालक) विष्टामूत्रको बांधने वाला कफ नाशक गुणमें चोलाईकी समान है ॥ १६ ॥

कासमर्दोऽग्निदःकण्ठ्यःस्वादुस्तिक्तत्रिदोषनुत् ॥ १७ ॥

कासमर्द (कसाँदी) अग्निदाता कण्ठको हितकारक स्वादु तीक्ष्ण त्रिदोष दूर करनेवाला है ॥ १७ ॥

कालशाकं गरुश्लेष्म शोथघ्नं दीपनं कटु ॥ १८ ॥

काल शाक विष श्लेष्म शोथका हरने वाला, दीपन और कटु है ॥ १८ ॥

कलायपत्रं मधुरं रुक्षं भेदिचवातलम् ॥ १९ ॥

कलायपत्र(मटरके पत्ते)मधुर रुखा भेदी और वात करता है १९

सतीलकं त्रिदोषघ्नं कटुपाकं सतिक्तकम् ॥ २० ॥

सतीलक शाक त्रिदोष नाशक पाकमें कटु और तीखा है २०

चाणकं दुर्जरं स्वादुकौसुम्भन्तु कफापहम् ॥ २१ ॥

चना कठिनतासे पचनेवाला स्वादिष्ठ है कुसुम्भका शाक कफकानाशकारक है ॥ २१ ॥

पुनर्नवायुग्म मुष्णवीर्य्यं रसायनं सरम् ।

कफानिलामदुर्नामव्रधशोथोदरापहम् ॥ २२ ॥

दोनो पुनर्नवा गरम और वीर्यमें रसायन है तथा सारक है कफ घात आम पिडिका अर्श ब्रध शोथ उदर रोगको दूर करता है ॥ २२ ॥

कञ्चटं तिक्तकं ग्राहिरक्तपित्तापहं स्मृतम् ॥ २३ ॥

कंचट शाकतीखा ग्राही और रक्तपित्त नाशक है ॥ २३ ॥

चाङ्गेरीतु कपायोष्णा मधुरा वान्हिदीपनी ।

साम्लावातकफौहन्ति ग्रहण्यर्शोविकारनुत् ॥ २४ ॥

चांगेरीशाक (अम्लिलोना) कसेला उष्ण मधुर अग्निदीपक है अम्ल सहित वात कफ नाशक ग्रहणी और अर्श विकारको दूर करता है ॥ २४ ॥

चुक्रकंदुर्जरं भेदि अम्लं पित्तकरंगुरु ॥ २५ ॥

चूका शाक कठिनतासे जीर्णहोनेवाला भेदी अम्लपित्तका करनेवाला भारी है ॥ २५ ॥

कलम्बिका गुरुवृष्या कपाया स्तन्यवृद्धिदा ॥ २६ ॥

कलम्बिका शाक भारी वाजी कर कसेला स्तनकी वृद्धि करता है ॥ २६ ॥

सार्पपं गुरुशाकश्च वद्धमूत्रं त्रिदोषकृत् ॥ २७ ॥

सरसोंका शाक गुरु मूत्रवृद्ध कारक तथा त्रिदोष कारक है २७

ग्रीष्म सुन्दरकस्तिकोरोचनः कफपित्तनुत् ॥ २८ ॥

ग्रीष्म सुन्दरक (सुन्दरीशाक) तीखा रुचिकारक कफपित्त नाशक है ॥ २८ ॥

नाडीचः पिच्छिलः शीतो विष्टम्भी वातकोपनः ।

रक्तपित्तहरः स्वादुर्मण्डूक्याद्याश्च तद्गुणाः ॥ २९ ॥

नाडीच (नाडी शाक) चिकना शीतल विष्टम्भी वातका करनेवाला रक्तपित्तका हरनेवाला स्वादु माण्डूक्यादि उसके गुण हैं ॥ २९ ॥

पटोलपत्रं पित्तघ्नं नालं तस्य कफापहम् ।

फलं तस्य त्रिदोषघ्नं मूलं तस्य विरेचनम् ॥ ३० ॥

पटोल पत्र पित्तका नाश करने वाला है नाडी उसकी कफ करने वाली है फल त्रिदोष नाशक और मूल विरेचन करने वाली है ॥ ३० ॥

निम्बः पित्तकफच्छर्दिघ्नहृत्तासकुष्ठनुत् ॥ ३१ ॥

नीम पित्त, कफ, छर्दि घ्न हृत्तास और कुष्ठका नाश करने वाला है ॥ ३१ ॥

पर्पटस्तुं सवेत्राग्रस्तित्तः पित्तकफापहः ॥ ३२ ॥

पर्पट वेत्र अग्र तीखा कफ और पित्तका हरनेवाला है ॥ ३२ ॥

त्रिदोषशमनीवृष्या काकमाचीरसायनी ।

नात्युष्णा शीतवीर्या च भेदनी कुष्ठनाशिनी ॥ ३३ ॥

काकमाची (केवेया) त्रिदोष शान्त करनेवाली यलकारक रसायनी है बहुत गरम नहीं शीत वीर्यवाली भेदन करनेवाली कुष्ठ नाशक है ॥ ३३ ॥

वायंवत्सादनीहन्यात्पित्तघ्नीतु सुवर्चला ॥ ३४ ॥

वत्सादनी वातकी दूर करनेवाली पित्त नाशक कान्ति कारक है ॥ ३४ ॥

राजक्षवकशाकन्तुत्रिदोषशान्तनलघु ।

ग्राहिशस्तं विशेषेण ग्रहण्यशौविकारिणाम् ॥ ३५ ॥

राजक्षवक (सरसोंका) शाक त्रिदोष शान्त करनेवाला पचनेमें हलका है, ग्राहीहै विशेष कर ग्रहणी और अर्श विकारको शान्त करताहै ॥ ३५ ॥

दीपनाः कफवातघ्नाश्चिरविल्वांकुराः सराः ॥ ३६ ॥

चिर विल्व (करञ्ज) के अंकुर दीपन कफ वात नाशक तथा सारक हैं ॥ ३६ ॥

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थप्लक्षपद्मादिपल्लवाः ।

कपायस्तम्भनाःशीताहिताः पित्तातिसारिणाम् ॥ ३७ ॥

न्यग्रोध (घट) शूलर पीपल पाकर पद्म आदि इनके पत्ते कसैले स्तम्भनाशीत पित्त और अतीसार वालोंको हितकारीहैं ३७

अवल्लुजःकटःपाकेतितःपित्तकफापहः ॥ ३८ ॥

अवल्लुज (सोमराजी) पाकमें कटु तीखा पित्त कफका दूर करनेवालाहै ॥ ३८ ॥

वार्ताकं कटुतीक्ष्णोष्णं मधुरं कफवातजित् ।

रोचनंवह्निजननं जीर्णन्तु पित्तलं मतम् ॥ ३९ ॥

वार्ताक (बिंगन) कटुतीक्ष्ण उष्ण मधुर कफ और वातका जीतनेवाला रोचक अग्नि बलकारकहै जीर्ण होनेपर पित्तकारकहै ॥ ३९ ॥

कण्डूकुष्ठक्रिमिघ्नानि कफवातहराणि च ।

फलानि बृहतीनान्तु कटुतिक्तलघूनि च ॥ ४० ॥

कटेरीके फल जुजली कुष्ठ कृमिके नाष्ट करनेवाले कफ वातके हरनेवाले कटु तिक्त और लघु होते हैं ॥ ४० ॥

कारवेल्वः सकर्कोटी रोचनः कफपित्तनुत् ॥ ४१ ॥

कारवेल सकर्कोटी (काकोड़ी) रोचन कफ तथा पित्तकी दूर करने वाली है ॥ ४१ ॥

कूष्माण्डकं पित्तहरं वालं मध्यं कफापहम् ।

पक्वं लघूष्णं सक्षारं दीपनं वस्तिशोधनम् ॥

सर्वदोषहरं हृद्यं पथ्यञ्चेतोविकारिणाम् ॥ ४२ ॥

पेठा पित्तहरनेवालाहै छोटा और मध्यका कफ नाशकहै पक्का लघु उष्ण क्षार युक्त दीपक तथा वस्ति शोधक है सर्व दोष हरने-वाला हृदयको हितकारी चित्तके विकार वालोंको पथ्य है ॥ ४२ ॥

सक्षारा मधुरारूक्षा रुच्या वातकफापहा ॥

अश्मरीभेदनी गुर्वीनाडी कूष्माण्डसम्भवा ॥ ४३ ॥

क्षार सहित मधुरे रुखे रुचिकारक वात कफ के हर्ता अश्मरी भेदक गुरु इसप्रकार पेठेकी नाडी होती है ॥ ४३ ॥

एव्यारूकं सकर्कारु सुपक्वं कफवातकृत् ॥

सक्षारं मधुरं रुच्यं दीपनं नातिपित्तलम् ॥ ४४ ॥

एव्यारूक (बड़ीककड़ी) कर्कारु (पेठा) यह पकेहुए कफ और वातके करने वालेहै क्षार सहित मधुर रुचिकारक दीपन और बहुत पित्तके करनेवालेनहीं है ॥ ४४ ॥

धालं सनीलं त्रिपुषं तेषां पित्तहरं स्मृतम् ।

तत्पाण्डुकफकृन्जीर्णमम्लं वातकफापहम् ॥ ४५ ॥

नवीन ककड़ी नीलो खीरेके समान पित्त हरनेवाली कहीहै, यह श्वेत वर्णका कफका करनेवाला जीर्ण अम्लवात और कफ का हरनेवालाहै ॥ ४५ ॥

शीर्णवृत्तं कफहरं सक्षारं मधुरं हि तत् ।

भेदनं दीपनं हृद्यमानाह्लाघीलनुल्लघु ॥ ४६ ॥

शीर्ण वृत्त एक प्रकार का तरबूज, कफ कारकक्षार युक्त मधुर और हलकाहै, भेदन दीपन हृदयको हितकारक आनाह रोग छीवन रोग दूर करता लघुहै ॥ ४६ ॥

अलाबुः शीतलारूक्षा गुर्वी वच्चं प्रभेदिनी ॥ ४७ ॥

अलाबूकटु तृप्ती ठंडीहै रुखी है मारीहै मलको भेदनेवालीहै ४७

अलाबुनाडिकागुर्वी मधुरा पित्तनाशिनी ।

वातश्लेष्मकरीरूक्षा शीतलामलभेदिनी ॥ ४८ ॥

तुम्बीकी नाड़ी भारी मधुर और पित्तको नाश करनेवाली है तथा वात श्लेष्मको करनेवाली रुखी शीतल अम्ल भेदनेवाली है ॥ ४८ ॥

तिक्तालावुरहृद्यातु वामनी वातपित्तजित् ॥ ४९ ॥

कहवी तुम्बी हृदयको हितकारक नहीं है, वमनकारक वात पित्तको जीतनेवाली है ॥ ४९ ॥

कुमुदोत्पलनालास्तु सपुष्पाः सफलाः स्मृताः ।

शीताः स्वादुकपायाश्च कफमारुत कोपनाः ॥ ५० ॥

कुमुद उत्पलके नाल फूल फल शीतल स्वादु कसेले कफ और वातके कोष करानेवाले हैं ॥ ५० ॥

हस्तिमध्वालुकादीनि रक्तपित्तहराणि च ।

गुरूणि स्वादुशीतानि स्तन्यशुक्रकराणि च ॥ १ ॥

हस्तिमधु आलुक आदि रक्त पित्तके हरने वाले हैं भारी स्वादु शीतल स्तनोंमें दुग्ध तथा वीर्यके करने वाले हैं ॥ १ ॥

विदारीकन्दो बल्यश्च वातपित्तहरश्च सः ।

मधुरो बृंहणो वृष्यः शीतः स्वयंतिमूत्रलः ॥ २ ॥

विदारीकन्द बलकारी धात पित्तको हरने वाला है, मधुर बलकारक और पित्तहरनेवाला है, मधुर बृंहण बलकारक शीतल स्वर और अधिक मूत्रका करने वाला है ॥ २ ॥

वातपित्तहरी वृष्या स्वादुतिक्ता शतावरी ।

महती सैव हृद्या च मेघाग्निबलवर्द्धिनी ॥

ग्रहण्यशौविकारघ्नी वृष्या शीता रसायनी ।

कफपित्तहरास्तिक्ता स्तस्या एवाङ्कुराः स्मृताः ॥ ३ ॥

शतावरी वात पित्तकी हरनेवाली, वीर्य वर्द्धक, स्वादु और तिक्त है, वही अधिक हृदयको हितकारक मेघा अग्नि और बलको बढ़ानेवाली है, ग्रहणी अर्श (बवासीर) के विकारको दूर करनेवाली, बलकारक ठंडी और रसायनी है, कफपित्तके हरनेवाली तथा तीखा उसका अंकुर होता है ॥ ३ ॥

तरुट विस शालूक क्रौञ्चादनकशेरुकम् ।

शृङ्गाटकाङ्गुलीञ्चगुरुविष्टम्भि शीतलम् ॥ ४ ॥

तरुट (नीले कमलकी जड़) विस शालूक भैंसीड़ा क्रौञ्चा-
दन (घंघोल) कसेरु सिंघाड़ा और अंकलोल्य भारीहै विष्टम्भ-
कारी और शीतलहै ॥ ४ ॥

पिण्डालुकं कफहरं गुरु वातप्रकोपणम् ॥ ५ ॥

पिंजळू कफका हरनेवाला भारी वातकाकोपकरने वालाहै ५॥

वज्राख्यकन्दः श्लेष्मघ्नः कटुपाकश्च पित्तकृत् ॥ ६ ॥

वज्राख्यकन्द श्लेष्माका हरनेवाला पाकमें कटु तथा पित्तका
करनेवालाहै ॥ ६ ॥

वेणोः करीराः कफला मधुरारसपाकतः ।

विदाहिनोनातिबलाः सकपायाविरूक्षणाः ॥ ७ ॥

वाँस काकला कफ कारक रसपाकमें मधुरहै तथा दाह कारक
अति बलकारक नहींहै कसेला और रुखाहै ॥ ७ ॥

ऐन्दुकश्च नदीमापं विषदं गुरुशीतलम् ॥ ८ ॥

ऐन्दुक उन्दीमान नदीमाप विषदायी भारी और शीतलहै ८

शूरणोदीपनोरुच्यः कफघ्नोविषदोलुघुः ।

विशोपादर्शतां पथ्यो भूकन्दस्त्वतिदोषलः ॥ ९ ॥

शनकन्द दीपन रुचिकारक कफ नाशक विषय वायक लघुहै
विशेष करके अर्श रोगमें पथ्यहै, और जिमीकन्द बहुत दोष
करताहै ॥ ९ ॥

माणकं स्वादुशीतञ्च गुरुचापि प्रकीर्तितम् ॥ १० ॥

मानकन्द स्वादुशीतल और गुरुहै ॥ १० ॥

कदल्यावलकृन्मूलं वातपित्तापहं गुरु ॥ ११ ॥

केलेकी जड़ बलकारक वात पित्त हरनेवाली गुरुहै ॥ ११ ॥

आमवातकरी कची कफकृद्गुरुपिच्छला ॥ १२ ॥

कची आमवातकी करनेवाली फलकारक गुरु और पिच्छलहै १२

वाराहकन्दः श्लेष्मघ्नः कटुकोरसपाकतः ।

मेहकुष्ठकिमिहरो बल्यो वृष्योरसायनः ॥ १३ ॥

वाराहीकन्द श्लेष्माका दूर करनेवाला रसपाकमें कटुहै प्रमेह कुष्ठ कृमिका हरनेवाला बलदायक वीर्य वर्द्धक रसायनहै ॥ १३ ॥

तालस्य नारिकेलस्य सज्जूरस्य शिरांसिच ।

कपायस्निग्धमधुरब्रंहणानि गुरुणिच ॥ १४ ॥

ताल नारियल और खजूरके फल कसेले स्निग्ध मधुर वीर्य-कारक भारीहैं ॥ १४ ॥

गुवाकस्य शिरस्तद्वज्जेदनं मदकारकम् ॥ १५ ॥

गुवाकका (सुपारी) फल भेदन और मदका करनेवालाहै १५

वालं ह्यनार्त्तवं जीर्णं व्याधितं किमिभक्षितम् ।

कन्दं विवर्जयेत् सर्वं योवातम्यङ्गनरोहति ॥ १६ ॥

जो छोटाहो ऋतु सम्बन्धी नहो, जीर्ण व्याधियुक्त कीड़ोंका खाया कंदहो अथवा जो अच्छी प्रकार नउगाहो उसे भक्षणन करै ॥

शणस्यकोविदारस्य कर्बूदारस्य शाल्मलेः ।

पुष्पं संग्राहिशस्तश्च रक्तापित्ते विशेषतः ॥ १७ ॥

सन कोविदार कर्बूदार (सफेद कचनार) सेमल इनके फूल खानेमें अच्छेहैं, विशेष कर रक्तपित्तमे हितकारीहैं ॥ १७ ॥

वृषागस्त्यस्य पुष्पाणि क्षयकासापहानिच ॥ १८ ॥

वृष (अडूसा) और अगस्त्यके फूल क्षय और कास रोगके दूर करनेवालेहैं ॥ १८ ॥

आगस्त्यं नातिशीतोष्णं नक्तान्धानाश्च शस्यते ॥ १९ ॥

अगस्त्यका फूल न ठंडाहै न गरम विशेषकर रतौधे वालोंको उपकारीहै ॥ १९ ॥

राजवृक्षस्य निम्बस्य मुष्ककार्काशनस्यच ।

कफपित्तहरं पुष्पं कुष्ठं कुटजस्यच ॥ २० ॥

राजवृक्ष नीम मुष्क (मोखावृक्ष) कार्काशन (वृक्ष) इनके पुष्प कफ पित्तके हरनेवालेहैं और कुटजके फूल कुष्ठ दूर करतेहैं २०

सतिक्त मधुरं शीतं पद्मं पित्तकफापहम् ॥ २१ ॥

कमल तीखा मधुर शीतल पित्त और कफका हरनेवाला है २१

मधुरं पिच्छिलं स्निग्धं कुमुदं रूहादिशीतलम् ॥ २२ ॥

कुई मधुर पिच्छल चिकनी प्रसन्न कारक तथा शीतल है ॥ २२ ॥

सिन्दुवारं जीवनीयंहिमं पित्तविनाशनम् ।

ययावृक्षं विजानीयात् कुसुमस्य गुणगुणान् ॥ २३ ॥

सिन्धुवार (सिम्हाल) निर्गुण्डी जीवनी (काकोडी) ठंडी और पित्तनाशक है जैसा वृक्ष होता है वैसेही उसके गुण होते हैं ॥ २३ ॥

छत्रकास्तु पलालेक्षुकरीपक्षितरेणुजाः ॥ २४ ॥

सर्वसंस्वेदजाः शीताः कपायाः स्वादुपिच्छिलाः ॥

गुरवश्छर्द्यतीसार ज्वरश्लेष्माभयप्रदाः ॥ २५ ॥

छत्रका पलाल अर्थात् अन्न रहित अन्नकी नाल ईख सुखा-
गोबर और रेशुमें उत्पन्न होनेवाला संस्वेदजशाक शीत वीर्य
कषैला स्वादिष्ठ पिच्छल भारी छर्दि अतीसार ज्वर और श्लेष्मा
रोगके करनेवाले हैं ॥ २४ ॥ २५ ॥

कर्कशपरिजीर्णश्च क्रिमिनुष्टमदेशजम् ।

विवर्जयेत् पत्रशाकं यदकाल विरोहिच ॥ २६ ॥

कर्कश अत्यन्त जीर्णकीड़ोंसे युक्त अदेशमें उत्पन्न हुआ शाक
पत्र भोजन करना उचित नहीं है अथवा जो अकालमें उत्पन्न हुआ
है वह त्यागने योग्य है ॥ २६ ॥

सतीलो वास्तुकश्चुच्छु चिह्नीमूलकपोतिका ।

मण्डूकपर्णीजीवन्ती शाकवर्गे प्रशस्यते ॥ २७ ॥

सतीला वास्तुक (कलाय, बधुआ) शिरिआरी (चिह)
चिह्नी मूल मण्डूकपर्णी और जीवन्ती यह शाक वर्गमें अच्छी
कही है ॥ २७ ॥

धान्येषु मांसिषु फलेषु चैव शाकेषु चानुक्तमिहाप्रमेयात् ॥

आस्वादतो भूतगुणैर्गृहीत्वा तदादिशेद्भव्य मनस्वदुद्धिः २८

धान्य मांस फल शाक आदिका जो प्रयोग इसमें नहीं कहा है उसको स्वाद और भूतगण अर्थात् रस और शीतोष्णादिगुणोंको जानकर बुद्धिमान उसको प्रयोग करे ॥ २८ ॥

शाकं हिनस्तिवपुरस्थि निहन्तिनेत्रम् ।

वर्णं विनाशयति शुक्रमथासृजञ्च ॥

ओजः क्षयं प्रकुरुते पलितन्त्वकाले ।

हन्तिस्मृतिं गतिमिति प्रवदन्ति तज्ज्ञाः ॥ २९ ॥

शाक शरीरको नष्ट करता है हड्डीको जीर्ण करतानेत्रोंको नष्ट करता है वर्णका नाश करता तथा वीर्यको रुधिरको नष्ट करता है बलका क्षय करता अकालमें बाल पकाता स्मृतिगतिको नष्ट करता है ऐसा उस बातोंके जाननेवाले कहते हैं ॥ २९ ॥

शाकेषु सर्वे निवसन्ति रोगा रोगो हि देहस्य विनाशहेतुः ।

तस्माद्बुधैः शाकविवर्जनं हि कार्यं तथाम्लेषु स एव दोषः ३०
इति शाकवर्गः ।

शाकमें सम्पूर्ण रोग निवास करते हैं और रोगही देहके नाश करनेका कारण है इसकारण बुद्धि मानोको शाकका सेवन नहीं करना चाहिये और यही दोष खटार्इमें भी होते हैं ॥ ३० ॥

इति शाकवर्गः ।

✓ सैन्धवं दीपनं हृद्यं चक्षुष्यं रोचनं लघु ।

स्निग्धं वृष्यञ्च मधुरं शीतं दोषघ्नमुत्तमम् ॥ १ ॥

सैन्धादीपन है हृदयको हितकारी चक्षुको हितकारी रुचिकारक और लघु है स्निग्ध वीर्यकारक मधुर शीतल और दोष का दूर करनेवाला है ॥ १ ॥

सामुद्रं मधुरं पाकेनात्युष्णमविदाहि च ।

भेदनं स्निग्धमीषञ्च शूलघ्नं नातिपित्तलम् ॥ २ ॥

समुद्रलवण पाकमें मधुर न बहुत गरम और न विदाहि है भेदन कुष्ठेक स्निग्ध शूल नाशक और बहुत पित्त कारक नहीं है २

विडं सक्षारतीक्ष्णोष्णं सूक्ष्मं दीपनरोचनम् ॥

शूलहृद्रोगशमनं रुक्षं वातानुलोमनम् ॥ ३ ॥

विरिया सौचरलो न क्षार सहित तीक्ष्ण सूक्ष्म दीपन और रुचिकारक है शूल हरनेवाला रोगका शान्त करनेवाला रुखा और वातका अनुलोम करनेवाला है ॥ ३ ॥

सौवर्चलन्तु वीर्योष्णं विषदं कटुकं लघु ।

गुल्मशूलविबंधघ्नं हृद्यं सुरभिदीपनम् ॥ ४ ॥

सौवर्चल कालानोनवीर्यमें उष्ण विषदायक कटु और लघु होता है गुल्म और शूल को नाश करने वाला है हृदयको हितकारी सुरभि और दीप्तिका करनेवाला है ॥ ४ ॥

सौवर्चलगुणाः कुष्णालवणे गन्धवर्जिताः ॥ ५ ॥

सौवर्चलके गुणमें इतना अन्तर है कि कालेनमकमें गंध नहीं होती है ॥ ५ ॥

सतिक्तं कटुसक्षारं तीक्ष्णमुत्क्रोदिचौद्रिदम् ॥ ६ ॥

औद्रिद लवण तीक्ष्ण उत्क्रोदि क्षारयुक्त कटु और कड़वा है ६

रौमकं तीक्ष्णमुष्णञ्च व्यवायि कटुपाकिच ।

वातघ्नं लघुविष्यन्दि सूक्ष्मं विडभेदि मूत्रलम् ॥ ७ ॥

रोमक नदीमें होनेवाला नमक तीक्ष्ण उष्ण व्यवायि तथा कटु पाकी होता है वात नाशक लघुविष्यन्दि सूक्ष्म मल भेदी और अत्यन्त मूत्रका लानेवाला है ॥ ७ ॥

दीपनं पाचनं भेदि लवणं गुडिकाद्वयम् ।

कफवातकृमिघ्नं च लेखनं पित्तकोपनम् ॥ ८ ॥

गुडिका लवण दीपन पाचन और भेदी होता है कफ वात कृमिका नाश करनेवाला लेखन और पित्तका कोप करने वाला है ८

क्षारास्तु दीपनाः सर्वे रक्तपित्तकराः सराः ।

गुल्मांशग्रहणीदोषशर्कराश्मविनाशनाः ॥ ९ ॥

सम्पूर्णक्षारदीपन रक्तपित्त करनेवाले सारक हैं गुल्म अंश ग्रहणी दोष शर्करा और पथरी शर्करारोगके नाश करनेवाले हैं ९

क्षेयौ वह्निसमौ क्षारौ सर्जिकायवशुकजौ ।

शुकश्लेष्म विबन्धाशौ गुल्मप्लीहविनाशनौ ॥ १० ॥

जवाखार और सजीखार अतिके समान जात्रे यह वीर्य और श्लेष्मका बंधन करनेवाले अर्श गुल्म और प्लीह रोगके नाशक हैं ॥ १० ॥

अग्निदीप्तिकरस्तीक्ष्णष्टूष्णक्षार उच्यते ॥ ११ ॥

टंकण क्षार अग्निका दीप्त करनेवाला है ॥ ११ ॥

आर्द्रकं रोचनं हृद्यं कटूष्णं वृष्यमेव च ।

कफानिलहरं स्वर्ग्यं विबन्धानाह शूलनुत् ॥ १२ ॥

अदरख रुचिकारक हृदयको हितकारी कटु उष्ण वीर्यवर्द्धक कफवातका हरनेवाला स्वर करने वाला विबन्ध अनाह और शूल रोगका दूर करने वाला है ॥ १२ ॥

शुण्ठी तु कफवातघ्नी सस्नेहा लघुदीपनी ।

वृष्योष्णा रोचनी हृद्या विपाके मधुराकटुः ॥ १३ ॥

सोंठ कफ और वातकी हरनेवाली स्नेहयुक्त लघु और दीप्ति करने वाली है वीर्यकारक गरम रुचिकारक हृदयको हितकारक पाकमें मधुर और कटु है ॥ १३ ॥

पिप्पल्याद्रास्वादुशीतागुर्वी श्लेष्मप्रकोपणी ॥ १४ ॥

पिप्पली गीली स्वादु शीतल भारी श्लेष्माको कोप करती है १४

साशुष्का मधुरापाके वृष्या पित्तप्रसादनी ।

स्निग्धोष्णा दीपनी वातश्लेष्मनुच्छासनाशिनी ॥ १५ ॥

और सूखी रुई पाकमें मधुर त्रलकारक पित्तकी करनेवाली स्निग्ध उष्ण दीप्तिकारक वात श्लेष्म और अनुच्छासकी नाश करनेवाली है ॥ १५ ॥

मरिचं लघुतीक्ष्णोष्णं रुक्षरोचनदोषनम् ।

रसेपाके च कटुकं कफघ्नं पित्तकोपनम् ॥ १६ ॥

सूखी काली मिर्च लघु तीक्ष्ण उष्ण रुखी रुचि और दीप्ति-कारक है, रसपाकमें कटु, कफनाशक पित्तका कोप करनेवाली है १६

स्वादुपाकयाद्रमरिचं गुरु श्लेष्मप्रकोपिच ॥ १७ ॥

नात्युष्णं नातिशीतञ्च वीर्य्यतोमरिचं सितम् ॥

मीली मिर्च पाकमें स्वादु, भारी कफका कोष करतीहै ॥ १७ ॥

गुणवन्मरिचेभ्यश्च चक्षुष्यश्च विशेषतः ॥ १८ ॥

श्वेत मिर्च वीर्यसे न गरमहै न ठंडी यह गुणयुक्त विशेष करके घृतादिके साथ नेत्रोंको हितकारकहै ॥ १८ ॥

हिंमुतीक्ष्णं कटुरसं शूलाजीर्णविबन्धनुत् ।

लघूष्णं पाचनं स्निग्धं दीपनं कफवातजित् ॥ १९ ॥

हींग तीक्ष्णहै, रसमें कटु, शूल अजीर्ण विबन्ध रोगको दूर करतीहै, लघु उष्ण पाचन स्निग्ध दीपन कफ और वातकी जीतनेवालीहै ॥ १९ ॥

जीरकं रुचिकृत्सर्वं गन्धाढ्यं कफवातजित् ।

तीक्ष्णोष्णं कटुकं पाके कटुपित्ताग्निवर्द्धनम् ॥ २० ॥

जीरा रुचिकारक, सुगन्धिवान वात कफका जीतनेवालाहै, तीक्ष्ण उष्ण पाकमें कटु पित्त अग्निका बढ़ानेवालाहै ॥ २० ॥

यमानी कृष्णजीरश्च ज्ञेयाजीरकवद्गुणैः ॥ २१ ॥

अजवायन और कालाजीरा यह भी जीरेके समान गुणमेंहैं २१

धन्याकं कासतृछर्दिशमनं चक्षुषोर्हितम् ।

कपायतिकं मधुरं हृद्यं रोचनदीपनम् ॥ २२ ॥

धनियां खांसी प्यास छर्दिका शान्त करनेवाली नेत्रोंको हित-कारकहै कसेली तीखी मधुर हृदयको हितकारक रुचिकारक दीपनहै ॥ २२ ॥

लशुनः क्षारमधुरः पत्रे मधुरपिच्छलः ।

मध्येकन्देतु तीक्ष्णोष्णः कटुपाकरसः सरः ।

हृद्यः केश्योगुरुर्वृष्यः स्निग्धो दीपनपाचनः ।

भग्नसन्धानकृद्वल्यो रक्तपित्तप्रकोपणः ॥

किलासकुष्ठगुल्मार्शो मेहकृमिकफानिलान् ।

सहिकापीनसश्वासकासान्दहन्ति रसायनः ॥ २३ ॥

लहसुन क्षारयुक्त मधुर है, पत्ते मधुर और पिच्छलहैं, मध्यमें उसका कन्द तीक्ष्ण और उष्ण पाकमें कटु रस और सारकहै, हृदय और केशको हितकारी, बलदायक स्निग्ध दीपन पाचनहै टूटे अवयवको जोड़नेवाला, बलकारक, रक्तपित्तका कोप करनेवाला, किलास कुष्ठ गुल्म अर्श प्रमेह कृमि कफ वात रोग हिचकी पीनस श्वास कास सबका दूर करनेवाला रसायनहै ॥ २३ ॥

पलाण्डुर्मधुरोवृष्यः कटुः स्निग्धोनिलापहः ।

बल्यः पित्ताविरोधी च कफकृद्रोचनोगुरुः ॥ २४ ॥

पलाण्डु (न्याज) मधुर मलकारक कटु स्निग्ध वात नाशक बलकारक पित्तका अविरोधी कफ करनेवाला रुचिकारक गुरुहै ॥ २४ ॥

ग्राहीगृध्ननकस्तीक्ष्णो ग्रहण्यर्शोविकारनुत् ॥ २५ ॥

इति लवणादिवर्गः ।

गृध्नन (गाजर) ग्राही तीक्ष्ण ग्रहणी और अर्शका विकार दूर करता है ॥ २५ ॥

इति लवणादिवर्गः ।

कपायानुरसंयातिपित्तलंदाडिमंस्मृतम् ।

दीपनीयरुचिकरं हृद्यं वचोविवन्धनम् ॥ १ ॥

दाडिमी कसेली है बहुत पित्त कारक नहीं है दीपन रुचिकारक हृदयको हितकारक विष्टाकी बांधने वाली है ॥ १ ॥

द्विविधंतत्तुविज्ञेयं मधुरश्चाम्लमेव च ।

त्रिदोषघ्नन्तुमधुरमम्लं वातकफापहम् ॥ २ ॥

यह अम्ल और मधुर दो प्रकारकी है मधुर त्रिदोषकी दूर करने वाली अम्ल (खट्टी) वात और कफकी दूर करनेवाली है ॥ २ ॥

प्राचीनामलकश्चैवदोषघ्नं गरहारि च ॥ ३ ॥

पुराना पानी आमला दोषनाशक तथा विष हरनेवाला है ॥ ३ ॥

कर्कन्धुकोलबदरमामं पित्तकफावहम् ।

पक्वं पित्ता निलहरं स्निग्धं समधुरंसरम् ॥ ४ ॥

कर्कन्धु (बेरी) कोल (बेर) बदर (बेर) यह कच्चा कफ और पित्तका करनेवाला है पका हुआ पित्त बातका हरने वाला स्निग्ध मधुर सारक है ॥ ४ ॥

तच्छुष्कं कफवातघ्नं नचपित्ते विरुध्यते ।

पुराणं नृद्रप्रशमनं श्रमघ्नं लघुदीपनम् ॥ ५ ॥

सूखा हुआ कफ वातका हरने वाला पित्तका विरोधी नहीं है पुराने प्यासको शान्त करनेवाले श्रम नाशक लघु और दीपन है

सौवीरं बदरं स्निग्धं मधुरं वातपित्तजित् ॥ ६ ॥

सौवीर देवाका बेर बहुत स्निग्ध मधुर वात और पित्तका जीतने वाला है ॥ ६ ॥

आम्रं बालं रक्तपित्तकरं मध्यन्तुपित्तलम् ।

पक्वं वर्णकरं रुच्यं मांसशुक्रबलप्रदम् ॥

पित्ताविरोधिवातघ्नं हृद्यं गुर्वनुलोमनम् ॥ ७ ॥

कच्चा आम रक्तपित्त करने वाला है मध्यम पित्त करने वाला पक्का वर्ण करने वाला रुचिकारक मांस शुक्र और बलका करने वाला है पित्तका अविरोधी वात नाशक हृदयको हितकारी भारी अनुलोमकारक है ॥ ७ ॥

आम्रपेषी कषायाम्लाभेदनी कफवातजित् ॥ ८ ॥

आमकी पेषी अमोटी कसैली वातकारक भेदिनी कफवातकी जीतनेवाली है ॥ ८ ॥

आम्रातर्कं तर्पणञ्च बल्यं मधुरबृंहणम् ।

स्नेहनं श्लेष्मलं शीतं वृष्यं विष्टभ्यर्जीर्यति ॥ ९ ॥

अंबाहा तृप्तिकारक बलवर्द्धक मधुर और बृंहण है स्नेहकारक श्लेष्माकारक ठंडा बलकारक और देरमें जीर्ण होने वाला है ॥ ९ ॥

कपित्थमांसं कण्ठघ्नं दशघ्नं ग्राहि वातलम् ।
 मधुराम्लकपायत्वात्सौगन्ध्याच्चरुचिप्रदम् ।
 तदेवसिद्धं दोषघ्नं विषघ्नं ग्राहिगुर्वपि ॥ २६ ॥

कैथाकागूदा कंठनाशक विषनाशक ग्राही और वातका करनेवाला है कसेला होनेसे मधुर और अम्ल है और सुगन्धि होनेसे रुचिकारक है और वही सिद्ध हुआ दोषनाशक विषनाशक ग्राहि और गुरु है ॥ २६ ॥

जाम्बवं वातलं ग्राहि रूक्षं पित्तकफापहम् ॥ २७ ॥

जम्बू वात कर्ता ग्राही रूखा पित्त तथा कफको दूर करे है २७

तिन्दुकं तुवरं स्वादु गुरुपित्तकफापहम् ॥ २८ ॥

तिन्दुक (तेंदू) कपेला स्वादु भारी पित्त और कफको दूर करनेवाला है ॥ २८ ॥

स्निग्धं स्वादुकपायञ्च राजादनफलंगुरु ॥ २९ ॥

खजूरकी समान फल (राजादन) स्निग्ध स्वादु कसेला और भारी है ॥ २९ ॥

कपायमधुरं रूक्षं तोदनं कफवातजित् ।

अम्लोष्णं लघुसंग्राहि स्निग्धं पित्ताग्निवर्द्धनम् ॥ ३० ॥

तोदन * (वाममियफल) मधुर रूखा कफ और वातका जीतने वाला, खट्टा उष्ण हलका संग्राही, चिकना पित्त और अग्निका बढ़ानेवाला है ॥ ३० ॥

अनुपाकिफलं स्वादु वातपित्त विनाशनम् ॥ ३१ ॥

अनुपाकि (अनुपा) फल स्वादु वात और पित्तका नाश करनेवाला है ॥ ३१ ॥

क्षीरिवृक्षफलं विद्याद्वरुविष्टम्भि शीतलम् ।

कपायमधुरं साम्लं नातिमारुतकोपनम् ॥ ३२ ॥

दूधवाले वृक्ष यह गूलर पीपल पाकर आदिके फल भारी विष्टम्भकारक और शीतल हैं, फसेले मधुर अम्ल तथा वातका कोप करनेवाले नहीं हैं ॥ ३२ ॥

वाकुलं मधुरं स्निग्धं कपायं विपदञ्चतत् ।

स्थिरीकरञ्चदन्तानां संग्राहि फलमिष्यते ॥ ३३ ॥

वाकुल (मौलसिरी) मीठा चिकना कसेला विष्टम्भी शीतलक
सेला विपदायक और शीतल, दांतोंका स्थिर करनेवाला और
फल इसका ग्राहि है ॥ ३३ ॥

परूपकं समधुरं कपायानुरसंलघु ।

वातघ्नं पित्तजननमत्पम्लं तदुदाहृतम् ॥ ३४ ॥

कच्चा फालसा मधुर कसेला रसयुक्त और हलका है वातहारक
पित्तका उत्पन्न करनेवाला और अधिक खट्टा है ॥ ३४ ॥

पक्वं समधुरं तच्च वातपित्तनिवर्हेणम् ॥ ३५ ॥

और पक्का फालसा मधुर वात और पित्तका दूर करनेवाला है ॥ ३५ ॥

कफानिलहरं तीक्ष्णं स्निग्धं संग्राहिदीपनम् ।

कटुतिक्तकपायोष्णं बालविल्वमुदाहृतम् ॥

तदेवविद्यात्संपक्वं मधुरानुरसं गुरुः ।

विदाहिविष्टम्भकरं दोषकृत् पूतिमारुतम् ॥ ३६ ॥

कच्चाविल कटु तीक्षा कसेला कफ और वातका हरनेवाला
तीक्ष्ण चिकना संग्राही दीपन कहा है और यही पक्का दुआ मधुर
रस युक्त गुरु है विदाही विष्टम्भ का करनेवाला दोषका करने-
वाला वात शोधक है ॥ ३६ ॥

द्राक्षातु मधुरास्निग्धाशीतावृष्यानुलोमनी ॥

रक्तपित्तज्वरश्वासतृष्णादाहक्षयापहा ॥ ३७ ॥

दाख मधुर स्निग्ध शीतल बलदायक अनुलोम करनेवाली
है रक्त पित्त ज्वर श्वास तृष्णा दाह क्षयकी हरनेवाली है ॥ ३७ ॥

गोस्तनी या गुरुवृष्या द्राक्षासा वातपित्तनुत् ॥ ३८ ॥

गोस्तनी (भूरी) दाख मारी बलदायक वातपित्तको दूर
करनेवाली है ॥ ३८ ॥

केश्यं रसायनं मेघ्यं काश्मर्याः फलमुच्यते ॥ ३९ ॥

वालोंको हितकारक रसायन बुद्धि को बढ़ाने वाला (कम्भारी) का फल कहा है ॥ ३९ ॥

खर्जूरं मधुरं वृष्यं स्निग्धं शोणितपित्तजित् ।

क्षतक्षयापहं हृद्यं शीतलं तर्पणं गुरु ॥ ४० ॥

खजूर मधुर वीर्यवर्द्धक स्निग्ध रुचिर और पित्तको जीतने वाला है क्षत क्षयरोग को दूर करने वाला हृदयको हितकारक शीतल तृप्ति कारक और भारी है ॥ ४० ॥

मधूकस्यफलं पक्वं वातपित्तप्रणाशनम् ।

तस्य पुष्पं वृंहणीयमहृद्यं गुरुशीतलम् ॥ ४१ ॥

मधुपका पक्का फल वात रक्त विकारका दूर करनेवाला है उसका पुष्प मद कारक हृदयको अहितकारक भारी और शीतल है ॥ ४१ ॥

नारिकेलं गुरुस्निग्धं पित्तघ्नं स्वादुशीतलम् ॥

बलमांसकरंहृद्यं वृंहणं वस्तिशोधनम् ॥ ४२ ॥

नारियल गुरु चिकना पित्तनाशक स्वादुशीतल बलमांस करनेवाला हृदयको हितकारी वाजीकर वस्ति शोधक है ॥ ४२ ॥

तालं स्वादुरसं पक्वं गुरु पित्तविनाशनम् ।

तद्वीजं स्वादुपाकन्तु मूत्रलं वातपित्तजित् ॥ ४३ ॥

पका ताल फल स्वादु रसयुक्त भारी पित्त नाशक है उसका बीज पाकमें स्वादु मूत्रका अधिक करनेवाला वात पित्तका जीतनेवाला है ॥ ४३ ॥

कदलं मधुरं हृद्यं कपायं नातिशीतलम् ।

वातपित्तहरं रुच्यं वृष्यं श्लेष्मकरं गुरु ॥ ४४ ॥

केलेकी फली मधुर हृदयको हितकारक कसेली है बहुत ठंडी नहीं है वात पित्तकी हरनेवाली रुचिकारक वीर्य वर्द्धक कफ कारक और भारी है ॥ ४४ ॥

श्लेष्मलं मधुरं शीतं श्लेष्मातकफलं गुरु ।

पनसं सकपायन्तु स्निग्धं स्वादुरसं गुरु ॥ ४५ ॥

ल्लेसवेका फल कफकारक मधुर शीतल और भारीहै पनस
(कटहल) कसेला चिकनारसमें स्वादु और भारीहै ॥ ४५ ॥

पथ्या पञ्चरसायुष्या चक्षुष्याऽलवणा सरा ।

मेध्योष्णादीपनी दोषशोथकुष्ठज्वरापहा ॥ ४६ ॥

हरड़ पांचों रसोंसे युक्त चक्षुको हितकारी आयुकी देनेवाली
लवण रससे रहित सारकहै बुद्धिको बढ़ानेवाली गरम दीपन
दोष शोथ कुष्ठ और ज्वरकी हरनेवालीहै ॥ ४६ ॥

धात्रीतद्वद्विशेषेण वृष्याशतिव धीर्यतः ।

हन्तिवातं तदम्लत्वात् पित्तं माधुर्य्यशैत्यतः ।

कफं कटुकपायत्वात् फलेभ्योऽप्यधिकञ्च तत् ॥ ४७ ॥

इसीप्रकार आमले विशेष करके धीर्यकारक और शीतलहै
अम्ल होनेसे वातको हरणकरतेहैं मधुर होनेसे शीत पित्तको
हरतेहैं कटु और कसेला होनेसे कफको हरताहै इसके फलमें
अधिक गुणहैं ॥ ४७ ॥

अक्षभेदनरूक्षोष्णवैश्वर्य्य किमिनुत्कटु ।

चक्षुष्यं स्वादुपाकञ्च कपायं कफपित्तनुत् ॥ ४८ ॥

अक्ष (बहेड़ा) भेदनहै रूखा गरम वैश्वर्य्य कृमिनाशक कटुहै
नेत्रोंको हितकारक पाकमें स्वादु कसेला कफ और पित्तका
नाशकहै ॥ ४८ ॥

पथ्यामजातु चक्षुष्यो वातपित्तहरो गुरुः ॥ ४९ ॥

हरड़की गुठली नेत्रोंको हितकारक वात पित्त हरने वाली
भारी है ॥ ४९ ॥

वैभीतकोमदकरः कफमारुतनाशनः ॥ ५० ॥

बहेड़ा मद कारक कफ और वातका नाश करने वाला है ५०

कोलमजातु मधुरः कपायः पित्तनाशनः ।

तृष्णाछर्द्यनिलघ्नश्च धात्रीमजापि तद्वृणः ॥ ५१ ॥

बहेड़ेकी भींगी मधुर कसेली पित्त नाशक तृष्णा छर्दि वात
नाशक है यही गुण आमले की गुठलीमेंहैं ॥ ५१ ॥

पियालमजामधुरोवृष्यः पित्तानिलापहः ॥ ५२ ॥

पियाल (चिरोंजी की गुठली) मींग मधुर बलकारक पित्त वात हरनेवाली है ॥ ५२ ॥

यस्ययस्यफलस्येह वीर्यं भवति यादृशम् ।

तस्यतस्यैववीर्येण मज्जानमपिनिर्दिशेत् ॥ ५३ ॥

जिस जिस वृक्षका फल जैसा होता है उसी उसी फलकी मींगमें भी वैसा ही गुण होता है ॥ ५३ ॥

भल्लातकास्थ्यग्निसमं त्वद्गमांसं स्वादुशीतलम् ॥ ५४ ॥

भिलावेंकी गुठली अग्निकी समान छाल और गूदा स्वादु और शीतल है ॥ ५४ ॥

करञ्जकिंशुकारिष्ट फलं जन्तुप्रमेहनुत् ।

रूक्षोष्णं कटुकं पाके लघुवातकफापहम् ॥ ५५ ॥

करंजुआ टेसू नीमका फल जन्तुओंका प्रमेह दूर करते हैं रूखे उष्णपाकमें कटु लघुवात और कफको दूर करनेवाले हैं ॥ ५५ ॥

तिक्तमीषद्विपहितं विडङ्गं क्रिमिनाशनम् ॥ ५६ ॥

वायविडङ्ग सीखी कुछविषमें हितकारी कृमिका नाश करती है ॥ ५६ ॥

फलेषुपरिपक्वं यद्गुणवत्तदुदाहृतम् ।

विल्वादन्यत्र तद्गुणोत्तरम् ॥ ५७ ॥

जो पके फल हैं वेही गुणदायक हैं वेलको छोड़कर ऐसा जाना वेल अपक (जो पकाहु आनही) वही श्रेष्ठ है ॥ ५७ ॥

व्याधितं क्रिमिजुष्टं पाकातीतमकालजम् ।

वर्जनीयं फलं सर्वमप्ययागतमेव च ॥ ५८ ॥

इति फलवर्गः ।

व्याधि युक्त कीड़े पड़ा हुआ जिसका पाक होचुका है जो अकालमें उत्पन्न हुआ है जो पका नहीं है इसप्रकारका फल खाना न चाहिये ॥ ५८ ॥

इति फलवर्गः ।

धारं कारन्तु तौषारं हैमं खाम्बु चतुर्विधम् ॥ १ ॥

धाराका करका * शिशिरमें होनेवाला हिमका होनेवाला (संहतिमान) आकाशका जलचार प्रकारका है ॥ १ ॥

धारन्त्वत्त्रिधाप्रोक्तं गाङ्गं सामुद्रमेव च ॥ २ ॥

उसमें धाराका जल दो प्रकारका है गंगाका जल और समुद्रका जल है और चरकमें जो लिखा है कि (जलमेक विधं सर्वं पतत्येन्द्रनभस्तलात्) कि सब जल एकही प्रकारका होता है यह सत्य है, तथापि अन्तरिक्षका जल धूली मल विष लूतादि सम्बन्ध से दूषित हो जाता है, तो सर्वोष और निर्दोष दो प्रकारका है गंगाका निर्दोष और सागरका स दोष है, गंगाशब्दसे अन्य नदी भी जाना और सागर शब्दसे जलाशयादिभी जाना, सो आश्विनमासके बिना समुद्रका जलपान करना नहीं चाहिये ॥ २ ॥

येनाभिवृष्टममलं शाल्यन्नं राजतस्थितम् ।

अस्त्रिन्न मविवर्णं वा तत्पेयं गाङ्गमन्यथा ।

सामुद्रं तन्न पातव्यं मासादाश्वयुजादिना ॥ ३ ॥

कारण कि अगस्त्यके उदय से लूतादि दोष दूर हो जाता है जिस जल से सींचे हुए शाली धान्य रजतपात्रमें स्थित क्लेद रहित निर्मल वर्णके रहें वह जल पान करना चाहिये वही गंगाका जल जाना, वही पानके योग्य है और स्नान अवगाहनके योग्य है, इससे विपरीत समुद्र का जल जाना, वह पानके योग्य नहीं है ॥ ३ ॥

खाम्बुगङ्गाभवं तृद्यं ह्यादिबुद्धिप्रबोधनम् ।

तन्व्यक्तरसं सृष्टं शीतं लघ्वमृतोपमम् ॥

जीवनं तर्पणञ्चैव तद्वन्नाभसधूमिगम् ॥ ४ ॥

आकाश से गिरा हुआ गंगा जल हृदयको हितकारक आनन्ददायक बुद्धिका प्रबोध करने वाला है, आस्वाद सुखका देने वाला, शीतल हलका अमृतकी समान है, जीवन और तृप्तिका

* दिव्य पवन बिजलीके योगसे तादित हो जो जल आकाश से ओले वनफर गिरता है उसे फरफा कहते हैं.

देने वाला है, इसी प्रकार अन्तरिक्ष से भूमिमें आया हुआ अर्थात् आकाश गुण सम्यन्ध वाली भूमिका जल है ॥ ४ ॥

कारकं तोयममृतं नैहारं सर्वदोषकृत् ।

अवश्यायभवं रूक्षं वातलं लघुशीतलम् ॥

दाहामृक् पित्ततृच्छर्दि सकृथिस्तम्भादिपूजितम् ॥ ५ ॥

करका आँले सम्यन्धी जल अमृत रूप है, निहारका जल सब दोष का दूर करने वाला है और संहती भूत हुए हिमका जल रूखा वातकारक शीतल है दाह रुधिर पित्त तृष्णा छर्दि सकृथि स्तम्भादि में हितकारक है ॥ ५ ॥

नादेयं वातलं रूक्षं दीपनं लघुलेखनम् ॥ ६ ॥

नदीका जल वात कारक रूखा दीपन हलका और लेखन है ६

नदेऽभिप्यन्दि मधुरं सान्द्रं गुरुकफावहम् ॥ ७ ॥

नद शोणभद्र आदिका जल अभिप्यन्दि मधुर घना भारी कफका करनेवाला है ॥ ७ ॥

सारसं तुवरं वल्यं तृष्णाघ्नं मधुरं लघु ॥ ८ ॥

स्वयं निर्मित सरोवरका जल कसेला बलकारक तृष्णा नाशक मधुर और लघु है ॥ ८ ॥

ताडागं वातलं स्वादुकपायं कटुपाकिच ॥ ९ ॥

तालावका जल वातकारक स्वादु कसेला कटुपाकी है ॥ ९ ॥

वाप्यं सक्षारकटुकं पित्तलं कफवातनुत् ॥ १० ॥

बावड़ीका जल क्षार युक्त कटु पित्तकारक कफ और वातका दूर करनेवाला है ॥ १० ॥

कौपं कफघ्नं सक्षारं पित्तलं लघुदीपनम् ॥ ११ ॥

कुपंका जल कफ नाशक सारी पित्तकारक लघु और दीपन है ११

चौडमग्निकरं रूक्षं मधुरं कफकारि च ॥ १२ ॥

नवीन कुपंका जल अग्निकारक रूखा मधुर और कफ करनेवाला है

नैर्झरं लघुपथ्यश्च दीपनं कफनाशनम् ॥ १३ ॥

झरनेका जल हलका है पथ्य है दीपन है कफनाशक है ॥ १३ ॥

औद्भिदं पित्तशमनं मधुरं न विदाहि च ॥ १४ ॥

नीचे स्थानसे ऊपरको उबलकर निकलता हुआ जल पित्तका शान्त करनेवाला मधुरहै विदाही नहींहै ॥ १४ ॥

वैकिरं लघुसक्षारं श्लेष्मलं वह्निदीपनम् ॥ १५ ॥

वालुकादि विछाकर जलके स्थानसे ग्रहण किया जल हलका क्षार युक्त श्लेष्माकारक अग्नि प्रदीप्त करनेवालाहै ॥ १५ ॥

कैदारं पालवल स्यादुविपाके गुरुदोषलम् ॥ १६ ॥

कैदार और तृणादि से आच्छादित अल्प सरोवरका जल स्वादु पाकमें भारी दोषकरनेवालाहै ॥ १६ ॥

सामुद्रं लवणं विस्त्रं सर्वदोषप्रकोपणम् ॥ १७ ॥

समुद्र का खारी जल आमगन्धी और सब दोषका कोप करने वाला है ॥ १७ ॥

आनूपं वाय्वभिष्यन्दि मधुरं पिच्छिलं गुरु ।

स्निग्धं वह्निहरं सान्द्रं जाड्यं वाय्वतो न्यथा ॥ १८ ॥

अनूप देशका जल अभिष्यन्दि मधुर चिकना और भारी है स्निग्ध अम्लिका हरने वाला सघन जांगल जल होता है ॥ १८ ॥

साधारणं वारिशीतं दीपनं मधुरं लघु ॥ १९ ॥

साधारण जल शीतल दीपन मधुर और लघु होता है ॥ १९ ॥

पश्चिमोदधिगाः शीघ्रवहायाश्चामलोदकाः ।

पथ्याः समस्तास्तानद्यो विपरीतास्ततो न्यथा ॥ २० ॥

जो नदी पश्चिमकी ओर बहती हैं पश्चिम सागरमें जाती हैं, जिनका जल निर्मल है और शीघ्र बहती हैं उन सब नदियोंका जल पथ्य है, इससे विपरीत अपथ्य है ॥ २० ॥

उपलास्फासनाक्षेप विच्छेदैः स्रेदितोदकाः ।

हिमवन्मलयोद्भूताः पथ्यास्ता एव च स्थिराः ॥

क्रिमिश्चीषदहत् कण्ठशिरोरोगान् प्रकुर्वते ॥ २१ ॥

जो जल पत्थरों के आस्फालन आक्षेप विक्षेप से स्रेदित होता है, जो हिमालय और मलया चल्के स्थान गुफासे प्राप्त हुआ

है, वे स्थिर जलभी पथ्य हैं कृमि रोग श्लीपद हृदय कण्ठ और शिरके रोगोंको करताहै ॥ २१ ॥

पारियात्रभवायाश्च विन्ध्यसह्यभवाश्चयाः ॥

शिरोहृद्भोगकुष्ठानां तादितुः श्लीपदस्य च ॥ २२ ॥

जो गुहाआदि स्थानमें होनेवाले जलहैं जो जल विन्ध्य पर्वत और सह्य पर्वतमें गुफादिमें स्थितहैं वे शिरो रोग हृदय रोग, कुष्ठ रोग और श्लीपद रोगके करनेवाले हैं ॥ २२ ॥

रक्षोघ्नं शीतलं ल्हादि ज्वरदाहविपापहम् ।

चन्द्रकान्तोद्भवं वारिपित्तघ्नं विमलं स्मृतम् ॥ २३ ॥

चन्द्रकान्त मणिके प्रभावसे युक्तजल तथा आकाशमें चन्द्र किरणसे प्राप्त हुआ जल राक्षसकी पीडा निवारण करनेवाला शीतल आनंद करनेवाला ज्वर दाह विषका दूर करनेवाला पित्तका नाशक और निर्मलहै ॥ २३ ॥

दिवार्ककिरणैर्जुष्टं जुष्टमिन्दुकरैर्निशि ।

अरुक्षमनभिष्यन्दि तत्तुल्यं गगनाम्बुना ॥ २४ ॥

जो दिनमें सूर्यकी किरणोंसे युक्तहै और रात्रिमें जितमें चन्द्रमाकी किरणें पड़तीहैं वह जल रुखा नहीं है अभिष्यन्दता रहित आकाश जलकी बराबर है ॥ २४ ॥

नारिकेलोदकं वृष्यं स्वादुस्निग्धं हिमं गुरु ।

हृद्यं पित्तपिपासाघ्नं दीपनं वस्तिशोधनम् ॥ २५ ॥

नारियलका जल वीर्य कारक स्वादु चिकना ठंडा भारीहै हृदयको हितकारक पित्त और पिपासाका नाश करनेवाला दीपन और वस्ति शोधक है ॥ २५ ॥

नारिकेलजलं जीर्णं गुरुविष्टम्भिपित्तकृत् ॥ २६ ॥

नारियलका जल जीर्णहुआ भारी विष्टम्भि और पित्तका करने वाला है ॥ २६ ॥

वालकमुकतोयन्तु तृष्णापित्तास्रजिह्वरु ॥ २७ ॥

सुगंधवाला भद्रमोथेका जल तृष्णा पित्त रक्तको जीतनेवाला और भारीहै ॥ २७ ॥

तालाम्बु पित्तजिच्छुक्रस्तन्यवृद्धिकरं गुरु ॥ २८ ॥

तालकाजल पित्तका जीतनेवाला शुक्र और दूधकी वृद्धि करनेवाला भारी है ॥ २८ ॥

मूच्छांपित्तोष्णदाहेषु विपरक्तेमदात्यये ।

श्रमकुमपरीतेषु तमकेवमयौतथा ॥

ऊर्द्धगे रक्तपित्तेतु शीतमम्भः प्रशस्यते ॥ २९ ॥

शीतल जल मूछां पित्तकोष उष्ण दाह विपरक्त मदात्यय श्रम खेद तमक (दुःख) वमन रक्तपित्तके ऊर्द्धगति होनेमें गुण कारक कहा है ॥ २९ ॥

पार्श्वशूले प्रतिश्यायेवातरोगेगलग्रहे ।

आध्मानेस्तिमितेकोष्ठे शयःशुद्धे नवज्वरे ॥

हिकार्यां स्नेहपीतेच शीताम्बुपरिवर्जयेत् ॥ ३० ॥

पसलीका दर्द पीनस वातरोग गलग्रह रोग अफरा कोष्ठ स्तम्भ तत्काल शुद्धि नवीन ज्वर हिकारी स्नेहपान इनमें शीतल जलका पीना वर्जित है ॥ ३० ॥

उष्णोदकं सदापथ्यं कासश्वास ज्वरापहम् । .

कफवातामदोषघ्नं दीपनं वस्तिशोधनम् ॥ ३१ ॥

गरम जल सदा पथ्य है कास श्वास ज्वरका हरनेवाला कफवात आम दोषका हरनेवाला दीपन वस्ति शोधन करनेवाला है ॥ ३१ ॥

शृतशीतं त्रिदोषघ्नं यदन्तर्वाष्पशीतलम् ।

शीतीकृतन्तु विष्टम्भि दुर्जरं पवनाहतम् ॥ ३२ ॥

औटाकर ठंडा किया हुआ जल त्रिदोष नाशक है जो भीतर वाफसेही शीतल किया गया है वह कोष्ठ है और जो पवन लगनेसे शीतल हुआ है वह दुर्जर और विष्टम्भि है ॥ ३२ ॥

नतत्पय्युपितं देयं कदाचिदपि जानता ।

व्यम्लीभवेत् पय्युपितं कफक्लेदि पिपासवे ॥ ३३ ॥

औटाया जल बासी किसी प्रकार सेवन करना नहीं चाहिये बासी जल बिरस होजाता है वह कफ क्लेदवाले और प्यासको अहित करी है ॥ ३३ ॥

शृतंतोयं दिवारात्रौ गुरु रात्रिशृतं दिवा ॥ ३४ ॥

दिनका पकाया जल रात्रिमें भारी होजाता है और रातका औटाया दिनमें भारी होजाता है ॥ ३४ ॥

भौमानामम्भसांप्रातः सर्व्वेषां ग्रहणं मतम् ।

तदाहि शैत्यं नैर्मल्यं तौचापां परमौगुणौ ॥ ३५ ॥

पृथ्वीके जल सब प्रकारके प्रातःकालमें ग्रहण करने श्रेष्ठ हैं उस समय वे शीतल निर्मल गुणोंमें परम श्रेष्ठ होते हैं ॥ ३५ ॥

आन्तरीक्षन्तु वर्षासु कौपमौद्भिदमेवच ।

अगस्त्योदयनैर्मल्यात् सर्व्वं शरदिशस्यते ॥

सरस्तङ्गागसम्भूतं हेमन्ते जलमिष्यते ।

कौपचौण्डे वसन्ते तु ग्रीष्मेप्राप्तवणौद्भिदे ॥

कौपं प्रावृषि सर्व्वं वा संस्कृतं वारिचेष्यते ॥ ३६ ॥

हठ (सिवारमेद) सिवार कीचड़ आदिसे युक्त जल दोषकारक है जो अत्यन्त वायुसे वर्षामें आकाशका जल ग्रहण करना चाहिये जो गंगाका हो तथा कूप और उद्विदजल ग्रहण करना अगस्त्य के उदयमें कुवारमें सब जल निर्मल होजाते हैं सरोवर और तङ्गागका जल हेमन्तमें निर्मल होकर पीनेके योग्य होता है कुण्ड और चौण्डका जल वसन्तमें और ग्रीष्ममें हितकारक और सोतका जल निर्मल पीनेके योग्य है कुण्डका वा और कहींका जल चामासेमें शुद्ध करिके पान करना चाहिये ॥ ३६ ॥

इठशैवलपंकादिसंछन्नं दोषलञ्चतत् ॥

वाय्वर्केकिरणारूपं नपेयं साधनादते ॥ ३७ ॥

आर सूर्यकी किरणोंसे तापित है वह पीना न चाहिये जब तक उसे सिद्ध न कर ले ॥ ३७ ॥

अरोचके प्रतिश्याये प्रसेकेश्वयथौ क्षये ।

मन्दाग्रायुदेरकुष्ठे ज्वरेनेत्रामयेतथा ॥

व्रणे च मधुमेहे च पानीयं मन्दमाचरेत् ॥३८॥

इति पानीयवर्गः ।

अरुचि पीनस जुकाम प्रसेक सूजन क्षय मन्दाग्नि उदर कुष्ठ
ज्वरमें नेत्ररोग व्रण मधुप्रमेह इन रोगोंमें बहुत जल कमती
पीना चाहिये ॥ ३८ ॥

इति पानीयवर्गः ।

अथ क्षीरवर्गः ।

क्षीरमष्टविधं गव्य माजमौरभ्रमाहिपे ।

कोरेणवमथौष्टश्च वाल्वं मानुषं तथा ॥ १ ॥

आठप्रकारका दूध होता है गौका बकरीका भेड़ीका भैंसका
हथनीका ऊंटनीका घोड़ीका और स्त्री (मानुषी का) यद्यपि
और जन्तुओंकेभी दूध होता है परन्तु उपयोगी होनेसे यही
वर्णन कियागया है ॥ १ ॥

क्षीरं स्वादुरसं स्निग्ध मोजस्यं धातुवर्द्धनम् ।

वातपित्तहरं वृष्यं श्लेष्मलं गुरुशीतलम् ॥ २ ॥

क्षीर स्वादु रसयुक्त स्निग्ध बल और धातुका बढ़ानेवाला वात
पित्तहरनेवाला वीर्यवर्द्धक श्लेष्मकारक भारी और शीतल है ॥ २ ॥

गोक्षीर मनमिष्यन्दि स्निग्धं स्वादु रसायनम् ।

रक्तपित्तहरं शीतं मधुरं रसपाकयोः ॥

जिवनीयं तथा वातपित्तघ्नं परमं मतम् ॥ ३ ॥

गौका दूध अनमिष्यन्दि (अस्त्रावक) स्निग्ध स्वादु और
रसायन है रक्तपित्तका हरनेवाला ठंडा रसपाकमें मधुर जीवन
का देने वाला और वात पित्तका हरने वाला है ॥ ३ ॥

छागं कपायमधुरं शीतं ग्राहिपियोलघु ।

रक्तपित्तातिसारघ्नं क्षयकासगरापहम् ॥

अजानामल्पकायत्वात् कटुतिक्तनिषेवणात् ।

नात्यम्बुपानाद्व्याध्यामात् सर्व्वव्याधिहरं पयः ॥ १ ॥

छाँगेका दूध कसेला 'मधुर' शीतल ग्राही प्रिय और लघु है, रक्तपित्त अतिसारका दूर करने वाला, क्षय और कास रोगका दूर करने वाला है जो कि बकरी अल्प शरीर वाली हैं नित्य कटु और तिक्त द्रव्यका सेवन करती हैं न बहुत जल पीती हैं और परिभ्रमके करनेसे उनका दूध सब दोषोंका हरने वाला है ॥ ४ ॥

मेपीक्षीरं गुरुस्वादु स्निग्धोष्णं कफपित्तकृत् ।

शुद्धेऽनिलेभवेत्पथ्यं सेकेचानिलशोणिते ॥ ५ ॥

मेपीका दूध भारी स्वादु स्निग्ध गरम कफ और पित्तका करने वाला अग्निमें शुद्ध करनेसे पथ्य है और वातरक्तमें सेकमें हित कारक है ॥ ५ ॥

महिषीणां गुरुतरं गव्याच्छीततरं पयः ।

स्रेहादूनमनिद्राणामत्यग्नीनां हितञ्चतत् ॥ ६ ॥

भैंसका दूध गौके दूधसे अधिक भारी है और अधिकतर शीतल है घृतमें अधिक हैं जिनको निद्रा न आती हो वा आधिक अग्नि हो उनको हित कारक है ॥ ६ ॥

हस्तिनीनांपयोवलयं गुरु स्थैर्य्यकरं वरम् ।

इषद्रूक्षोष्णलवणमौष्ट्रकं दीपनं लघु ॥

शस्तंवातकफानाहकृमिशोफोदराशंसाम् ॥ ७ ॥

हथिनीका दूध बलकारक भारी स्थिरता करने वाला श्रेष्ठ है, कुछ रुखा नोनखरा दीपन और लघु ऊँटनीका दूध होता है यह वात कफ आनाह कृमि शोफ उदर अर्श रोगमें हित कारक है ॥ ७ ॥

उष्णमेकशफंवलयं शाखावातहरंपयः ।

इषदम्लं स्वादुरूक्षं लवणानुरसं लघु ॥ ८ ॥

एक खुरवाले चौपायोंका दूध बलकारक बाहु सक्थि आदि शरीरके अवयवोंकी वातका हरनेवाला है कुछ अम्ल स्वादु रुखा लवणरस युक्त और लघु होता है ॥ ८ ॥

नाय्यास्तु मधुरंस्तन्यं कपायानुरसंहिमम् ।

नस्याश्चोतनयोः पथ्यं जीवनं लघुदीपनम् ॥ ९ ॥

स्त्रियोंका दूध मधुर कसेला रस युक्त शीतल है नस्य और नेत्रोंके तर्पणमें पथ्य जीवन दायक लघु और दीपन है ॥ ९ ॥

क्षीरसन्तालिका वृष्या स्निग्धा पित्तानिलापहा ॥ १० ॥

दूधका विकार घीर्ष बलकारक स्निग्ध पित्त और वातका हरनेवाला है ॥ १० ॥

पयोभिष्यन्दिगुर्वामं प्रायशः परिकीर्तितम् ।

तदेवोक्तं लघुतरमनभिष्यन्दि वै शृतम् ॥ ११ ॥

घिना ओटाया दूध भारी अभिष्यन्दि होता है और ओटाया हुआ अत्यन्त लघु और अनभिष्यन्दि होता है ॥ ११ ॥

वर्जयित्वा स्त्रियास्तन्यं माममेवहितद्वितम् ॥ १२ ॥

परन्तु स्त्रीका दूध ओटाना नहीं चाहिये वह कच्चाही द्वित कारक है ॥ १२ ॥

धारोष्णं गुणवत् क्षीरं विपरीतमतोन्यथा ॥ १३ ॥

इहतेमें दूधकी धार पान करना गुणकारक है उष्ण है अन्यथा इससे विपरीत गुण है ॥ १३ ॥

तदेवातिशृतं सर्वं गुरु बृंहणमुच्यते ॥ १४ ॥

अनिष्टगन्धमम्लञ्च विवर्णं विरसञ्च यत् ।

वर्ज्यं सलवणं क्षीरं यच्च विग्रथितं भवेत् ॥ १५ ॥

बहुत ओटाहुआ दूध भारी और वीर्य जनक है ॥ १४ ॥ जिसमें दुर्गन्ध आती हो खट्टा विवर्ण और विरस हो गया हो वह और नमकपड़ा दूध तथा फटाहुआ दूध खाना वर्जित है ॥ १५ ॥

दध्यम्लं मधुरं ग्राहि गुरुष्णं वातनाशनम् ।

मेदःशुक्रबलश्लेष्म पित्तरक्ताग्नि शोफकृत् ॥

रोचिष्णुश्स्तमरुचौशीतके विषमज्वरे ॥

पीनसेमूत्रकृच्छ्रे चरुक्षन्तु ग्रहणीगदे ॥ १६ ॥

दही खट्टा है मधुर है आही भारी वात का नाशक है, मेद शुक्र बल श्लेष्मा पित्तरक्त अग्नि शोफका करनेवाला है रुचि कारक है अरुचि शीत विषमज्वर पीनस मूत्रकृच्छ्रमें हित कारक है, और ग्रहणी रोगमें सूखा हितकारक है ॥ १६ ॥

गन्धं दधिचमंगल्यं वातघ्नं सुचिरोचकम् ।

स्निग्धं विपाके मधुरं दीपनं बलवर्द्धनम् ॥ १७ ॥

गौका दधि मंगलदायक वात नाशक पवित्र और रोचक है स्निग्ध पाकमें मधुर दीपन और बलवर्द्धक है ॥ १७ ॥

दध्याजं कफापित्तघ्नं लघु वातक्षयापहम् ।

दुर्नामश्वासकासेषु हितमग्रेष्व दीपनम् ॥

विपाकेमधुरं वृष्यं रक्तपित्तप्रसादनम् ।

बलाश्वर्द्धनं स्निग्धं विशेषादधि माहिषम् ॥ १८ ॥

अजा बकरीका दही कफ पित्तका नाशक हलका वात और क्षय रोगका नाशक है, बवासीर स्वास कास रोग और अग्नि दीपनमें हित कारक है विपाकमें मधुर घीर्य वर्द्धकरक्तपित्तका प्रसन्न करने वाला, बल वर्द्धक, स्निग्ध विशेष करके माहिषका दधि है ॥ १८ ॥

फोपनं कफवातानां दुर्नाम्नाश्चाविकं दधि ॥ १९ ॥

भेड कादही कफ वातका फोप करने वाला तथा अर्श रोगका नाशक है, ॥ १९ ॥

दीपनीयमचक्षुष्यं वातलं वाडवं दधि ।

रूक्षमुष्णकपायश्च कफमूत्रापहञ्चतत् ॥ २० ॥

घोड़ीका दही दीपन है चक्षुको अहित कारक है, तथा वात कारक है सूखा गरम कसेला कफ और मूत्रका हरनेवाला है २०

स्निग्धं विपाके मधुरं बल्यं सन्तर्पणं गुरु ।

चक्षुष्यमग्रंचदोषघ्नं दधिनाय्यां गुणोत्तरम् ॥ २१ ॥

स्त्रीके दूधका दहीविपाकमें मधुर बल कारक तृप्तिकारक भारी
नेत्रोंको हितकारीहै और गुणोंमें श्रेष्ठहै ॥ २१ ॥

लघुपाके बलाशघ्नं वीर्योष्णं पंक्तिनाशनम् ।

कपायानुरसंनाग्यादधिवर्चोविवन्धनम् ॥ २२ ॥

पाकमें लघु बलनाशक वीर्यमें उष्ण पाक नाशक कसैला रसमें
मलबन्धक हथिनीका दही होताहै ॥ २२ ॥

दर्धान्युक्तानियानीह गव्यादीनि पृथक् पृथक् ॥

विज्ञेयमेवसर्वेषु गव्यमेवगुणोत्तरम् ॥ २३ ॥

जो कि गौके दही पृथक् पृथक् कहेहैं इस प्रकार सबके दहीमें
उत्तरोत्तर गुणजानना ॥ २३ ॥

वातघ्नं कफकृत्स्निग्धं बृंहणं नातिपित्तकृत् ।

कुप्यान्नक्तभिलासश्च दधियव सुपरिधुतम् ॥ २४ ॥

पाकादि कर दहीमें अच्छी तरह मिलानेसे भोजनमें इच्छा
करताहै वात नाशक कफ कारक स्निग्ध वीर्य कारक और
अत्यन्त पित्त कारक नहीं है ॥ २४ ॥

शृतक्षीरातु यज्जातं गुणवदधितत् स्मृतम् ।

वातपित्तहर रुच्यं धात्वग्निबलवर्द्धनम् ॥ २५ ॥

जो औंटे हुये दूधसे उत्पन्न दहीहै वह गुण कारक होताहै
वह वात पित्तका हरनेवाला रुचिकारक धातु और अग्निका
बल बढ़ाने वालाहै ॥ २५ ॥

दधित्वसारं रूक्षञ्चादिविष्टम्भिवातलम् ।

दीपनीयं लघुतरंसकपायं रुचिप्रदम् ॥ २६ ॥

धी रहित दही रूखा ग्राही विष्टम्भकारक वात वर्द्धकहै दीपन
अत्यन्त लघु कसैला और रुचिका करनेवालाहै ॥ २६ ॥

दध्नः सरोशुरुर्वृष्योविज्ञेयोऽनिठनाशनः ।

वन्हेर्विधमनश्चापिकफशुक्रविवर्द्धनः ॥ २७ ॥

दहीकी मलाई भारी स्निग्ध वीर्य वर्द्धक वात नाशक अग्नि
मन्द करनेवाली कफ और वीर्यकी बढ़ानेवालीहै ॥ २७ ॥

तक्रं लघुकपायाम्लं दीपनं कफवातजित् ।

शोथोदराशौग्रहणीदोषमूत्रग्रहारुचि

प्लीहगुल्मघृतव्यापद्रुपाण्ड्वामयान् जयेत् ॥ २८ ॥

मट्ठा लघु कसेला खट्टा दीपन कफ और वातका जीतने वाला
सृजन उदर रोग बवासीर संग्रहणी मूत्रग्रह अरुचि प्लीहागुल्म
स्नेह व्यापत विष पाण्डुरोग इनको दूर करता है ॥ २८ ॥

मस्तुतद्वत् सरंम्रोतः शोधिविष्टम्भजिल्लघु ॥ २९ ॥

इसी प्रकार दधिमस्तु (दहीका पानी) सारक लोतोंको
शोधने वाला विष्टम्भ जित् लघु है ॥ २९ ॥

ससरं निर्जलं घोलं तक्रं पादजलान्वितम् ।

अद्धोदकमुदश्चित्स्यान्मथितं सरवर्जितम् ॥ ३० ॥

सर (मलाई) युक्त निर्जल मट्ठा घोल कहाता है, चौथाई
जलमिला तक्र कहाता है आधा जल जिसमें मिलाही वह उद-
श्चित और मथा हुआ जल रहित अन्मथित कहाता है ॥ ३० ॥

घोलं पित्तानिलहरं तक्रं दोषत्रयापहम् ।

उदश्चिच्छेष्मलश्चैनमथितं कफपित्तनुत् ॥ ३१ ॥

घोल पित्त वातका हरने वाला है, तक्र त्रिदोषका हरने वाला
है उदश्चित् कफ करनेवाला और मथित कफ पित्तका दूर करने
वाला है ॥ ३१ ॥

वातेम्लं सैन्धवोपेतं पित्तेस्वादुसशर्करम् ।

पिवेत्तक्रं कफेचापिव्योपक्षारसमायुतम् ॥ ३२ ॥

वातकी अधिकता में अम्लतक्रको सैन्धाडालकरपिये पित्तमें
बूरा डालकर स्वादु पिये और कफकी अधिकतामें सोंठमिरच
पीपल और जवाखारके साथ पिये ॥ ३२ ॥

नैवतक्रं क्षतेदद्यात् नोष्णकाले न दुर्बले ।

नमूच्छाभ्रमदाहेषु नरोगेरक्तपित्तके ॥ ३३ ॥

क्षतमें तक्रकासेवन करे, न उष्ण कालमें न दुर्बलतामें सेवन

करे, तथा मूर्च्छा भ्रम दाह रक्तपित्त रोगमें, तक्रका सेवन करना नहीं चाहिये ॥ ३३ ॥

ग्राहिणोपातलारूक्षाविज्ञेयातक्रकूर्चिका ॥ ३४ ॥

ग्राही वातकारक रूखी तक्र कूर्चिका (आमिक्षा) जाननी ३४ ॥

तक्राल्लघुतरोमण्डः कूर्चिकादधितक्रजः ॥ ३५ ॥

मण्ड (रस) तक्रसे अत्यन्त हलका होताहै दहीकी कूर्चिकासे मण्ड होताहै दहीके साथ दूध पकानेसे कूर्चिका होतीहै कोई तक्रसे दधि कूर्चिका का होना कहतेहैं विशेष कर दहीकी होतीहै ॥ ३५ ॥

किलाटोऽनिलहावृष्यः कफनिद्राकरोगुरुः ॥ ३६ ॥

किलाट (नष्ट क्षीर पिंड) अग्निनाशक वीर्य कारक कफ निद्राकरनेवाला भारी होताहै ॥ ३६ ॥

मधुरोऽबृंहणस्तद्वत् पीयूषोपिसमोरटः ॥ ३७ ॥

मधुर पुष्टिकारक पीयूष और मोरट होताहै तुरत प्रसव हुए पशुका दूध पीयूष कहाताहै और सातरातके पीछे उसकी मोरट संज्ञा होतीहै ॥ ३७ ॥

नवनीतं नवं वृष्यं शीतं वर्णबलाग्निकृत् ।

संग्राहिवातपित्तामृक्क्षयाऽशोर्दितकासजित् ॥ ३८ ॥

ताजामक्खन वीर्य कारक शीतल वर्णबल अग्निका करने वाला ग्राही वात पित्त रुधिर क्षय अर्शात्व (चवासीर) अर्दित और खांसीका दूर करनेवालाहै ॥ ३८ ॥

क्षीरोद्भवन्तु संग्राहिरक्तपित्ताक्षिरोगनुत् ॥ ३९ ॥

दूधसे मथकर निकला मक्खन संग्राही रक्तपित्त गैररोगका दूर करनेवालाहै ॥ ३९ ॥

विकल्प एषदध्यादिःश्रेष्ठोगव्योऽभिवर्णितः ।

विकल्पानवाशिष्टास्तु क्षीरवीर्य समादिशेत् ॥ ४० ॥

यह दहीसे निकाला हुआ गऊका मक्खन बहुत अच्छाहै दूसरे जीवोंके दूधके अनुसार उनके मक्खनके गुण जानने ॥ ४० ॥

घृतं बुद्ध्यग्निं शुक्रौजोमेदःस्मृतिकफावहम् ।

वातपित्तविषोन्मादशोपालक्ष्मीजरापहम् ।

स्नेहोत्तमं योगवाहिसर्व्वथा मधुरं हिमम् ॥ ४१ ॥

घृतबुद्धि अग्नि वीर्य मेद स्मृति कफका बढानेवाला है और वातपित्त विष उन्माद शोष, अलक्ष्मी जराका दूर करनेवाला है संस्कार बशसे कफकोभी दूर करता है स्नेहोंमें उत्तम योग वाही (जिस द्रव्यके संग संशुक्तकरो वैसाही होजाय) सर्व्वथा मधुर और शीतल है ॥ ४१ ॥

गव्यं घृतं घृतश्रेष्ठं चक्षुष्यं बलवर्द्धनम् ।

विपाके मधुरं श्रेष्ठं वातपित्तविपापहम् ॥ ४२ ॥

गऊका घृत श्रेष्ठ है नेत्रोंको हितकारी बलका बढाने वाला-पाकमें मधुर श्रेष्ठ वात पित्त और विषका दूर करनेवाला है ४२॥

माहिषन्तु घृतं स्वादु पित्तास्रानिलनुद्धिमम् ॥ ४३ ॥

भैंसका घृत स्वादु पित्तरक्त वात नाशक और ठंडाहै ॥ ४३ ॥

छागं घृतंतु चक्षुष्यं लघ्वग्निबलवर्द्धनम् ॥ ४४ ॥

बकरीका घृत नेत्रोंको हितकारक लघु अग्नि और बलका बढाने वालाहै ॥ ४४ ॥

आविकादीनि सर्पापिबुद्धास्वक्षीरवद्वदेत् ॥ ४५ ॥

भेद आदिके घी उनके घृतकी समान गुणवाले हैं ॥ ४५ ॥

सर्पिः पुराणं त्रिमलप्रतिश्रुतिमिरापहम् ।

मूर्छाकुष्ठविषोन्मादग्रहापस्मारनाशनम् ॥ ४६ ॥

पुराना घी त्रिदोष पीनस तिमिर रोगका हरनेवाला मूर्छा कुष्ठ विष उन्माद ग्रह अपस्मारका नाश करताहै उग्र गन्धघाला पुराना घृत दशवर्षमें होताहै जितना जितना पुरानाहो उतना उतना गुणोंमें अधिक होताहै ॥ ४६ ॥

क्षीरघृतंतु संग्राहितर्पणं नेत्ररोगनुत् ॥ ४७ ॥

दूधसे निकाला घृत आही घृतिकारक नेत्ररोग दूर करताहै ४७

सर्पिर्मण्डः सरः स्वादुर्योनिश्रोत्रशिरोऽक्षिजान् ।

गदान् जयति शोथग्रो रूक्षस्तीक्ष्णस्त्वनुश्वसः ॥ ४८ ॥

इति क्षीरवर्गः ।

शृतमण्ड सारकहै योनि श्रोत्र शिर नेत्रोंके रोगोंको दूर करता तथा शोथ दूर करताहै रूखा और तीक्ष्णहै ॥ ४८ ॥

इति क्षीरवर्गः ।

तैलं संयोगसंस्कारात् सर्वरोगहरं स्मृतम् ।

कपायानुरसं स्वादु सूक्ष्ममुष्णं व्यवायिच ॥

पित्तलं बद्धविष्मूत्रं नच श्लेष्माभिवर्द्धनम् ।

वातघ्नमुत्तमं बल्यं त्वच्यं मेधाग्निवर्द्धनम् ॥ १ ॥

संयोग संस्कारसे तैल सब रोगोंका हरनेवालाहै कसेला रसीला स्वादु सूक्ष्म गरम और व्यवायीहै पित्तकारक विष्ट मूत्रका बांधनेवाला कफका न करनेवाला वात हारक बलकारक त्वचाको दितकारक मेधा और अग्नि का बढ़ानेवाला है ॥ १ ॥

सार्पपं कटुतीक्ष्णोष्णं कफशुकानिलापहम् ।

लघुपित्तान्नकृत्कोठकुप्राशौव्रणजन्तुजित् ॥ २ ॥

सरसोंका तैल कटु तीक्ष्ण गरम कफ वीर्यघातका हरनेवाला, हलका पित्त रुधिरका करनेवाला, कोठ कुष्ठ बघासीर व्रण कृमिका दूर करनेवालाहै ॥ २ ॥

सेकाभ्यंगावगाहेषु तिलतैलं प्रशस्यते ।

तद्वस्तिषुच पानेषु नस्येकर्णाक्षिपूरणे ॥

अन्नपानविधौ चापि प्रयुज्यं वातशान्तये ॥ ३ ॥

सेक मालिश स्नानमें तिलका तैल उत्तमहै, तथा वस्ति शोधन पान नस्य कर्म आंख नाकके पूर्ण करनेमें अन्नपान विधिमें वात शान्तिमें इसका प्रयोगकरना चाहिये ॥ ३ ॥

तैलमेरण्डजं तिक्तं कटुस्वादुरसंगुरु ।

ब्रध्नगुल्मानिलकफानुदरान् विषमज्वरम् ॥

रुक्शोफौ च कटीगुह्यकोष्ठपृष्ठाश्रयौ जयेत् ॥ ४ ॥

अेरंडका तेल तीखा स्वादु कटु रसयुक्त और भारी है ब्रध्न गुल्म वात कफ उदर रोग विषमज्वर दर्द सूजन कमर गुह्य, कोष्ठ, पीठके दर्दको दूरकर्ता है ॥ ४ ॥

तीक्ष्णोष्णं पिच्छिलं विस्रं रक्तैरण्डोद्भवं त्वति ॥ ५ ॥

तथा तीक्ष्ण उष्ण चिकना सारक लाल अेरण्डका तेल होता है ५

उमाकुसुम्भजं तूष्णं त्वग्दोषकफपित्तकृत् ॥ ६ ॥

अलसीकातेल गरम त्वचाके दोष और कफ पित्तका जीतने वाला है ॥ ६ ॥

करञ्जनिम्बतैलन्तु नात्युष्णं कफपित्तजित् ।

तिक्तं क्रिमिहरं तैलं शेषं योनिवदादिशेत् ॥ ७ ॥

करंज और नीमकातेल बहुत उष्ण नहीं, कफ और पित्तका जीतने वाला है तीखा कृमि हरने वाला है, शेष जो वस्तु जैसी हो वैसा उसका तेल जानें ॥ ७ ॥

सर्वेभ्यस्त्वित्त्वैलेभ्य स्तिलं तैलं विशिष्यते ॥ ८ ॥

सब तैलोंसे तिलका तेल अधिक उत्तम है ॥ ८ ॥

धसामजा च वातघ्नौ बलपित्तकफप्रदौ ।

मांसानुरूपगन्धौ च विद्यान्मेदोऽपिताविब ॥ ९ ॥

दूसरे पदार्थोंका निकालातेलमें गुणोंमें उन पदार्थोंके समान हैं चर्बी और मांस वातनाशकबलपित्त और कफकी देनेवाली और मांसके अनुसार उनमें गन्ध और मेद जानना जिस जीवका जैसा मांस वैसी उसकी चर्बी जाननी ॥ ९ ॥

इति तैलवर्गः ।

इक्षोरसो हिमोवृष्यस्तर्पणो जीवनः सरः ।

वातामृक्पित्तजित्स्वादुः स्निग्धः प्रीणनबृंहणः ।

रसोदन्तकृतः श्लेष्मकारणं न विदाहवान् ॥ १० ॥

ईखकारस ठंडा बलकारक तृप्तकारक जीवन दायक सारक
वात रक्त पित्तका जीतनेवाला स्वादु स्निग्ध प्रीति कारक वीर्य
बलकर्ता रस दन्त पीढाकारक श्लेष्माका करनेवाला तथा विदाही
नहीं है ॥ १ ॥

यान्त्रिकस्तु विदाहीस्याद्गुरुस्त्वग्रन्थियोगतः ॥ २ ॥

कोल्हूमें पेला हुआ रस भारी ग्रन्थिके योगसे होता है ॥ २ ॥

अतीवमधुरो मूले मध्ये मधुर एवच ।

अग्रे चाक्षिषु विज्ञेय इक्षूणां लवणो रसः ॥ ३ ॥

मूलमें अतीव मधुर मध्यमें मधुर और गन्नेकी फुलची पर तृन-
खरा रस होता है ॥ ३ ॥

पक्कोरसो गुरुः स्निग्धः सतीक्ष्णः कफवातजित् ॥ ४ ॥

पक्कारस भारी स्निग्ध तीक्ष्ण कफ और वातका जीतनेवाला है ४

फाणितं गुर्वभिष्यन्दिर्वृंहणं कफशुक्रलम् ॥ ५ ॥

इसका फांट भारी अभिष्यान्दि वीर्यकारक कफ और वीर्यका
करनेवाला है ॥ ५ ॥

रूक्षं मधूकपुष्पोत्थं फाणितं त्वथवातहृत् ।

कफदं मधुरं पाके कषायं वस्तिदूषणम् ॥ ६ ॥

महुएके फूलके रसका फांट वातका हरनेवाला है कफ कारक
पाकमें मधुर कसेला वस्तिका दूषण करनेवाला है ॥ ६ ॥

गुडोवृष्यो गुरुः स्निग्धः सक्षारो मूत्रशोधनः ।

नातिपित्तहरो मेदः कफक्रिमिवलप्रदः ॥ ७ ॥

गुड वीर्यकारक, गुरु चिकना क्षार युक्त मूत्रका शोधन करनेवा-
ला पित्तका बहुत न हरनेवाला मेद कफ कृमि और बलकारक है ७

पित्तघ्नो मधुरः शुद्धो वातघ्नोऽसृक्प्रसादनः ॥ ८ ॥

मधुर और शुद्ध पित्तका हरनेवाला वात नाशक रुधिरका
स्वच्छ करनेवाला है ॥ ८ ॥

सपुराणोऽधिकगुणो गुडः पथ्यतमः स्मृतः ॥ ९ ॥

पुराना गुड अधिकतर गुणदायक और पथ्य है ॥ ९ ॥

खण्डं वृष्यतमं वल्यं चक्षुष्यं वृंहणं तथा ।

वातपित्तहरं नातिस्निग्धं हृद्यं सुखप्रदम् ॥ १० ॥

खांड वीर्यकारक बलदायक नेत्रोंको हितकारक वीर्यवर्द्धक वात पित्तको हरनेवाली कुष्ठेक स्निग्ध हृदयको हितकारक सुखदायकहै ॥ १० ॥

शर्करावातपित्तामृद्भूच्छोर्छर्दिविपापहा ॥ ११ ॥

शक्कर वात पित्त रुधिर विकार मूर्च्छा छर्दि विपकी हरनेवाली है ॥ ११ ॥

तमराजस्तुतृष्णाघ्नोज्वरदाहास्रपित्तजित् ॥ १२ ॥

तमराज (शर्कराभेद) तृष्णा नाशक ज्वर दाह रुधिर और पित्तको जीतनेवालीहै ॥ १२ ॥

वृष्याक्षीणक्षतहिता सस्नेहा गुडशर्करा ॥ १३ ॥

स्नेह युक्त गुड और शक्कर वीर्यवर्द्धक क्षीण और क्षत (घाव) में हितकारकहै ॥ १३ ॥

मधुजा शर्करा रूक्षा तृष्णाछर्दिसारनुत् ।

तद्गुणा तिक्तमधुरा सस्नेहा यासशर्करा ॥ १४ ॥

मधुसे उत्पन्न हुई शर्करा रूखी तृष्णा छर्दि अतिसारको दूर करनेवालीहै जो स्नेहयुक्त शर्कराहै उसके गुणतीखे और मधुरहै ॥ १४ ॥

गुडमत्स्यण्डिकाखण्डशर्कराविमलाः परम् ॥ १५ ॥

गुडकी अपेक्षा मत्स्यण्डिका निर्मल है (गुडकी निखार कर बनाई टिकिया) गुडकी मत्स्यण्डिकासे खांड और बूरा निर्मल है ॥ १५ ॥

यथा यथैषां वैमल्यं मधुरत्वं तथा तथा ।

स्नेहगौरवशैत्यानि सरत्त्वञ्च तथा तथा ॥ १६ ॥

जितनी जितनी इनमें निर्मलता हो उतनी ही उतनी मधुरता अधिक होती है और उतना उतना ही स्नेह शुरुता और शीतलता अधिक होती जाती है तथा सारक होते जाते हैं ॥ १६ ॥

मधुस्वादुरसं शीतं व्रणशोधनरोपणम् ।

कपायानुरसं रुक्षं क्लृप्तं दीपनलेखनम् ॥

सन्धानं लघुचक्षुष्यं स्वयं हृद्यं त्रिदोषनुत् ।

श्यासद्विकाविषहरमुष्णं खाम्बुविरोधि च ॥ १७ ॥

सहज स्वादु रससे युक्त शीतल व्रणका शोधन और रोपण करने वाला है कसेला रसयुक्त रुखा बलकारक दीपन और लेखन है दूटे जोड़को मिलानेवाला हलका नेत्रोंको हितकारक स्थिर और हृदयको हितकारक त्रिदोषहारक श्यास द्विचकी विषका हरने वाला गरम आकाश जलका विरोधी है ॥ १७ ॥

माक्षिकं भ्रामरं क्षौद्रं पौत्तिकं मधुजातयः ।

माक्षिकं प्रवरं तेषां पिशेपाद्भ्रामरं गुरु ॥ १८ ॥

माक्षिक भ्रामर क्षौद्र पौत्तिक यह चार मधुकी जाति हैं यद्यपि सुशुत में आठ प्रकारका कहा है परन्तु चार प्रकारका सर्वत्र प्रसिद्ध है उन सबमें माक्षिक सहज ज्ञेय है और भ्रामर गुरु है ॥ १८ ॥

माक्षिकं तैलवर्णस्यादघृतवर्णन्तु पौत्तिकम् ।

क्षौद्रन्तुकपिलं विद्याच्छेत्तं भ्रामरमुच्यते ॥ १९ ॥

माक्षिक मधु तेलके रंगका पौत्तिक घृत वर्णका क्षौद्र कपिल वर्णका भ्रामर श्वेत वर्णका होता है ॥ १९ ॥

बृंहणीयं मधुनवं नातिश्लेष्महरं सरम् ।

मेदःस्थौल्यापदं ग्राहि पुराणं मतिलेखनम् ॥

दोषत्रयहरं पक्वं माममम्लं त्रिदोषकृत् ॥ २० ॥

नवीन मधु वाजीकरण है तथा अधिकतर श्लेष्मको हरण नहीं करता है सारक है । मेदकी स्थूलताको हरने वाला प्राची लेखन पुराना मधु होता है पक्का मधु त्रिदोष हरने वाला है कच्चा अम्ल और विदोष का करने वाला है ॥ २० ॥

तद्युक्तं विविधैर्योगैर्निहन्यादामयान्वहन् ॥ २१ ॥

और अनेक योगोंके साथमें अनेक रोगोंको दूर करता है २१ ॥

उष्णेन मधुसंयुक्तं वमनेष्ववचारितम् ।

अपाकादनवस्थानान्नविरुध्येत पूर्ववत् ॥ २२ ॥

इत्यैक्षवादिवर्गः ।

उष्ण मधुके साथ वमनमें औषधी देनी अपाक और अनव-
स्थामें पूर्ववत् विरोध नहीं होता ॥ २२ ॥

इत्यैक्षवादिवर्गः ।

सर्व्वं पित्तकरं मद्यमम्लं दीपनपाचनम् ।

भेदनं कफघातघ्नं हृद्यं वस्तिविशोधनम् ॥

पाके लघुविदाह्युष्णं तीक्ष्णभिन्द्रियबोधनम् ।

विकासिमृष्टविण्मूत्रं निद्राभावप्रसक्तिनुत् ॥ १ ॥

सब प्रकारके मद्य पित्त करने वाले अम्ल दीपन पाचन भेदन
कफ घातके घ्न करते, हृद्यको हितकारी और वस्ति के शुद्ध
करने वाले हैं पाकमे लघु विदाही गरम धीर्य वर्द्धक इन्द्रिय
शोधक चित्त खिलाने वाले, विष्टा मूत्रके निर्माण करने वाले,
निद्रा का अभाव और उसमें अत्यन्त प्रसक्तिको दूर करने
वाले हैं ॥ १ ॥

स्तन्यरक्तक्षयहिता सुरादीपन बृंहणी ।

काश्याशौग्रहणीदोषमूत्राघातानिलापहा ॥ २ ॥

सुरा स्तनोंको हितकारक, रक्त क्षयमे हितकारक, दीपन
और बाजी करण है, कृशता बवासीर ग्रहणी दोष मूत्रघात
और घातकी दूर करने वाली है ॥ २ ॥

कासाशौग्रहणीदोषप्रतिश्यायविनाशिनी ।

श्वेता मूत्रकफस्तन्यरक्तमांसकरीसुरा ॥ ३ ॥

तथा खांसी बवासीर संग्रहणी पीनसको दूर करती है श्वेता
सुरा मूत्र कफ स्तन्य रक्तमांसकी करने वाली है ॥ ३ ॥

छर्द्यरोचकहृत्कृक्षितोदशूलप्रमर्दिनी ।

प्रसन्नागुल्मवाताशौविबन्धानाहनाशिनी ॥ ४ ॥

छर्दि अरुचि नाशक, कुक्षिका शूल दूर करती है मसत्र सुरा
गुल्मघात अर्श विघ्न्य अनाह रोगको दूर करती है ॥ ४ ॥

पित्तलाल्पकफारूक्षा यवैर्वातप्रकोपनी ।

विष्टम्भिनी सुरागुर्वी श्लेष्मलातु मधूलिका ॥ ५ ॥

यवकी सुरा पित्तकारक थोड़ा कफकरती है रुखी और वात
की कोषकरनेवाली है विष्टम्भकारक सुरा भारी है गोधूमकी
सुरा श्लेष्मकारक है ॥ ५ ॥

रूक्षा नातिकफावृष्या पाचनी बल्कलीसुरा ॥ ६ ॥

बल्कली (दालचिनीकी) सुरा रुखी कुछ कफकारक बाजी
कर और पाचक है ॥ ६ ॥

कोहलोभेद्यवृष्यश्च त्रिदोषोदनप्रियः ॥ ७ ॥

कोहल नाम मद्य भेदक बाजीकर त्रिदोषकारक और मुख-
प्रिय है ॥ ७ ॥

प्रागुष्णोजगलः प्रोक्तोरूक्षस्त्वृक्षफशोधनुत् ॥ ८ ॥

जगल मविरा प्राही गरम रुखी तथा और शोफ रोगको दूर
करती है ॥ ८ ॥

हृद्यः प्रवाहिकाटोपदुर्नामानिलशोधनुत् ।

वक्कसोद्धतसारत्वाद्विष्टम्भी वातकोपनः ॥ ९ ॥

वक्कस मद्य हृदयको हितकारक प्रवाहिका आटोप दुर्नामवात
और शोथकी दूर करने वाली है और साररहित होनेसे विष्टम्भी
तथा वातका कोष करनेवाली है ॥ ९ ॥

शीघ्रः पित्तानिलहरः श्लेष्मस्नेहविकारहा ।

मेदःशोथोदराशोघ्नो बल्यः पक्करसोमतः ॥ १० ॥

पकाकर ईखके रससे बनाया हुआ शीघ्र मद्य पित्तवातका
हरनेवाला श्लेष्मा और स्नेहके विकारका हरनेवाला मेद सृजन
उदररोग बधासीरका दूर करनेवाला बलकारक रसके पाकमें
होता है ॥ १० ॥

उष्णेन मधुसंयुक्तं वमनेष्ववचारितम् ।

अपाकादनवस्थानान्नविरुध्येत पूर्ववत् ॥ २२ ॥

इत्यैक्षवादिवर्गः ।

उष्ण मधुके साथ वमनमें औषधी देनी अपाक और अनव-
स्थामें पूर्ववत् विरोध नहीं होता ॥ २२ ॥

इत्यैक्षवादिवर्गः ।

सर्वं पित्तकरं मद्यमम्लं दीपनपाचनम् ।

भेदनं कफघातघ्नं हृद्यं वस्तिविशोधनम् ॥

पाके लघुविदाह्युष्णं तीक्ष्णभिन्द्रियबोधनम् ।

विकासिमृष्टविष्मूत्रं निद्राभावप्रसक्तिनुत् ॥ १ ॥

सब प्रकारके मद्य पित्त करने वाले अम्ल दीपन पाचन भेदन
कफ घातके दूर करते, हृदयको हितकारी और वस्ति के शुद्ध
करने वाले हैं पाकमे लघु विदाही गरम वीर्य वर्द्धक इन्द्रिय
शोधक चित्त खिलाने वाले, विष्टा मूत्रके निर्माण करने वाले,
निद्रा का अभाव और उसमें अत्यन्त प्रसक्तिको दूर करने
वाले हैं ॥ १ ॥

स्तन्यरक्तक्षयहिता सुरादीपन बृंहणी ।

काश्याशौग्रहणीदोषमूत्राघातानिलापहा ॥ २ ॥

सुरा स्तनोंको हितकारक, रक्त क्षयमे हितकारक, दीपन
और वाजी करण है, कृशता बवासीर ग्रहणी दोष मूत्रघात
और घातकी दूर करने वाली है ॥ २ ॥

कासाशौग्रहणीदोषप्रतिश्यायविनाशिनी ।

श्वेता मूत्रकफस्तन्यरक्तमांसकरीसुरा ॥ ३ ॥

तथा खांसी बवासीर संप्रहणी पीनसको दूर करती है श्वेता
सुरा मूत्र कफ स्तन्य रक्तमांसकी करने वाली है ॥ ३ ॥

छर्द्यरोचकहृत्कुक्षितोदशूलप्रमर्दिनी ।

प्रसन्नाशुल्मवाताशौविबन्धानाहनाशिनी ॥ ४ ॥

छर्दि अरुचि नाशक, कुक्षिका शूल दूर करती है प्रसन्न सुरा
गुल्मवात अर्श विबन्ध अनाह रोगको दूर करती है ॥ ४ ॥

पित्ताल्पकफारुक्षा यवैर्वातप्रकोपनी ।

विष्टम्भिनी सुरागुर्वी श्लेष्मलातु मधूलिका ॥ ५ ॥

यवकी सुरा पित्तकारक थोड़ा कफकरती है रुखी और घात
की कोपकरनेवाली है विष्टम्भकारक सुरा भारी है गोधूमकी
सुरा श्लेष्मकारक है ॥ ५ ॥

रूक्षा नातिकफावृष्या पाचनी बल्कलीसुरा ॥ ६ ॥

बल्कली (दालचिनीकी) सुरा रुखी कुछ कफकारक वाजी
कर और पाचक है ॥ ६ ॥

कोहोलोभेद्यवृष्यश्च त्रिदोषोवदनप्रियः ॥ ७ ॥

कोहेल नाम मद्य भेदक वाजीकर त्रिदोषकारक और मुख-
प्रिय है ॥ ७ ॥

ग्राह्युष्णोजगलः प्रोक्तोरुक्षस्तृट्कफशोथनुत् ॥ ८ ॥

जगल मदिरा ग्राही गरम रुखी तृषा और शोफ रोगको दूर
करती है ॥ ८ ॥

हृद्यः प्रवाहिकाटोपदुर्नामानिलशोथनुत् ।

वक्कसोद्धतसारत्वाद्विष्टम्भी वातकोपनः ॥ ९ ॥

वक्कस मद्य हृद्यकी हितकारक प्रवाहिका आटोप दुर्नामवात
और शोथकी दूरकरने वाली है और सार रहित होनेसे विष्टम्भी
तथा वातका कोप करनेवाली है ॥ ९ ॥

शीधुः पित्तानिलहरः श्लेष्मस्नेहविकारहा ।

मेदःशोथोदराशोप्रो वल्यः पक्वसोमतः ॥ १० ॥

पकाकर ईखके रससे बनाया हुआ शीधु मद्य पित्तवातका
हरनेवाला श्लेष्मा और स्नेहके विकारका हरनेवाला मेद सृजन
उदररोग बवासीरका दूर करनेवाला बलकारक रसके पाकमें
होता है ॥ १० ॥

जरणीयोविवन्धघ्नः स्वरावर्णविशोधनः ।

लेखनः शीतरसिकोहितः शोफोदरार्शसाम् ॥ ११ ॥

इंखके रसको विनापकाये बनी हुई शीघ्र शीघ्र जीर्ण होती है विवन्ध दूर करती स्वरवर्णका शोधन करती लेखन शोक दूर और अर्श रोगमें हितकारकहै ॥ ११ ॥

गौडः शीघ्रः कपायः स्यात् स्वादुःपाचनदीपनः ॥ १२ ॥

गुडकी बनी हुई शीघ्रकसेली स्वादु पाचन और दीपतहै ॥ १२ ॥

शार्करो मधुरो हृद्यो दीपनो वस्तिशोधनः ॥

वातघ्नो मधुरः पाके रुच्यइन्द्रियबोधनः ॥ १३ ॥

शर्कराकी बनाई शीघ्र मधुर हृदयको हितकारक, दीपन वस्तिके शोधनेवालीहै वात नाशक पाकमें मधुर रुचिकारक इन्द्रियोंको बोधन करनेवालीहै ॥ १३ ॥

शीघ्रमधूकपुष्पोत्थो विदाह्यग्निबलप्रदः ।

रुक्षः कपायः कफहा वातपित्तप्रकोपनः ॥ १४ ॥

महुणके फूलसे बनी हुई शीघ्र विदाही अग्निकी बढ़ानेवाली तथा बलकारकहै, रुखी कसेली कफनाशक वात पित्तकी कोप करनेवालीहै ॥ १४ ॥

जाम्बवो वृद्धनिप्यन्दस्तुवरो वातकोपनः ॥ १५ ॥

जाम्बू फलके रससे गुड़ मिलाकर बनाई हुई शीघ्र मूत्र बंध कारक कसेली वातका कोप करनेवालीहै ॥ १५ ॥

तीक्ष्णः सुरासवो हृद्यो मूत्रलः कफवातनुत् ।

मुखप्रियः स्थिरमदो विज्ञेयोऽनिलनाशनः ॥ १६ ॥

औषधी मिलाकर बनाया हुआ सुरा सब हृदयको हित कारक मूत्रकारक कफ वातका नाश करनेवालाहै मुखप्रिय स्थिर मदवाला वात नाशक जानना ॥ १६ ॥

तीक्ष्णः कपायो मदकृद्दुर्गमकफगुल्मनुत् ।

क्रिमिमेदोऽनिलहरो मेरेयो मधुरो गुरुः ॥ १७ ॥

मंरेय मद्य तीक्ष्ण कसेला मदकारक बवासीर कफ और गुल्म

का दूर करने वाला है कृमि भेद वात हरनेवाला मधुर और भारी है ॥ १७ ॥

निर्दिशेद्रव्यतश्चान्यान्कन्दमूलफलासवान् ॥ १८ ॥

इसी प्रकार दूसरे द्रव्य कन्दमूलादिसे वने आसवोंके गुण जानने ॥ १८ ॥

नवं मद्यमभिष्यन्दि दोषकृज्जीर्णमन्यथा ॥ १९ ॥

नई मद्य अभिष्यन्दी दोष कारक है, पुरानी इसके विपरीत पुरानी सुरा श्रेष्ठ है ॥ १९ ॥

अरिष्टो द्रव्यसंयोगसंस्कारादधिकोगुणैः ॥ २० ॥

अरिष्ट ईश्व विकार अभया (हरड) चीता दन्ती पीपली आदि बहुतसी औषधियोंके योगसे काय बना हुआ) गुणोंमें अधिक होता है ॥ २० ॥

बहुदोषहरश्चैव रोगाणां समनश्चतः ।

दीपनः कफवातघ्नः सरः पित्तविरोधनः ॥

शूलध्मानोदरघ्नीहज्वराजीर्णांशसांहितः ॥ २१ ॥

यह बहुत दोषोंका हरनेवाला रोगोंका शान्त करने वाला दीपन कफ वातका नाशक सारक और पित्त विरोधीहै, शूल अफारा उदर रोग घ्नीहा ज्वर अजीर्ण बवासीरको दूर करताहै २१

अरिष्टासवशीघूनां गुणान् कर्माणिचादिशेत् ।

बुद्धायथास्त्वं संस्कारमवेक्ष्य कुशलोभिपक् ॥ २२ ॥

चतुर वैद्यको उचित है कि अरिष्ट आसव और शीघूओंके गुण कर्मोंको जानकर बुद्धिसे उनका संस्कार विचार मयोग करे २२ ॥

सान्द्रं निदाहि दुर्गंधिविरसंकिमिलं गुरु ।

असह्यं तरुणं तीक्ष्णमुष्णं दुर्भाजनस्थितम् ॥

अल्पौषधं पर्युषित मत्पच्यं पिष्टिलञ्चयत् ।

तद्गर्ज्य सर्वथा मद्यं किञ्चिच्छेषञ्च यद्रवेत् ॥ २३ ॥

जो मधु सघन विदाही दुर्गंधिकारक विरस कृमियुक्त, भारी, हृदयको अहित कारकमन्दवत्पत्र तीक्ष्ण उष्ण घुरे पात्रमें स्थित

थोड़ी औपधी वाला बासी अति स्वच्छ पिच्छल पीछेका पात्रमें बचा हुआ यह मद्य सर्वथा त्यागने योग्य है ॥ २३ ॥

चिरस्थितं जातरसं दीपनं कफवातजित् ।

रुच्यं प्रसन्नं सुरभि मद्यं सेव्यं मदावहम् ॥ २४ ॥

जो बहुत दिनका रक्खा हुआ रसहीनहै वह कफ और वातका जीतनेवालाहै प्रसन्ना मद्य रुचिकारकहै सुगन्धि युक्त मदकारक, मद्य सेवन करना चाहिये ॥ २४ ॥

शुक्तं बलाशपित्तासृक्छेदि वातानुलोमनम् ।

भृशोष्णतीक्ष्णरूक्षाम्लं हृद्यं रुचिकरं सरम् ।

दीपनं शिशिरं स्पर्शं पाण्डुतृट्किमिनाशनम् ॥ २५ ॥

जो मस्तु आदि पदार्थ पवित्र वर्तनमें शुद्धकांजी मधु तीन दिनतक बंदकर धान्य राशिमें धर दिये जातेहैं वह शुक्त कहलाताहै, यह बलकारक पित्त रुधिररुद्धका करनेवाला, वातका अनुलोम करनेवाला अत्यन्त उष्ण तीक्ष्ण रुखा अम्ल हृद्यको हितकारक रुचिकर और सारकहै, दीपन स्पर्शमें ठंडा पाण्डु रोग-तृष्णा और कृमिका दूर करनेवालाहै ॥ २५ ॥

तद्वत्तदासुतं सर्वं रोचनन्तु विशेषतः ॥ २६ ॥

इसी प्रकारके गुणवाले शुक्तमें आर्द्र करीरादि जलनेसे होतेहैं, वे विशेष कर रुचि कारक होते हैं ॥ २६ ॥

गौडानि रसशुक्तानि मधुशुक्तानियानि च ।

यथा पूर्वं गुरुतराण्यभिष्यन्दकराणि च २७ ॥

जो शुद्धसे बने हुए शुक्तहैं और जो मधुके योगसे बनेहैं यह यथा पूर्व एक दूसरेसे भारी और अभिष्यन्द कारकहैं ॥ २७ ॥

काजिकं भेदितीक्ष्णोष्णपित्तकृत्स्पर्शशीतलम् ।

भ्रमकृमहरं रुच्यं दीपनंवास्तिशूलनुत् ॥

शस्तमास्थापनेहृद्यंलघुवातकफापहम् ।

गण्डूषधारणाद्वक्रमलदौर्गन्ध्यशोपजित् ॥ २८ ॥

कांजी भेदनहै तीक्ष्णगरमहै पित्तकारक स्पर्शमें शीतलहै, भ्रमकृमकी हरनेवाली रुचिकारक दीपन वस्तीके गुलको दूर करने वालीहै, स्थापनमें श्रेष्ठ हृदयको हितकारक लघुवात और कफकी हरने वालीहै, और मुखमें कुछा धारण करनेवाला मुखका मेल दुर्गन्धि और शोष रोगका जीतनेवालाहै ॥ २८ ॥

एभिरेवगुणैर्युक्ते सौवीरकतुपोदके ।

क्रिमिहृद्रोगगुल्मार्शः पाण्डुरोगनिवर्हणे ॥ २९ ॥

इसी प्रकारके गुणोंसे युक्त कांजी और तुष (धान्यभूसी) काजलहै, यह कृमि हृद्रोग गुल्म अर्श पाण्डुरोग दूर करताहै २९

मूत्रंगोजाविमहिष गजाश्वोष्ट्र खरोद्भवम् ।

पित्तलं रुक्षतीक्ष्णोष्णलवणानुरसंकटम् ॥

क्रिमिशोफोदरानाह शूलपाण्डुकफानिलात्र ।

गुल्मारुचिविपश्चित्रकुष्ठाशंसिजयेल्लघु ॥

दीपनं पाचनं भेदितेषु गोमूत्र मुत्तमम् ॥ ३० ॥

गौषकरी भेड़ भैंसा हाथी घोडा ऊंट गधा इन जन्तुओंका मूत्र पित्तकारक रुखा तीक्ष्ण गरम रसमें खारी कटु है कृमि रोग सृजन उदर रोग अफारा अनाह शूल पाण्डुरोग कफ तथा वात रोग अफारा अनाह शूल पाण्डु रोग कफ तथा वात रोग जीतनेवाले और लघु हैं, दीपन पाचन और भेदनमें गोमूत्र श्रेष्ठ है ॥ ३० ॥

गोमूत्रं कटुतीक्ष्णोष्णं सक्षारत्वान्नवातलम् ।

लघुग्निदीपनं मेध्यं पित्तलं कफवातनुत् ॥

गुल्मशूलोदरानाह विरेकास्थ पनादिषु ।

मूत्रप्रयोगसाध्येषु गन्धं मूत्रं प्रयोजयेत् ॥ ३१ ॥

गोमूत्र कटु तीक्ष्ण गरम है, क्षार युक्त होनेसे वात कारक नहीं है, लघु अग्निका दीपन करने वाला बुद्धिको बढ़ाने वाला पित्त कारक कफवात नाशक है, गुल्म शूल उदर अनाह विरेचनके स्थापनादिमें तथा मूत्र प्रयोग साध्यादिमें गौका मूत्र हित कारी है ॥ ३१ ॥

दुर्नामोदरशूलेषु कुष्ठभेहाविशुद्धिषु ।

आनाहशोफगुल्मेषु पाण्डु, रोगे च माहिषम् ॥ ३२ ॥

दुर्नाम (बवासीर) उदर रोग शूल कुष्ठ प्रमेहके दूर करनेमें तथा अनाह शोफ रोग गुल्म और पाण्डु रोगमें भैसेका मूत्र हित कारक है ॥ ३२ ॥

कटुतिक्तान्वितं छाग मीपन्मारुतकोपनम् ॥ ३३ ॥

छागका मूत्र कटु तीखा और कुछ बातका कोप करने वाला है ॥ ३३ ॥

सक्षारतिक्तकटुकमुष्णं वातघ्नमाविकम् ॥ ३४ ॥

भेडका मूत्र तीखा कटु गरम और वात नाशक है ॥ ३४ ॥

आश्वं कफहरं मूत्रं वातचेतोविकारनुत् ॥ ३५ ॥

घोडेका मूत्र कफ हरने वाला वात चित्तके विकार उत्पन्न अपस्मारको दूर करता है ॥ ३५ ॥

तीक्ष्णं क्षारे किलासेच नागमूत्रं प्रयोजयेत् ॥ ३६ ॥

तीक्ष्ण क्षार और किलासमें हाथीका मूत्र प्रयोग करे ॥ ३६ ॥

दीपनं गर्दभं मूत्रं गरचेतोविकारनुत् ॥ ३७ ॥

गधेका मूत्र तीक्ष्ण है विष और चित्तके विकारको दूर करता है ॥ ३७ ॥

अशोभं कारभं मूत्रं मानुषंतु विपापहम् ॥ ३८ ॥

इति मद्यादिवर्गः ।

कूटका मूत्र बवासीर नाशक है और मनुष्यका मूत्र विष हारक है ॥ ३८ ॥

इति मद्यादिवर्गः ।

विधिनाकृतआहारः प्रीणनोधातुपोषकः ।

स्मृत्यायुः पुष्टिवर्णजः सत्वोत्साहविवर्द्धनः ॥ १ ॥

अयं भोजन योग धान्यादिका संस्कार वशासे गुण कथन करने हैं अर्थात् कृतान्य वर्गका गुण कथन करते हैं विधि पूर्यक

बनाया हुआ भोजन प्राणियोंकी धातुओंका पुष्ट करनेवाला स्मृति आयु पुष्टि वर्णबल सत्व और उत्साहका बढ़ानेवाला है ।

ओदनः क्षालितः स्विन्नः प्रस्तुतो विषदोलघुः ।

भृष्टतण्डुलजोत्पथ्यं मन्यथा स्याद्भृशगुरुश्रसः ॥ २ ॥

धोये हुए चावलोंका भात मृदु हुआ पसाया विष दायक और लघु है और भुने चावलोंका उससेभी अधिक लघु है, और बिना धोये हुआ भारी है ॥ २ ॥

मण्डस्तु भूरिदोषघ्नो दीपनोऽनिलनाशनः ।

ज्वरहा परमो वल्यः स्वेदनो मार्गशोधनः ॥ ३ ॥

मण्ड (चावलोंका मण्ड चौदह गुणे जलमें होता है) बहुत दोषोंका नाश करनेवाला, दीपन तथा वात नाशक है ज्वर नाशक परम बल दायक स्वेदन और इन्द्रियोंके मार्गका शोधन करनेवाला है ॥ ३ ॥

लाजमण्डो विशुद्धानां पथ्यः पाचनदीपनः ।

वातानुलोमनो हृद्यः पीपलीनागरान्विताः ॥ ४ ॥

खीलोंका मण्ड विशुद्ध पथ्य पाचन और दीपन है, वातका अनु लोम करने वाला हृद्यको हित कारक पीपल और सोंठ डालनेसे होता है ॥ ४ ॥

पेया स्वेदाग्निजननी वातवर्धोऽनुलोमनी ।

शुत् तृष्णा ग्लानिदौर्वल्य कुक्षिरोगज्वरापहा ॥ ५ ॥

पेया और विलेपी दो प्रकार कीयवागू होती है, पेया स्वेद, और अग्निको उत्पन्न करने वाली, वात और मलको अनु लोम करने वाली, क्षुधा तृष्णा ग्लानि दुर्बलता कुक्षिरोग और ज्वरकी नाश करने वाली है ॥ ५ ॥

विलेपी ग्राहिणी हृद्या तृष्णाग्नी दीपनी हिता ।

व्रणाक्षिरोगसंशुद्ध दुर्बलस्रोतपायिनाम् ॥ ६ ॥

विलेपी (चौगुने जलमें सिद्ध अन्न) ग्राही हृद्यको हित कारक

तृष्णा नाशक दीपनी हित कारक है, व्रण अक्षिरोग नाशक है, शुद्ध दुर्बल स्नेह पानवालों को हित कारक है ॥ ६ ॥

यवागूर्ज्वरतृष्णाघ्निलघ्वीवस्तिविशोधनी ॥ ७ ॥

यवागू ज्वर तृष्णाकी नाशकरने वाली लघुवस्ति शोधक है ॥ ७ ॥

सिक्थकैरहितोमण्डः पेयासिक्थसमन्विता ।

यवागूर्बहुसिक्थस्यादिलेपीविरलद्रवा ॥ ८ ॥

सिक्थ से रहित मण्ड और पेया, सिक्थके सहित होती है, यवागू अधिक सिक्थ वाली और विलेपी किंचित द्रव्युक्त होती है अर्थात् द्रव्यसे चौगुना पानी डालकर औटावे जबल पसीके समान गाढ़ी और लिपटने वाली हो जाय उसे विलेपी कहते हैं । द्रव्यसे चौगुने पानीमें डालकर पतलीपेजके समान कुछलहस दारपर्यन्त औटी हुई कोपेया कहते हैं पेयाकी अपेक्षा कुछगाढ़े कोयूष कहते हैं । चारपल औषधीले कुछ थोड़ीसी कूटकर उसमें ६५ पलपानी डालकर औटावे आधार है तब उत्तार ले उसे छान चाबल आदि द्रव्यडाल औटावे गाढ़ी होनेपर उत्तार लेइसे यवागू कहते हैं ॥ ८ ॥

मण्डपेयाविलेपीनामोदनस्य च लाघवम् ।

यथापूर्वाशिरस्तत्र मण्डो वातानु लोमनः ॥ ९ ॥

ओदनकी अपेक्षा विलेपी विलेपीकी अपेक्षा पेया पेयाकी अपेक्षा मण्ड अधिक लघुहै उसमें मण्ड वातका अनुलोमन करनेवाला है ॥ ९ ॥

पायसः कफकृद्द्रव्योविष्टम्भी मेदुरोगुरुः ॥ १० ॥

पायस खीर कफका करनेवाला बलकारक अतिस्निग्ध और भारी है तथा विष्टम्भीहै ॥ १० ॥

कृशरापित्तकफदावल्या मारुतनाशिनी ॥ ११ ॥

कृशरा (सिचही) पित्त कफकी करनेवाली बलकारक वात नाशकहै ॥ ११ ॥

अन्नं मांसादिभिः सार्द्धं सिद्धं स्याद्गुरुवृंहणम् ॥ १२ ॥

जो अन्न मांसादिके संगसिद्ध कियाहै वह भारी और बाजी कर होताहै ॥ १२ ॥

रसौदनोज्वरहरोवलयो ग्राह्यनिलापहः ॥ १३ ॥

रस ओदन ज्वरहारक बलकारक ग्राही और वात नाशकहै १३

घोलभक्तं श्रमाशोभं रुच्यं तर्पणदीपनम् ॥ १४ ॥

घोल भक्त (मट्टेमे मिला अन्न) श्रम बवासीर नाशक रुचिकारक तृप्ति कारक दीपनहै ॥ १४ ॥

सद्योऽन्नं धारिणाधौतं शीघ्रपाकं बलप्रदम् ।

शीतलं मधुरं रूक्षं श्रमघ्नं तर्पणं परम् ॥ १५ ॥

तत्कालजलसे धोया हुआ अन्न शीघ्र पकनेवालाहै बल देने वालाहै, वह शीतल मधुर रूखा श्रमनाशक परम तृप्ति कारकहै १५

पानीयभक्तं व्युपितं मेदःस्वेदकफप्रदम् ।

त्रिदोषकोपनं रूक्षं मलकृन्मूत्रलं परम् ॥ १६ ॥

पांच गुने पानीमे पकाया भात मेदस्वेद और कफका करने वालाहै, त्रिदोषका कोप करनेवाला, रूखामल कारक, और परम मूत्र कारकहै ॥ १६ ॥

सुस्विन्नोनिस्तुपो भृष्टईषत् सूपोलघुर्हितः ॥ १७ ॥

अच्छी प्रकार मिजीकरा छुलके उतारी हुई कुछ भूनीहुई पक हुई सूप (दाल) हलकी और हितकारक है ॥ १७ ॥

स्विन्नं निष्पीडितं शकं स्नेहसंस्कारितं हितम् ।

अस्विन्नं स्नेहरहितमपीडितमतो न्यथा ॥ १८ ॥

इसी प्रकार जोश दिया हुआ पीडित किया शक घृतादिके संस्कारसे हितकारक होताहै और जो जोशानदिया गयाहै स्नेहरहित तथा पीडित नहीं किया गया वह इसके विपरीत गुण वाला है ॥ १८ ॥

स्विन्नं मांसं कटुस्नेहगोरसाम्लफलैः सह ।

वृंहणं रोचनं वल्यं खालिष्कस्तु सदागुरुः ॥ १९ ॥

जोश किया मांस कटु स्नेह युक्त गोरस (घृतादि) तथा आम्ल फलके साथ सेवन किया हुआ वाजीकर रुचि कारक बलकारक है और खालिष्क (सूखे मांसका भेद) सदा भारीहै १९

तदेवगोरसादानं सुरभिद्रव्यसंस्कृतम् ।

विद्यात्पित्तकफोत्क्लेदि बलमांसाग्निवर्द्धनम् ॥ २० ॥

वही गोरसादिसे युक्त सुगंधिके द्रव्योंसे संस्कार किया हुआ पित्त और कफका उत्क्लेद करने वाला बल मांस और अग्निका बढ़ाने वाला है ॥ २० ॥

परिशुष्कं स्थिरं स्निग्धं हर्षणं प्रीणनं गुरु ।

रोचनं बलमेधाग्निसौजःशुक्रवर्द्धनम् ॥ २१ ॥

और सूखा मांस (बहुतसे घृतमें भूनकर बारंबार इस पर गरम जल छिड़ककर जीरा आदि मसाला मिले मांसको शुष्क कहते हैं) यह गुणोंमें स्थिर स्निग्ध हर्षण और प्रसन्न करने वाला रुचिकारक बल बुद्धि अग्नि मांस ओज वीर्यका बढ़ाने वाला है ॥ २१ ॥

तदेवलुप्तपिष्टत्वादुलुप्तमिति भाषितम् ।

परिशुष्कगुणैर्युक्तं ज्ञेयं पथ्यतमं गुरु ॥ २२ ॥

वही लुप्तपिष्ट होनेसे लुप्त पिष्ट नाम वाला कहाताहै वह सूखा गुणोंसे युक्त अधिकतर पथ्य कारक और भारी है ॥ २२ ॥

तदेवशूलिकाप्रोतमङ्गारे परिपाचितम् ।

ज्ञेयं गुरुतरं किञ्चित् प्रदिग्धं गुरुपाकतः ॥ २३ ॥

वही शूलिकामें पोहकर अंगारोंके ऊपर पकानेसे कुछ दग्ध होकर भारी और पाकमें गुरु होताहै ॥ २३ ॥

मांसं तैलसिद्धं तद्वीर्योष्णं पित्तकृद् गुरु ।

घृतसिद्धन्तुरुच्यग्निदृष्टिदं पित्तनुल्लघु ॥ २४ ॥

जो मांस तेलमें सिद्ध कियाहै, वह वीर्यमें उष्ण पित्तकारक और भारीहै और घृतमें सिद्ध किया रुचि अग्निकारक दृष्टि देने वाला पित्तनाशक लघु है ॥ २४ ॥

वेशवारोगुरुः स्निग्धोवलोपचयवर्द्धनः ॥ २५ ॥

वेसवार (मांसरस) भारी चिकना बलकारक है मांसको हड्डीसे अलगकर भली प्रकार पीसकर गुड़ और घीद्वारा स्निग्ध करिके पीपलकाली मिरच मिलाके इसको वेशवार कहतेहैं २५

रसोज्वरक्षयहरः स्मृत्योजः स्वरवर्द्धनः ।

बृंहणः प्रीणानोवृष्यश्चक्षुष्योवणिनां हितः ॥ २६ ॥

मांसरस ज्वर क्षयका हरनेवाला स्मृति ओज स्वरका बढ़ाने वाला प्राणीकर प्रसन्नता कारक वीर्यकारक नेत्रोंको हितकारी व्रणोंमें हितकारक है ॥ २६ ॥

स दाडिमयुतोवृष्यः संस्कृतोदोषनाशनः ॥ २७ ॥

और दाडिमी से युक्त वही बलकारक है और संस्कार करने से दोषनाशक है ॥ २७ ॥

प्रीणनः सर्वधातूनां विशेषान्मुखशोषिणाम् ।

क्षुत्तृष्णापहरः श्रेष्ठः सोरावः स्वादुशीतलः ॥ २८ ॥

रसके ऊपर का स्वच्छ भाग सब धातुओंका प्रसन्न करने वाला विशेषकर मुख शोषमें हितकारक है, क्षुधा तृष्णाका हरने वाला स्वादु शीतल है ॥ २८ ॥

मांसंयदुद्धृतं न तत्पुष्टिवलावहम् ।

विष्टम्भिदुर्जरं रुक्षं नीरसं मारुतावहम् ॥ २९ ॥

जिस मांससे रस निकल गया है वह पुष्ट और बलकारक नहीं होता है वह विष्टम्भि देरमें पचनेवाला रुखा निरस वात का करनेवाला है ॥ २९ ॥

दग्धमत्स्योगुरुवृष्यो बृंहणः प्राणवर्द्धनः ।

क्षीणशुक्राश्वयेकेचित् मग्नजर्जरिताश्वये ॥

नित्यं स्त्रीसेविनश्चैव क्षीणरेतसएव च ।

दग्धमत्स्योहितस्तेषां स तैललवणान्वितः ॥ ३० ॥

जला हुआ मत्स्य भारी वीर्य वर्द्धक है मद जनक और प्राणका बढ़ाने वाला है जो कोई क्षीण वीर्य मग्न और जर्जरित

हैं वा नित्य स्त्री प्रसंग करने वाले क्षीण वीर्य हैं उनके निमित्त तेल लवण युक्त दग्ध मत्स्य हितकारक है ॥ ३० ॥

तस्माद्धीनगुणः किञ्चिद् भृष्टमत्स्य उदाहृतः ॥ ३१ ॥

भुना हुआ मत्स्य कुछ उससे हीन गुणवाला है ॥ ३१ ॥

यथाप्रकृतिनिर्देश्यो व्यञ्जनेषु गुणान्वयः ॥ ३२ ॥

और भी व्यञ्जनो में प्रकृतिके अनुसार गुण जानना ॥ ३२ ॥

कफघ्नो दीपनो हृद्यः शुद्धानां त्रिणिनामपि ।

ज्ञेयः पथ्यतमश्चापि मुद्गयूपः कृताकृतः ॥ ३३ ॥

मूंगका यूप कफ नाशक दीपन हृदयको हितकारक शुद्ध हुए त्रण घालोंको हितकारक है लवणसे युक्त होवा नहीं ॥ ३३ ॥

सतु दाडिममृद्धीकायुक्तः स्याद्रागपाडवः ।

रुचिष्णुर्लघुपाकश्च दोषाणाञ्चाविरोधकृत् ॥ ३४ ॥

वही दाडमी दाखसे युक्त होकर राग पाडव कहलाता है यह रुचिकारक पाकमें लघु दोषोंका अवरोधी है ॥ ३४ ॥

मसूरमुद्गगोधूम कुलत्थलवणैः कृतः ।

कफविताविरोधी स्यात् वातव्याधौ च शस्यते ॥ ३५ ॥

मसूर मूंग गेहूं कुलथी लवणसे सिद्ध किया कफ पित्तका विरोधी होता है और वात व्याधिमें अच्छा कहा है ॥ ३५ ॥

मृद्धीकादाडिमैर्युक्तः स चाप्युक्तोऽनिलादिते ।

रोचनो दीपनो हृद्यो लघुपाक्युपदिश्यते ॥ ३६ ॥

दाडिमीके संग मुनक्का वातव्याधिमें हितकारक है यह रुचिकारक दीपन हृदयको हितकारक और पाकमें लघु है ॥ ३६ ॥

पटोलनिम्बयूपौ तु कफमेदोविशोपिणौ ।

पित्तघ्नो दीपनो हृद्यो किमिकुष्ठज्वरापहौ ॥ ३७ ॥

पटोल और नीमका यूप कफ और मेदका शोषनेवाला है पित्तनाशक दीपन हृदयको हितकारक कृमि और कुष्ठका नाशक है ॥ ३७ ॥

हन्तिमूलकयूपस्तु कफभेदोग्लामयान् ।

श्वासकासप्रसिद्धाय प्रसेकारोचकज्वरान् ॥ ३८ ॥

मूलीका यूप कफ भेद गलेके रोग स्वासकास पीनस प्रसेक अरुचि ज्वरको दूर करताहै ॥ ३८ ॥

मुद्गामलकयूपस्तु ग्राहीपित्तकफेहितः ।

यवकोलकुलत्थानां यूपः कण्ठ्योऽनिलापहः ॥ ३९ ॥

मूंग और आमलेका यूप ग्राही पित्त और कफमें हितकारकहै, जो कोल (कंकोलक) कुलथीका यूप कंठमें हितकारक और घात नाशकहै ॥ ३९ ॥

सर्वधान्यकृतस्तद्वद् बृंहणः प्राणवर्द्धनः ॥ ४० ॥

सम्पूर्ण धानोका किया यूप इसीप्रकार बलकारक बार्जीकर और प्राणवर्द्धनहै ॥ ४० ॥

खड्काम्बलिकौहृद्यो छर्दिवातकफेहितौ ॥ ४१ ॥

खड्क दो प्रकारका होताहै एकतक्र और समी धान्यके सहित, दूसरा मट्ठा और शाक मिलाया हुआ, पहला रूप धान्य खेह अम्ली पदार्थ युक्त होताहै, दूसरा कैप चगिरी (अम्बिलोना) काली मिर्च जीरा चीता डालकर पक किया जाताहै और दही अम्ल लवण खेह तिल उरद संयुक्त होताहै यह खड्क अम्बलिक नामवाले दोनो यूप हृदयको हितकारक छर्दिवात और कफमें हितकारकहै ॥ ४१ ॥

बल्यः कफानिलौहन्तिदाडिमाम्लोऽग्निदीपनः ॥ ४२ ॥

दाडिमी और अम्ल पदार्थोंके साथ किया यूप बलकारक, कफ वातका हरने वाला, अग्नि दीपन करता है ॥ ४२ ॥

धान्याम्लोदीपनोहृद्यः पित्तकृद्वातनाशनः ॥ ४३ ॥

धान्य और अम्ल द्रव्यका यूप दीपन हृदयको हित कारक पित्तकारक वात नाशकहै ॥ ४३ ॥

दध्यम्लः श्लेष्मलोबल्यः स्निग्धोवातहरोयुरुः ॥ ४४ ॥

दही अम्ल पदार्थका यूप श्लेष्मा बलकारक चिकना वात हर और भारीहै ॥ ४४ ॥

तक्राम्लः पित्तकृद्द्रव्योविपरक्तप्रद्वयः ॥ ४५ ॥

तक्र अम्ल यूष पित्त करनेवाला. बलकारक पित्त और रक्तका दूषित करने वालाहै ॥ ४५ ॥

अथगोरसधान्याम्लफलाम्लैरन्वितञ्चयत् ।

यथोत्तरं लघुहितं संस्कृता संस्कृतं रसम् ॥ ४६ ॥

जो यूष गोरस धान्य अम्ल फल अम्ल द्रव्योंसे युक्त है वह उत्त रोत्तर संस्कार * किया हुआ लघु और हिनकारक होता है गोरस अम्लकी अपेक्षा धान्य अम्ल युक्त रस लघु होता है, इत्यादि यह संस्कार युक्त और संस्कार रहित जानना ॥ ४६ ॥

तिलपिण्याकविकृतिः शुष्कशाकं विरूढकम् ।

सिण्डाकी च गुरुणिस्त्युः कफपित्तहराणि च ॥ ४७ ॥

तिलकी पीसी खल सूखाशाक विरूढक (अंकुरित शाक) सिण्डकी यह सब भारी और कफ पित्तके हरने वाले हैं ॥ ४७ ॥

रागपाडवयोगास्तुच्छर्दिमूर्च्छानृपापहाः ।

लघवोवृंहणावृण्या हृद्यारोचनदीपनाः ॥ ४८ ॥

सिता रुचक (काला नीन सेंधानोन अम्ल फालसा जम्बू फलके रसोंसे युक्त राजसरसों मिलाया हुआ राग होता है और पाडव मधुर अम्ल लवण सुगन्धि द्रव्योंसे उत्पन्न हुए अनेक प्रकारके हैं कोई कहते हैं कि गुडके सहित आमकारस पकाकर उसमें खेह और सांठ डालनेसे राग पाडव होता है कोई मृंगके रसमें दाख और अनारकारस मिलानेको राग पाडव कहते हैं यह छर्दिमूर्च्छा नृणाका हरनेवाला है ॥ ४८ ॥

रसालावृंहणीवृण्या स्निग्धावल्यारुचिप्रदा ॥ ४९ ॥

रसाला (दधि संयोग पदार्थ) दालचीनी इलायची तेजपात नागकेशर जीरा गुड अदरक सांठ पीसकर मिलानेसे रसाला

लवण घृत तेल मिरचादिसे रहित असंस्कृत वा अकृत होता है और इन पदार्थोंसे युक्त वा संस्कृत होता है ।

१ तीर भूमिमें प्रसिद्ध है ।

होता है) यह वाजीकर वीर्य वर्द्धक स्निग्ध बलकारक तथा रुचि देनेवाला है ॥ ४९ ॥

दधिस्याहुडसंयुक्तं स्नेहनश्चानिलापहम् ॥ ५० ॥

गुडके साथ दही स्नेहन और वात हर होता है ॥ ५० ॥

द्राक्षाखज्जूरकोलानां गुरुविष्टम्भिपालकम् ।

परुषकाणां क्षौद्रस्य यच्चेशुविकृतिप्रति ॥ ५१ ॥

दाख खजूर कोल (काली मिर्च) का यूप भारी विष्टम्भिहै, फालसे और शहतकी, तथा जो ईखके रसकी विकृतिहै, यह पालक पर्यन्त जो द्रव्य है ॥ ५१ ॥

तेषां कङ्गुलसंयोगात् पालकानां पृथक् पृथक् ।

द्रव्यमानश्चविज्ञाय गुणकर्माणि निर्दिशेत् ॥ ५२ ॥

इनका कटु अम्लके संयोगसे द्रव्यमान पृथक् पृथक् जानकर गुणकर्मक है ॥ ५२ ॥

दुग्धाम्रं शीतलं स्वादु वृष्यं वर्णकरं गुरु ।

वातपित्तहरं रूच्यं बृंहणं बलवर्द्धनम् ॥ ५३ ॥

दुध और आम शीतल स्वादु बल वीर्य करने वाला है, वर्ण कारक और गुरु है वात पित्तहर रुचिकारक वाजीकर बल वर्द्धक है ॥ ५३ ॥

सक्तवः सर्पिषाभ्यक्ताः शीतोदकपरिप्लुताः ।

नातिद्रवा नातिसान्द्रामन्य इत्यभिधीयते ॥ ५४ ॥

शीतल जलसे युक्त घृत सहित सत्तु न बहुत पतले न बहुत घने मन्य कहलाते हैं ॥ ५४ ॥

मन्यः सद्यो बलकरः पिपासाज्वरनाशनः ॥ ५५ ॥

मन्य तत्काल बल करनेवाला, प्यास और ज्वरका नाशक है ५५

साम्लस्नेहगुडोमूत्रकृच्छ्रोदावर्तनाशनः ।

शर्करेश्वरसद्राक्षायुक्तः पित्तविकारनुत् ॥

द्राक्षामधुकसंयुक्तः कफरोगनिवर्द्धनः ।

वर्गवयेणोपहितो मलदोषानुलोमनः ॥ ५६ ॥

और यही मन्थ अम्ल स्नेहके सहित मूत्र कुच्छ और उदा
वर्तका नाशकहै, तथा शर्करा इक्षुका रस और दाखसे युक्त पित्त
विकार नाशकहै, तथा दाख और मधुके संग कफरोग नाशकहै
इस प्रकार अम्ल शर्करा द्राक्षा तीन वर्गोंके साथ मल और
दोषका अन्तु लोभन करनेवालाहै ॥ ५६ ॥

गुर्वीपिण्डी खरात्यर्थं लघ्वीसैवविपर्ययात् ।

सक्तनामाशुजीर्येतमृदुत्वादवलेहिका ॥ ५७ ॥

इति कृतान्नवर्गः ।

सक्तकी पिण्डी भारी है और पतले संतु हलकै हैं संतुओंकी
अवलेहिका (चाटने योग्य) मृदु होनेसे शीघ्रजीर्ण होजातीहै ५७
इति कृतन्नवर्गः ।

वक्ष्याम्यतः परं भक्ष्यान्सर्वीर्यविपाकतः ॥ १ ॥

अब रस वीर्यके विपाकसे भक्ष्य पदार्थोंको कहताहूँ ॥ १ ॥

पृथुकागुरवः स्निग्धाः कफविष्टम्भकारकाः ।

बल्याः सक्षीरभावात्तु वातघ्नाभिन्नवर्जसः ॥ २ ॥

पृथुक (चौले) भारी स्निग्ध कफ और विष्टम्भ कारक बल
कारकहैं और वही क्षीरके भावसे वात नाशक हैं ॥ २ ॥

लाजाश्छर्द्यतिसारघ्नाः स्नेहमेदकफच्छिदः ॥ ३ ॥

खीलैं छर्दि अतिसारकी दूर करनेवाली स्नेह मेद और कफकी
नाश करने वाली हैं ॥ ३ ॥

धानोल्बम्भास्तु लघवः कफमेदोविशोपणः ॥ ४ ॥

धानोंक होले लघु कफ मेदके सोखने वाले हैं ॥ ४ ॥

सक्तवो वातलाक्ष्णा वद्धवर्जस एवच ॥ ५ ॥

सक्तुवातकारक रुखे मलको बांधनेवालेहैं ॥ ५ ॥

भक्ष्याः क्षीरकृतावल्या वृष्णाह्व्याः सुगन्धिनः ।

अदाहिनः पुष्टिकरा दीपनाः पित्तनाशनाः ॥ ६ ॥

दूध लपसी बलकारक वाजी कर हृदयको, हितकारक

सुगन्धि करने वाली है अदाहि पुष्टि कारक दीपन और पित्त कारक है ॥ ६ ॥

घृतपूराः प्राणकरा हृद्याः श्लेष्मविवर्द्धनाः ।

वातपित्तहरा वृष्या गुरवो मांसशुक्लाः ॥ ७ ॥

घृत पूरा प्राणोंको बल देनेवाले हृदयको हितकारक कफके बढ़ानेवाले हैं वात पित्त हर बाजीकर भारी मांस और वीर्यके बढ़ानेवाले हैं (घेवर) ॥ ७ ॥

गौड़िकावृंहणा वृष्या गुरवश्चानिलापहाः ।

अदाहिनः पित्तसहाः शुक्लाः कफवर्द्धनाः ॥ ८ ॥

गौड़िका (गुड़को आटेमें मिलाकर पकाई हुई बृंहण है वीर्य करनेवाली है भारी तथा वात नाशक है अदाही पित्तसहने वाली वीर्यकारक कफ वर्द्धक है ॥ ८ ॥

मधुशीर्षकसंयावाः पूषायेते विशेषतः ।

गुरवोवृंहणाश्चैव मोदकास्तु सुदुर्जराः ॥ ९ ॥

मधु शीर्षक (रसभरी) संयाव * (गुड़िया) पुष्ट यह विशेष करके भारी और बाजी कर है और मोदक (लड्डू) दुर्जर है ॥ ९ ॥

पट्टकः प्राणरुचिकृद्गुरुः स्वय्योऽनिलापहः ॥ १० ॥

पट्टक (लोंग सोंठ मिरच पीपल यह वस्तु दहीमें मथकर डाले और चूर्णकर दाढ़िमके भीज डालनेसे बनता है) यह प्राणोंको रुचि करनेवाला भारी स्वरमें हितकारक वातका हरनेवाला है १०

विष्यन्दः स्तिग्धमधुरो वल्योवातापहो गुरुः ॥ ११ ॥

गेहूँका कसार (धी बूरा मिला हुआ) स्निग्धमधुर वात नाशक और भारी है ॥ ११ ॥

वृंहणावातपित्तघ्ना वल्या भक्ष्यास्तु सामिताः ॥ १२ ॥

बलकारक वात पित्तनाशक बाजी कर द्रव्य गोधूम चूर्णका बना हुआ होता है ॥ १२ ॥

* संयाव गेहूँके आटेको पानी और दूधके साथ मादके उसके सगुहकर घृतमें उतारे इसमें दालचीनी इलायची बड़ी फाळी मिर्च और अदसका पूरा डाले ॥

यथाकारणमासाद्यभोक्तृणां छन्दतोपिवा ।

अनेकद्रव्ययोनित्वाच्छास्त्रतस्तान् विनिर्दिशेत् ॥ २७ ॥

इति भक्ष्यवर्गः ।

पद षड्यवागू तथा राग षाडव सट्टक विचित्र पालक और भी अनेक प्रकारके मूष कटु अम्ल लवण युक्त स्वादु लेह्य पदार्थ तथा फलके उत्पन्न हुए पदार्थ वैद्योंके वाक्यसे बनाये जाते हैं वह भोजन करनेवाले यथा कारणसे वा स्वच्छन्दतासे बनाते हैं अनेक द्रव्योंको उनकी योनिके अनुसार कथन करें ॥ २७ ॥

इति भक्ष्यवर्गः ।

अथाहारविधिं वक्ष्ये विस्तरेणानुपूर्ववशः ॥ १ ॥

अब विस्तार पूर्वक आहार विधि कहता हूँ ॥ १ ॥

आप्तास्थितमसङ्कीर्णं शुचिकार्य्यं महानसम् ॥ २ ॥

रसोई घर श्रेष्ठ पुरुषोंसे स्थित और पवित्र होना चाहिये और बहुत संकीर्णता नहो ॥ २ ॥

तत्रातैः साधितं रम्यमविरुद्धमुपस्कृतम् ।

विपन्नैरगदैर्मन्त्रैर्भिषगन्त्रैर्निवेदयेत् ॥ ३ ॥

वहाँ श्रेष्ठ रसोइये श्रेष्ठ भोजन बनावें जो संयोगसे विरुद्ध नहो विपनाशक औषधी आर मंत्रोक्त युक्तकर उस अन्नको निवेदन करें ॥ ३ ॥

घृतं काष्ण्यायसेदेयं पेयदेयातु राजते ।

फलानि सर्वं भक्ष्यांश्च प्रदद्याद्विदलेषुतु ॥ ४ ॥

घी घृण लोहके पात्रमें देना चाहिये पेया चांदीके पात्रमें फल और सब प्रकारके भोजन पत्तल पर देने चाहिये कोई दलका अर्ध वांसका पात्र करते हैं ॥ ४ ॥

परिशुष्कप्रदिग्धानि सोवर्णेपूपकल्पयेत् ॥ ५ ॥

सूखे और प्रदिग्ध पदार्थ सुवर्णके पात्रोंमें धरे ॥ ५ ॥

प्रद्रवाणि रसांश्चैव राजतेषूपहारयेत् ॥ ६ ॥

और द्रव (पतले) रस चांदीके पात्रोंमें कल्पित करे ॥ ६ ॥

कटराणि खडांश्चैव सर्वान् शैलेषु दापयेत् ॥ ७ ॥

मट्टे दहीके खड़े पदार्थ पत्थरके वर्तनोंमें धरे ॥ ७ ॥

दद्यात्ताम्रमये पात्रे सुज्ञातिं सुज्ञातं पयः ।

पानीयं पालकं मद्यं मृन्मयेषु प्रदापयेत् ॥ ८ ॥

औटाकर शीतल किया दूध ताम्बेके पात्रमें रखना चाहिये
पानी पालक और मद्य मट्टीके पात्रमें रखै ॥ ८ ॥

षड्रवैर्द्रव्यपात्रेषुरागपाडवपट्टकान् ॥ ९ ॥

षष्ठ (हीरे) संयुक्त पात्रोंमें रागपाडव और पट्टकोंको रखै ९

पुरस्ताद्विमले पात्रे सूपं दद्यात्तुपाचकः ।

फलानि सर्वं भक्ष्यांश्च परिशुष्काणि यानि च ॥

तानि दक्षिणपार्श्वे तु भुज्जानस्योपकल्पयेत् ।

प्रद्वान् रसयूपादीन् सव्ये पार्श्वे प्रदापयेत् ॥

सर्वान् गुडविकारांश्च रागपाडवपट्टकान् ।

पुरस्तात् स्थापयेत्प्राज्ञो द्वयोरपि च मध्यतः ॥ १० ॥

और उनके आगे उज्ज्वल पात्रमें दाल भात परोसना चाहिये
तथा फल और सब भक्ष्य पदार्थ शुष्क द्रव्य यह भोजन करने
वालेके दक्षिण और स्थापन करे और गीले रसयूपादिकों बाई
और स्थापन करे सम्पूर्ण गुडके विकार राग पाडव सहस्र इन
दोनों ओरके रखे पदार्थोंके आगे स्थापनकरे ॥ १० ॥

एवं विज्ञायमतिमान् भोजनस्योपकल्पनाम् ।

भोक्तारं विजने रम्ये निःसम्पाते तु भोजयेत् ॥ ११ ॥

बुद्धिमान् इस प्रकार भोजनकी कल्पनाको जानकर भोजन
करने वालेको वात रहित निर्जनमें भोजन करायें ॥ ११ ॥

पूर्वं मधुरमश्रीयात् मध्येऽल्मलवणौ रसौ ।

अन्ते शैपान् रसान् वैद्यो भोजनेऽप्यवधारयेत् ॥ १२ ॥

प्रथम मीठा पदार्थखाय मध्यमें अम्ल और मद्यमय पदार्थ
खाय और अन्तमें दूसरे रसोंको भोजन करे ॥ १२ ॥

अन्नेन कुक्षेर्द्वावंशौ पानेनैकं प्रपूरयेत् ।

आश्रयं पवनादीनां चतुर्थमवशेषयेत् ॥ १३ ॥

कोखके दो भाग अन्नसे और एक भाग पानसे पूराकरे चौथा भाग पवनके आने जानेको खाली रखे ॥ १३ ॥

भुक्त्वापादशतं गत्वा वामपार्श्वेन संविशेत् ।

शब्दान् रूपरसान् गन्धान्स्पर्शाश्च मनसः प्रियान् ।

भुक्तवानुपसेवेत तेनान्नं साधुतिष्ठति ।

भुक्तोपविशतस्तुन्दं शयानस्य वपुर्भवेत् ॥

आयुश्चक्रममाणस्य मृत्युर्धावतिधावतः ।

ताम्बूलमुपसेवेत कर्पूराद्यधिवासितम् ॥ १४ ॥

भोजन करके सौ कदम चले और वाम कर्बटसे लेटे शब्द रूप रसगंध मनके प्रिय पदार्थ पहिले भोजन करने पर सेवन करे इस्से अन्न भली प्रकार स्थित होता है भोजन करके बैठनेसे पेट बढता है लेटनेसे शरीर पुष्टहोता है टहलनेसे आयु बढती है और भोजन कर दौड़नेसे संग मृत्यु दौडती है भोजन करने पर कर्पूरादिसे अधिवासित करताम्बूलका सेवन करे ॥ १४ ॥

ताम्बूलं क्षतपित्ताक्षरुक्षोत्कुपितचक्षुषाम् ।

विषमूर्च्छामदात्तानामपथ्यं शोषिणामपि ॥ १५ ॥

ताम्बूल क्षत पित्त रुधिर विकार वाले नेत्र रोगी विष मूर्च्छासे व्याप्त मदसे आतं हुए पुरुषोंको अपथ्य है ॥ १५ ॥

अन्नमादानकर्मा तु प्राणः कोष्ठं प्रकर्षति ।

तद्द्रवौ भिन्नसंघातं स्नेहेन मृदुतां गतम् ॥

समानेनावधूतोऽग्निरुदीर्यः पवनेन तु ।

काले भुक्तं समं सम्यक् पचत्यायुर्विवृद्धये ॥ १६ ॥

अन्नके ग्रहण कर्मका करने वाला प्राण अन्नको कोष्ठमें खिंचता है वह पानी आदि द्रव पदार्थोंसे मृदुहोकर समान पवनसे निर्धृत होकर शिथिल होता हुआ अग्निद्वारा बुभुक्षाके समय आयु वृद्धिक निमित्त पचता है ॥ १६ ॥

एवं रसमलायान्न माशयस्थ मधस्थितः ।

पचत्यग्निर्यथा स्थाल्या मोदनायाम्बुतण्डुलम् ॥ १७ ॥

इस प्रकार रस और मलके निमित्त आशय में स्थितहुआ अन्न जठराग्निसे इस प्रकार पचता है जैसा बटलोईमें चावल पकते हैं ॥ १७ ॥

अन्नमिष्टं ह्युपहितमिष्टैर्गन्धादिभिः पृथक् ।

देहेप्रीणातिगन्धादीन् घ्राणादीनीन्द्रियाणि च ॥ १८ ॥

इष्ट अन्न जो गन्धादि युक्त सेवन किया है वह गंधादिके सहित देहमें प्राप्त होकर गन्धादि ग्रहण करने वाली नासिकादि इन्द्रियोंको ग्रहण करता है आहारका पार्थिव भागदेहको पुष्टकर घ्राणमें प्राप्त हो उसकी गन्ध और देहकी गन्धको पुष्टकरता है उसी प्रकार जलादि पदार्थ जाने ॥ १८ ॥

भौमाध्याग्नेयवायव्याः पञ्चोष्माणः सनाभसाः ।

पञ्चाहारगुणान् स्वान् स्वान् पार्थिवादीन् पचन्ति हि ॥ १९ ॥

पृथ्वी जल तेज वायु आकाश इनके भाग सूक्ष्म रूपसे सब द्रव्योंमें रहते हैं सो पार्थिव द्रव्योंका पाक अग्निके बिना नहीं होता इसकारण पाँचो द्रव्योंके पदार्थोंमें सूक्ष्म रूपसे अग्नि रहती है इसकारण वे जठराग्निकी प्रबलतासे बलको प्राप्त हो अपने अपने पार्थिवादि पाँच आहारके गुणोंको पचाते हैं द्रव्य व्यापारके वशसे गंधादि होते हैं उस्से गुणोंका पाक कहा है यदि कहोकि तेजतों स्वयं हि अग्नि है पाचकहै उसके निमित्त दूसरी अग्निकी अपेक्षा क्यों है तौ उत्तर यह है कि, हम तेजमें पाचक अग्निको स्वीकार नहीं करते हैं किन्तु जैसे तेजका सुवर्णादि द्रव्य होनेपर भी उसके पाकमें अग्निकी अपेक्षा है इसी प्रकार अग्निका तेज द्रव्यमें है इसीप्रकार और भी जानना ॥ १९ ॥

सप्तभिर्देहधातारो धातवो द्विविधं पुनः ।

यथास्वप्नमग्निभिः पाकं यान्ति किट्टप्रसादवत् ॥ २० ॥

देहके धारण करने वाली सात धातु दो प्रकारकी हैं वे किट्ट प्रसाद (मल और सार) के समान यथायोग्य अपनेमें स्थित

अग्नि द्वारा पाक प्राप्त होती हैं, धातुओंमें जो भूताग्नि है वही उनमें सहाय है ॥ २० ॥

रसाद्रक्तं ततो मांसं मांसान्मेदस्ततोऽस्थि च ।

अस्थोमज्जा ततः शुक्रं शुक्राद्र्भ्रमः प्रसादजः ॥ २१ ॥

इनके पाकसे क्रमसे जो होता है सो कहते हैं, रससे रक्त, रुधिर से मांस, मांससे मेद, मेदसे अस्थि, अस्थिसे मज्जा, मज्जासे धीर्य, और धीर्यके प्रसादसे गर्भ होता है, प्रसादका योग सबके साथ है, प्रसाद नाम सार भागका है, कोई गर्भ प्रसाद सम्पूर्ण पदका अर्थ ओजका करते हैं, इस अर्थमें प्रसाद शब्दका अर्थ सर्वत्र नहीं लगता है, यद्यपि रसरक्त आदिके घननेमें विद्वानोंके कर्ष पक्ष हैं जैसाकी दूधका दही दहीका मक्खन होता है इसी प्रकार रसका रुधिर और उसका क्रमानुसार धीर्य होता है कोई कहते हैं रस पहले रक्तकोप्लावित करता है उसे मांस स्वरूपमें लाकर उसेप्लावितकर मेद करता है जैसा दारीतने कहा है रस सात दिनमें परि वर्तन करता हुआ श्वेत हरित पीत होकर फिर रक्त हो जाताहै वह यथा क्रमदिवसोंमें पित्तके कारण रक्त होजाताहै यही शुश्रुतमें लिखा है रस अपने समीपकी धातुको शीघ्र पुष्ट करताहै दूरकी देरमें, इस मतमें विष्ठा मूत्र आहार मलादिका सार भाग रस कहाहै, वह व्यानद्वारा सब धातुओंको पुष्ट करताहै परन्तु "खले कपोत न्याय" से जैसे दूर स्थित धीर्यभी प्रभावसे शीघ्र आ जाताहै इसी प्रकार बलकारक रस रक्तादि धातुओंको शीघ्र प्लावितकर मेदादि कर देताहै यही पक्षसाधुहै ॥ २१ ॥

रसात् स्तन्यं तथा रक्तममृजः कण्डराः शिराः ।

मांसाद्वसास्त्वचः पट्च मेदसः स्नायुसन्धयः ॥ २२ ॥

अब उपधातुओंका वर्णन करतेहैं रससे दूध तथा स्त्रियोंका आर्तव, रुधिरसे स्थूलनसे, शिरा (छोटीनस) होतीहै मांससे नसा और त्वचा छः, और मेदसे स्नायु सन्धियें होतीहैं शुश्रुतमें लिखाहै रस एक महीनेमें धीर्य होताहै और रज जो है वह रससे रक्तकी समान शीघ्र होताहै, मांसमें नहीं, हां यह घाताहै कि

उसकी गर्भाशयमें प्राप्ति एक महीनेमें होतीहै विश्वामित्रने कहा है कि केशके समान बीजरक्तके वहानेवाली नाडी गर्भाशयको पूर्णकरतीहै, वह एकमासमें बीज रूप होजाताहै, वह बीज भूत रक्तही आर्तवहै ॥ भेदसे सूक्ष्म स्त्रायुका पोषण होताहै, चरकमें कण्डराशब्दस्थूल शिरावाची है, यही स्तन्य आदि सात उपधातु शरीरकी धारण करनेवाली हैं इनमें धातुओंके पुष्ट करनेकी सामर्थ्य नहींहै ॥ २२ ॥

किट्टमन्त्रस्यविण्मूत्रं रसस्य तु कफोमृजः ।

पित्तं मांसस्य खमलामलः स्वेदस्तु मेदसः ॥ २३ ॥

स्यात्किट्टं केशलोमास्थ्यो मज्जः स्नेहोऽस्थि विदित्वचाम्

अपनी अग्निसे पाक होकर जो रसका मल भाग है वह कफहै, वह प्रसादज होकर कफ होताहै रसोत्पत्ति भागसेही कफ नहीं होताहै, इसी प्रकार रक्तादि मलमें जानना, मांसके मल कर्ण नासा स्वेद प्रजनादि स्थानसे निकलते हैं, केशलोम अस्थिका किट्ट होताहै सुश्रुतमें अस्थिका मल तख लिखा है, मज्जा स्नेह अस्थित्वचा इनका मल विदूषणिकाहै, कोई इसका तीन प्रकारसे परिणाम कहतेहैं रसका अग्नि पाकसे मल कफ स्थूल भाग रस सूक्ष्म भाग रक्त है तैसेही रक्तका अग्नि, पाकसे मल पित्त, स्थूल भाग शोणित सूक्ष्म भाग मांस होता है, इसी प्रकार और भीजाना ॥ २३ ॥

प्रसादकिट्टधातूनां पाकादेवं द्विधचुतः ॥ २४ ॥

इस क्रमसे धातुओंके पाक होनेसे प्रसाद किट्ट दो प्रकारका है एक सार भाग एक मल होताहै ॥ २४ ॥

परस्परोपसंस्तम्भा धातुस्नेहपरस्परा ॥ २५ ॥

इसप्रकार धातुओंके स्नेहकी परम्परा (तृप्तकरना) परस्पर सापेक्षहै यह परस्पर उपकारकहैं, यदि अत्यन्त व्ययसे शुक्रक्षय हो जाय तो धातुभी क्षय हो जातीहै ॥ २५ ॥

अन्नस्य पक्ता सर्वेषां पक्वणामधिको मतः ।

तन्मूलास्ते हि तद्रवृद्धिक्षयवृद्धिक्षयात्मकः ॥ २६ ॥

भौतिक पांच प्रकारकी अग्नि सात अन्नकी एक पचानेवाली इन सबमें जठराग्नि प्रधान है उन सबकी क्षय वृद्धि इसीके आधीन है ॥ २६ ॥

तस्मात्तं विधिवद्युक्तैरन्नपानेन्धनैर्हितैः ।

पालयेत् प्रयतस्तस्य स्थितौ ह्यायुर्वलस्थितिः ॥ २७ ॥

इसकारण जठराग्निको अनेक प्रकारके युक्त इन्धन रूपी अन्न पानीसे निरन्तर पालना करता है, इसकी स्थितिमें आयु बलकी स्थिति होती है ॥ २७ ॥

यो हि भुङ्क्ते विधिं मुक्ताग्रहणीदोषनाशदान् ।

स लोल्याल्लभते शीघ्रं तस्मान्नोलङ्घयेद्विधिम् ॥ २८ ॥

जो विधिको त्यागकर भोजन करता है उसकी चंचलतासे उसको ग्रहणी आदि दोष शीघ्र प्राप्त होते हैं, इससे विधिको लङ्घन न करे ॥ २८ ॥

प्राणाः प्राणभृतामन्नमन्नलोकोऽभिधावति ।

वर्णप्रसादसौस्वर्ग्य जीवितं प्रतिष्ठितम् ॥

तुष्टिः पुष्टिर्वलमेधासर्वमन्ने प्रतिष्ठितम् ।

लौकिकं कर्म यदुत्तौ स्वर्गतो यच्च वैदिकम् ॥

कर्मापवर्गं यच्चोक्तं तच्चाप्यन्ने प्रतिष्ठितम् ॥ २९ ॥

इत्याहारविधिः ।

प्राणधारणके प्राणअन्न हैं, अन्नकी ओर लोक आचमान होते हैं वर्ण प्रसाद स्वर जीवित बुद्धि सुख तुष्टि पुष्टि बल मेधा यह सब अन्नमें ही प्रतिष्ठित है वृत्तिमें जो लौकिक कर्म है, स्वर्ग जानेमें जो वैदिक कर्म है मोक्षके कर्म यज्ञादि जो कहें हैं, वह भी सब अन्नमें प्रतिष्ठित हैं इसकारण विधिसे अन्नका सेवन करे ॥ २९ ॥

इत्याहारविधिः ।

शीतोष्णतोयासवमद्ययूपफलाम्लधान्याम्लपयोरसानाम् ।

यस्यानुपानन्तु हितं भवेद्यत्तस्मै प्रदेयं त्विह मात्रया तत् ॥ १ ॥

आहारके उपरान्त सुखसे अन्नपाक होजाय इस कारण अनुपानका सेवन करना बहुत उचित है सो संक्षेपसे कहतेहैं शीत उष्ण जल आसव मद्य यूष फलाम्ल वीजोरानीबू आदि धान्याम्ल कांजी आदि, पयमस्तु तक्रादि, इक्षुरस जिसे जो अनुपान हितकारक है वह मात्राके अनुसारवतनाही उसकोदे।

व्याधिश्च कालश्च विभाव्यधीरै-

द्रव्याणि भोज्यानि च तानि तानि ॥ २ ॥

व्याधि और समयकी भावना करके वह बहु भोज्य पदार्थ खाने चाहिये ॥ २ ॥

स्निग्धोष्णं मारुतेशस्तं पित्तमधुरशीतलम् ।

कफेऽनुपानं रुक्षोष्णं क्षये मांसरसं पयः ॥ ३ ॥

वातकी अधिकतामें स्निग्ध उष्ण पदार्थ हितहैं पित्तमें मधुर शीतलपदार्थ हितहैं कफमें रुखे और उष्णपदार्थका अनुपान हितकारकहैं क्षयमें मांस रस पानकरना उचितहै ॥ ३ ॥

उष्णोदकानुपानन्तु स्नेहानामथ शस्यते ।

ऋते भृष्टातकस्नेहात्तत्रतोयं सुशीतलम् ॥ ४ ॥

स्नेहके ऊपर उष्णोदकका अनुपान श्रेष्ठ कहाहै केवल भिलावे और स्नेहके ऊपर शीतल जलपान करना उचित है ॥ ४ ॥

अनुपानं वदन्त्येके तैले यूषाम्लकाञ्जिकम् ॥ ५ ॥

कोई तैलके ऊपर यूष अम्ल और कांजीका पान करना कहतेहैं

शीतोदकं माक्षिकस्य पिष्टान्नस्य च सर्वशः ।

दधिपायसमद्यात्तं विषदुष्टे तथैव च ॥ ६ ॥

पिसे अन्नपर शीतल जलका पान करना उचित है मद्यसे आर्त द्रुप तथा विषके क्रमसे दही और घृत देना उचित है ॥ ६ ॥

केचित् पिष्टमयस्यादुरनुपानं सुखोदकम् ॥ ७ ॥

कोई पिष्ट पदार्थोंपर कुछ एक गरम जलका अनुपान कहतेहैं

पयोर्मांसरसो वापि शालिमुद्गादिभोजिनाम् ।

पुद्गाध्वातपसन्तापविषमद्यरुजासुच ॥ ८ ॥

चावल मूंगादि भोजन न करनेवालोंको दूध तथा मांसका रस अनुपान कहा है युद्ध आतप सन्ताप विषरोगोंमें भी मांसरस तथा दूधका अनुपान हित है ॥ ८ ॥

मांसादेरनुपानन्तु घान्याम्लं दधिमस्तुवा ॥ ९ ॥

मांसादिके ऊपर दही और मस्तुका अनुपान हित है ॥ ९ ॥

अल्पाग्नीनामनिद्राणां तन्त्राशोकभयकुमैः ।

मद्यमांसोचितानान्तु मद्यमेवानिशस्यते ॥

अमद्यपानामुदकं फलाम्लं वा प्रयोजयेत् ॥ १० ॥

क्षीणाम्नि निद्रा रहित तन्द्रा शोकमय क्लमसे युक्त तथा मद्य मांस देनेके योग्य मनुष्योंको मद्यही श्रेष्ठ है जो मद्यपान नहीं करते हैं उनको जल जंभीरी नीबू आदिका अनुपान हितकर है १०॥

उपवासाध्वभाष्यस्त्रीमारुतातपकर्मभिः ।

कान्तानामनुपानार्थं पयः पथ्यं यथामृतम् ॥

सुराकृशानां स्थूलानामनुशस्तं मधूदकम् ॥ ११ ॥

व्रती मार्गसे आये हुए स्त्री घात धूपसे व्याकुल हुए तथा थकेहुओंको दूधका पान अमृतकी समान है, कृशोंको मद्य हितकारक है और स्थूलोंको मधु मिला हुआ जल हितकारी है ११

निरामयानां चित्रन्तु भक्तमध्ये प्रकीर्तितम् ॥ १२ ॥

और रोग रहितोंको नाना प्रकारका भोजनके मध्यमें कहा है १२

क्षीर मिश्रुरसश्चेति हितं शोणितपित्तिनः ॥ १३ ॥

रक्त पित्त वालोंको दूध और गन्नका रस हितकारी है ॥ १३ ॥

अर्कशेलुशिरीषाणामासवास्तु विपार्त्तिपु ॥ १४ ॥

विषसे व्याकुल हुएको अर्क शेलु लहसोडा शिरीष और आसवका अनुपान हितकर है ॥ १४ ॥

यदाहारगुणैः पानं विपरीतं तदिष्यते

तत्रानुपानं धातूनां दृष्टं यन्नविरोधि च ॥ १५ ॥

जो आहारके गुणोंसे पान विपरीत है और धातुओंका विरोधी नहीं है वही अनुपान कहा है जैसे दही अम्लका मधुर

क्षीर पायसके साथ कांजी आदिका अनुपान है इसप्रकार दही आदि अम्ल पदार्थोंके साथ क्षीर आदिका पान धातुओंका विरोध करता है इससे वह अनुपान नहीं है इसप्रकार औरभी जानना १५

दोषवद्वरुषा भुक्तमतिमात्रमथापि वा ।

यथोक्तेनानुपानेन सुखमन्नं प्रजीर्यति ॥ १६ ॥

जो दोषवत् भारी अथवा बहुत खाया हुआ है वह यथोक्त अनुपानसे सुख पूर्वक जीर्ण होजाता है ॥ १६ ॥

रोचनं बृंहणं वृष्यं दोषघ्नं वातभेदनम् ।

तर्पणं मार्दवकरं श्रमक्लमहरं सुखम् ॥

दीपनं दोषशमनं पिपासाच्छेदनं परम् ।

बल्यं बलकरं सम्यगनुपानं सदोच्यते ॥ १७ ॥

रुचिकारक, वाजीकर बलकारक, दोषनाशक और वातक भेदक नृसकारक मृदुताकारक श्रमक्लम हरनेवाले सुखदायक हैं दीपन दोष शमन कारक पिपासाके छेदनकरने वाले हैं बलयुक्त बल कारक यह गुण सम्यक् अनुपानके हैं ॥ १७ ॥

तदादीकपयेत्पीतं स्थापयेन्मध्यसेवितम् ।

पश्चात्पीतं बृंहयति तस्माद्दीक्ष्य प्रयोजयेत् ॥ १८ ॥

आदिमें जल पीनेसे अधोगत वायुसे रुखा होकर देहको कृश करता है मध्यमें सेवित किया स्थापन करता है पीछे पिया हुआ बलकारक है इसकारण देखकर प्रयोग करे ॥ १८ ॥

स्थिरतां गतिमक्लिन्नमन्नमद्रवपायिनाम् ।

भवत्यावाधजननमनुपानमतः पिवेत् ॥ १९ ॥

जोगिले पदार्थ पान नहीं कर्ता वह अन्न स्थिरता गति और छेद रहितताको प्राप्त होता है, और अवाधा जनक है इसकारण अनुपानको पानकरे ॥ १९ ॥

न पिवेत् श्वासकासात्तो रोगे चाप्यूर्द्धजनुगे ।

क्षतोरस्कः प्रसेकी च यस्य चोपहतः स्वरः ॥ २० ॥

श्वास काससे आर्तहुवा ऊर्ध्वजत्रुके रोगसे युक्त क्षत हृदय प्रसेकसे युक्त वा जिसका स्वर उपहत होगया है वह अनुपान पानन करे ॥ २० ॥

पीत्वाध्वभाष्याव्ययनस्वप्नगेयान्नीलयेत् ।

प्रदूष्यामाशयं तद्धि तस्य कण्ठोरसिस्थितम् ॥

स्यन्दाग्नितादच्छर्वादीन् जनयेदामयान् बहुन् ॥ २१ ॥

अनुपान पान करके मार्गका चलना बहुत बोलना पढ़ना सोना गाना नकरे ऐसा करनेसे यह आमाशयको दूषित करके उसके कण्ठ हृदय और ठरमें स्थित हुए स्यन्दता अग्निताद छर्दि आदि बहुतसे रोगोंको उत्पन्न करतेहैं ॥ २१ ॥

अनुपानं प्रयोक्तव्यं व्याधौ श्लेष्मभवेपलम् ।

पलद्वयन्त्वनिलजे पित्तजे तु पलत्रयम् ॥ २२ ॥

इत्यनुपानविधिः ।

श्लेष्मासे उत्पन्न हुई व्याधीमें अनुपान प्रयोग करना चाहिये जो पल मात्रहो बात व्याधीमें दोपल और पित्तमें तीन पल प्रयोग करना चाहिये ॥ २२ ॥ (१ पल चार तोले)

इत्यनुपानविधिः ।

अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि गुणानां कर्मविस्तरम् ।

कर्मभिस्त्वनुमीयन्ते नानाद्रव्याश्रयागुणाः ॥ १ ॥

अब इसके उपरान्त गुणोंका कर्म विस्तार पृथक् कहताहूँ नाना द्रव्योंके आश्रयी भूत गुण उनके कर्मोंसे जाने जातेहैं ॥ १ ॥

हादनः स्तम्भनः शीतोमूर्च्छातृक्छेददाहजित् ।

उष्णस्तद्विपरीतः स्यात्पाचनश्च विशेषतः ॥ २ ॥

शीतल पदार्थ हृदयको आनन्द करने वाला स्तम्भन कारक शीतमूर्च्छा रग्णा छेद और दाहका जीतने वालाहै उष्ण इसके विपरीत पदार्थहै यह इसके विपरीत गुण वाला है परन्तु पाचन विशेष है ॥ २ ॥

स्नेहमार्दवकृत् स्निग्धो बलवर्णकरस्तथा ।

रूक्षस्तद्विपरीतः स्यात् लेखनः स्तम्भनः खरः ॥ ३ ॥

स्निग्ध पदार्थ स्नेह और मृदुता कारक बलवर्ण करने वाला है रूखा पदार्थ इसके विपरीत गुण वाला लेखन और स्तम्भ न करने वाला है, तथा खर है अर्थात् कर्कश है ॥ ३ ॥

पिच्छिलः पीडनोवत्यः सन्धानः श्लेष्मलोगुरुः ॥ ४ ॥

पिच्छिल पदार्थ पीडा कारक बलदायक सन्धान कारक कफ कारक और गुरु है ॥ ४ ॥

विशदोविपरीतः स्यात्क्लेदावृषणरोपणः ॥ ५ ॥

विशद पदार्थ इसके विपरीत क्लेद हारक और व्रणोंका रोपण करने वाला है ॥ ५ ॥

वाहपाककरस्तोक्ष्णः स्नावणोमृदुरन्यथा ॥ ६ ॥

वाह और पाकका करनेवाला, तीक्ष्ण व्रणघाव करनेवाला है, मृदु इसके विपरीत है ॥ ६ ॥

सादोपलेपबलकृत् गुरुस्तर्पणवृंहणः ॥ ७ ॥

अग्निकासेक बलकारक भारी तृप्तिकारक बाजीकर है ॥ ७ ॥

लघुस्तद्विपरीतः स्यात्लेखनोरोपणस्तथा ।

दशाद्याः कर्मतः प्रोक्ता स्तेषां कर्मविशेषणैः ॥

दशैवान्यान् प्रवक्ष्यामि द्रवादींस्तन्निबोधमे ॥ ८ ॥

लघु इसके विपरीत लेखन और रोपण करनेवाला है, कर्मोंकी विशेषतासे दश आदि कर्म कहें उनमें दशको मैं कहता हूँ उन द्रवादिके कर्मोंको आप मुझसे सुनिये ॥ ८ ॥

द्रवः प्रक्लेदनः सान्द्रः स्थूलः स्याद्द्रन्दकारकः ॥ ९ ॥

द्रव पदार्थ प्रक्लेदन, सान्द्र पदार्थ स्थूल, और द्रन्दकारक है ॥ ९ ॥

श्लक्ष्णः पिच्छिलवज्ज्ञेयः कफलोविपदोयथा ॥ १० ॥

श्लक्ष्ण पिच्छिल पदार्थकी समान जानना, जैसे कफ और विष-दायक पदार्थ है ॥ १० ॥

सुखानुबन्धीसूक्ष्मश्च सुगन्धोरोचनोमृदुः ॥ ११ ॥

सूक्ष्मपदार्थ सुखका अनुबन्धीहै, सुगन्धिवाला पदार्थ रोचन और मृदुहै ॥ ११ ॥

दुर्गन्धोविपरीतोऽस्मात् हृष्टासारुचिकारकः ॥ १२ ॥

दुर्गन्ध पदार्थ दुर्गन्धि करनेवाला, हृष्टास और अरुचिकारकहै ॥ १२ ॥

सरोऽनुलोमनः प्रोक्तो मन्दो यात्राकरः स्मृतः ॥ १३ ॥

सर पदार्थ विगुणवायु मलादिका प्रवृत्त करनेवालाहै मन्द पदार्थ देहकी स्थिति करनेवालाहै ॥ १३ ॥

व्यवायी चाखिलं देहं व्याप्यपाकायकल्प्यते ॥ १४ ॥

भाग पचनेसे पहले व्यवायी सम्पूर्ण देहमें व्याप्त होकर पाक करताहै ॥ १४ ॥

विकासीषिकसन्नेवं धातुबन्धान् विमोक्षयत् ॥ १५ ॥

विकासी जो शरीरकी संधियोंके बंधन और धातुओंके ओज को शिथिलकरे (सुपारी) ॥ १५ ॥

आशुकारी तथाशुत्वांघावत्यम्भसितैलवत् ॥ १६ ॥

आशुकारी पदार्थ शीघ्रगति होनेसे शरीरमें ऐसे फैलता है जैसे जलमें तेल ॥ १६ ॥

सूक्ष्मस्तु सूक्ष्मात्सूक्ष्मेषु स्रोतःस्वनुसरः स्मृतः ।

गुणाविंशतिरित्येवं यथावत्परिकीर्तिताः ॥ १७ ॥

सूक्ष्म पदार्थ रोम कूपोंके द्वारा शरीरमें प्रवेश करता है, यथा तेल यह बीसगुण यथायोग्य वर्णन किये ॥ १७ ॥

दन्तकाष्ठं करञ्जादि रुचिदं दन्तशोधनम् ॥ १८ ॥

करंजादिकी दंतोन रुचिकारक और दांतोंकी शोधन करने वाली है ॥ १८ ॥

जिह्वानिलेखनं वक्रजिह्वावैरस्यजाड्यजित् ।

देवगोविप्रवृद्धानां गुरुणामपि पूजनम् ॥

आयुष्यं वृद्धिदं पुण्यमलक्ष्मीकविनाशनम् ।

मङ्गल्योपासनं शस्तं वृद्धिदं व्यसनापहम् ॥

पादप्रक्षालनं पादमलरोगश्रमापहम् ।

दृष्टिप्रसादनं वृष्यं रक्षोघ्नं प्रीतिवर्द्धनम् ॥
 नेत्रमञ्जनसंयोगात् भवेच्चाभिलतारकम् ।
 लाघवं कर्मसामर्थ्यं स्थैर्यं क्लेशसहिष्णुता ॥
 दोषक्षयोऽग्निवृद्धिश्च व्यायामादुपजायते ।
 वातपित्तामयीवालो वृद्धोऽजीर्णात् तं त्यजेत् ॥
 मेदोहरः स्थैर्यकरो गौरवव्याधिनाशनः ।
 अभ्यङ्गो मार्दवकरो वातश्लेष्मविनाशनः ॥
 उद्धर्तनं स्थिरकरं कफमेदोविनाशनम् ।
 स्नानं दीपनमायुष्यं वृष्यं स्वर्यं बलप्रदम् ॥
 कण्डूमलकफस्वेदतन्द्रातृद्वाहपाप्मजित् ।
 उष्णाम्बुनाथः कायस्य परिपेको बलावहः ॥
 तेनैव तूत्तमाङ्गस्य बलकृत्केशचक्षुषोः ।
 आलेपनं वृष्यतरं बल्यं दुर्गन्धपाप्मजित् ॥
 वासोनवं निर्मलञ्च श्रीमत्पारिपदं शुभम् ।
 हर्षणं काम्यमौनस्यं रत्नाभरणधारणम् ॥
 रजोवश्याय सूर्याशु हिमानिलनिवारणम् ।
 प्रतिश्यायशिरःशूलहरञ्चोष्णीषधारणम् ॥
 ईतेर्विधमनं बल्यं गुह्यावरणशंकरम् ।
 धर्मानिलरजोम्बुघ्नं छत्रधारणमुच्यते ॥ १९ ॥

जिह्वाका लेखन करनेवाली मुख और जिह्वाकी विरसताको
 जीतनेवाली है, देवगो बाह्यण वृद्धोंका पूजन गुरुपूजन आयुवृद्धि
 और पुण्यका देनेवाला अलक्ष्मीका नाशक है, मंगलकी उपासना
 श्रेष्ठ, वृद्धि देनेवाली, व्यसनकी दूर करनेवाली है, चरणधोना
 चरणोंके रोम मल और श्रमका नाश करनेवाला है, दृष्टिका प्रसन्न
 करनेवाला बलकारक राक्षस नाशक प्रीति वर्द्धक है, नेत्रोंका
 आजना पुतलीको निर्मल करता है लघुता कर्ममें सामर्थ्य स्थिरता

केशके सहनकरनेकी सामर्थ्य दोष क्षय अग्नि वृद्धि कसरत करनेसे होती है, वात पित्तके रोगवाला वृद्ध अजीर्णवाला कसरत न करे। तेलका मलना मृदुताकारक वात कफ नाशक है चूर्णका मालिश स्थिरता करनेवाला कफ और मेदका नाशक है स्नान दीप्तिकारक आयुवर्द्धक बलकारक स्वर और बलका करनेवाला है खुजली मल कफ स्वेद तन्द्रा (आलस्य) तृषा दाह और पापका जीतनेवाला है गरम जलसे शिरको छोड़ नीचेकी देहका धोना बलकारक है और उसीसे शिरपर परिषेक करना केश और नेत्रोंको बलकारक है आलेपन (चन्दनादि) बाजीकर बलकारक दुर्गन्ध और पापका जीतनेवाला है नवीन वस्त्र धारण करना निर्मल शोभा सभ्यताका देनेवाला है, रत्नके गहने पहननेसे प्रसन्नता काम और बलके देनेवाले हैं और रज शरदी सूर्य किरण हिम वातकी निवारण करनेवाली तथा पीनस शिरशूल की हरनेवाली पगड़ी है, इसका शिरपर धारण करना उपरोक्त गुण करता है, पिशाचादिसे रक्षा आगामि दुर्दैवकी विधातक है छत्रीके धारण करनेसे धूप वात रज जलसे रक्षा होती है ॥१९॥

स्खलतः संप्रतिष्ठानं शत्रूणाञ्च निवारणम् ।

अवष्टम्भनमायुष्यं भयघ्नं दण्डधारणम् ॥

पादाभ्यङ्गस्तु चक्षुष्यो निद्राकृत्पाण्डुरोगहा ।

सम्बाहनं मांसरक्तत्वक् प्रसादकरं परम् ॥

प्रीतिनिद्राकरं वृष्यं कफवातश्रमापहम् ।

निद्रायत्तं सुखं दुःखं पुष्टिः कार्यं बलावलम् ॥

वृषताक्रीवताज्ञानमज्ञानं जीवितं न च ॥ २० ॥

दण्डका धारण करना गिरनेसे घबाना शत्रुका निवारण करना अवष्टम्भन आयुका देनेवाला और भयका नाशक है चरणोंका मालिश नेत्रोंको हितकारक निद्रा कारक चरण रोग नाशक है सम्बाहन (चरण दवाना आदि) मांसरक्त त्वचाका प्रसन्न करनेवाला है प्रीति और निद्रा कारक बलकारक कफ वात और श्रमका निवारण करनेवाला है सुख दुःख पुष्टि कृशता

बल अवल वृषता नपुंसकता ज्ञान अज्ञान मृत्यु यह सब निद्राके आधीन हैं ॥ २० ॥

अकालेऽतिप्रसङ्गाच्च नच निद्रा निषेविता ।

सुखायुपीपराकुर्व्यात्कालरात्रिरिवा परा ॥

रात्रौ जागरणं रूक्षं स्निग्धं प्रस्वपनं दिवा ।

अरूक्षपनमिष्यन्दिवासीनं प्रचलायितम् ॥ २१ ॥

जो समयपर अति प्रसंगसे निद्रासेवन नहीं करताहै उसकी सुख आयुनष्ट होती और यह कालरात्रिकी समान है रात्रिमें जागरण करना रूखापन करता है दिनमें सोना स्निग्धता करता है बैठे २ ऊँघना अरूखापन और अनभिष्यन्दि है ॥ २१ ॥

आस्यावर्णवलश्लेष्मसौकुमार्यकरीसुखा ।

तालवृन्तोद्भवं वार्तं त्रिदोषशमनं विदुः ॥

वंशव्यजनजः सोष्णोवातपित्तप्रकोपनः ।

चामरी वस्त्रवातश्च मायुरोवेन्नजस्तथा ॥

एते दोषनितावाताः स्निग्धाहृद्याः सुपूजिताः ।

निवातमारोग्यकरं सुखवातं श्रमापहम् ॥

प्रवार्तं रौक्ष्यवैवर्ण्यस्तम्भकृद्वाहपित्तनुत् ।

प्राग्वायुरुष्णोऽभिष्यन्दीत्वग्दोषाशोविपक्रिमीन् ॥

सन्निपातज्वरं श्वासमामवातश्च कोपयेत् ।

पश्चिमः शिशिरोहन्ति मूर्च्छां दाहं तृषां विषम् ॥

प्राग्गुणो दक्षिणः प्रोक्त उत्तरःपश्चिमानुगः ॥ २२ ॥

तालके पत्तेकी पवन मुखका वर्ण बल श्लेष्मा सुकुमारता करने वाली है और यही ताड़के पंखेकी हवा त्रिदोषके शान्त करने वाली है यांसके पंखेकी पवन उष्ण और वात पित्तकी कोप करने वाली है चंदर और बस्त्रकी पवन तथा मोर और बेंतके पंखेकी पवन वातके दोषोंको जीतनेवाली स्निग्ध हृदयको दितकारक और श्रेष्ठ है । निवात आरोग्य कारक सुरापवन श्रमहरनेवाली है

अत्यन्त पवन रूखापन विवर्ण स्तम्भकारक दाह और पित्तको जीतनेवाली है, पूर्वकी 'पवन गरम' अभिष्यन्दी त्वचाके दोष बवासीर विष कृमि सन्निपात ज्वर श्वास और आमवातकी कोप करनेवाली है पश्चिमकी शिशिर है मूर्च्छा दाह तृषा विषकी नाशक है पूर्वकी समान दक्षिणकी और पश्चिमकी समान उत्तरकी पवन होती है ॥ २२ ॥

विश्वग्वायुरनायुष्यः प्राणिनां नैकरोगकृत् ।
 धूमः पित्तानिलौ कुर्यादवश्यायः कफानिलौ ॥
 अग्निर्वातकफस्तम्भशीतवेपथुनाशनः ।
 आमभिष्यन्दश्मनो रक्तपित्तप्रकोपनः ॥
 आतपः कटुको रुक्षश्छायामधुरं शीतल ।
 ज्योत्स्नाकषायमधुरादाहामृक्पित्तनाशिनी ॥
 तमोभयावहं तिक्तं कुञ्जटिः कफपित्तल ॥ २३ ॥

सब ओरकी वायु आयुकी हरनेवाली प्राणियोंकी अनेक रोग करती है धूम पित्त और वातका करनेवाला है लुकाम कफ और वातका करनेवाला है अग्नि वात कफ स्तम्भ और कफकफीका नाश करने वाला है आम अभिष्यन्दका शान्त करने वाला तथा रक्त पित्तका कोप करनेवाला है धूम कटु रुखी है छाया मधुर और शीतल है ज्योत्स्ना (चांदनी) कसेली मधुर दाह रुधिर और पित्तका नाश करने वाली है अंधकार भयदायक तिक्त और कुहरा कफ और पित्तका करनेवाला है ॥ २३ ॥

शीताभिष्यन्दिनी वृष्टिस्तन्द्रानिद्रावलप्रदा ।
 देशोधन्वामरुत्पित्तकरो रुक्षोष्ण एव च ॥
 आनूपस्तुहिमः सिग्धो वातशुष्मकरो गुरुः ।
 साधारणः समगुणः सर्वरोगापहः स्मृतः ॥
 हेमन्तः शीतलः सिग्धः स्वादुरग्नेश्च वृद्धिकृत् ।
 शिशिरः शीतलः किञ्चित् रुक्षस्तद्विणोनिः ॥ २४ ॥

वसन्तस्तुवरः सोष्णकफव्याधिसमीरणः ।
 ग्रीष्म उष्णोऽतिरूक्षश्च कटुको बलहानिकृत् ॥
 वर्षाः शीताविदाहिन्यो वह्निमांथानिलात्तिदाः ।
 शरत्पित्तकफप्रायास्निग्धोष्णाशस्य वृद्धिकृत् ॥
 पूतिमांसं स्त्रियोवृद्धा बालार्कस्तरुणं दधि ।
 प्रभाते मैथुनं निद्रा सद्यः प्राणहराणि पदम् ॥
 सद्योमांसं नवान्नञ्च बालास्त्री क्षीरभोजनम् ॥
 घृतमुष्णोदकञ्चैव सद्यः प्राणकराणि पदम् ॥
 सन्तताध्ययनं वादः परतन्त्रावलोकनम् ॥
 तद्विद्याचार्यसेवा च बुद्धिमेधाकरो गणः ॥
 आयुष्यं भोजनं जीर्णवेगानामविधारणम् ।
 ब्रह्मचर्यमहिंसा च साहसानाञ्च वर्जनम् ॥ २४ ॥

वृष्टि शीतकी प्रकट करनेवाली तन्द्रा निद्रा और चर्लकी करनेवाली है मरुदेश वात पित्त करनेवाला रूखा और उष्ण है अनूपदेश शीतल चिकना वातकारक श्लेष्माकारक तथा गुरु है । साधारण देश समान गुणवाला सर्व रोगका हरनेवाला कहा है हेमन्तऋतु शीतल स्निग्ध स्वादु और अग्निकी वृद्धि करनेवाली है । शिशिरऋतु शीतल किञ्चित् रूखी तीक्ष्ण वात और अग्निकी करनेवाली है वसन्त ऋतु सर्व श्रेष्ठ उष्ण कफ व्याधि और वातकारक है । ग्रीष्मऋतु गरम बहुत रूखी कटु बलहानि करनेवाली है । वर्षा ऋतु शीत विदाही अग्निमन्दता वातका कष्ट देने वाली है । शरद ऋतु पित्त कफ युक्त है स्निग्ध उष्ण और खेतीकी वृद्धिकरनेवाली है दुर्गधि वाला मांस वृद्धस्त्री प्रातःकाल की घृष तत्कालका दही प्रभात कालमें मैथुन और सोना यह छह वस्तु तत्काल प्राणोंकी हरने वाली हैं । ताजा मांस नवीनअन्न बालस्त्री क्षीरभोजन घृत (गुरुपूजा) गरम जल, यह तत्काल प्राणकी देनेवाली वस्तु हैं ! निरन्तर पढ़ना विवाद पुराने ग्रंथोंका अवलोकन करना उस उस विद्याके आचार्यकी सेवा करनी मेधा और बुद्धिकी करने

वाली है । जीर्ण होनेपर भोजन करना आयुका करनेवाला है तथा वेगोंका न रोकना ब्रह्मचर्ययुक्त अहिंसा और साहसका न करना यह आयुका करनेवाला है ॥ २४ ॥

तन्त्राणां सारमाकृष्यद्रव्याणां गुणसंग्रहः ।

भिषजामुपकाराय रचितश्चक्रपाणिना ॥ २५ ॥

अनेक तन्त्रोंका सार लेकर वैद्योंके उपकारके निमित्त द्रव्यों के गुण संग्रहकर यह द्रव्य गुण चक्रपाणिने किया है ॥ २५ ॥

श्रीवैद्यमहोमहोपाध्यायश्रीमच्चक्रपाणिदत्तकृतद्रव्यगुणसंग्रहः षण्णित ज्वाला-
प्रसाद मिश्रकृत भाषाटीकासहितः समाप्तः ॥ १ ॥

अथ ग्रन्थान्तरोक्तनानौषधपरिच्छेदः ।

विल्वमूलं मरुच्छेष्य छर्दिघ्नं रक्तपित्तजित् ।

पाटला कफवातघ्नी श्योनाको आहि दीपकः ॥ १ ॥

बेलकी जड़ वात श्लेष्मा छर्दिकी नाशक रक्त और पित्तकी जीतने वाली है पाटल कफ वात नाशक सोनागाछ आही और दीपन है ॥ १ ॥

गम्भारीमूलप्रत्यूष्णमहितं मानसेषुतत् ।

गणिकारीतु शोथघ्नी हितावातविकारिणाम् ॥ २ ॥

गंभारी (कुम्भेर) की जड़ बहुत गरम मनको अहित कारक है (मदन मादनी) शोथनाशक, वातविकार वालोंको हितकर है ॥ २ ॥

एरण्डमूलं शूलघ्नं वृष्यं वातकफापहम् ।

गोक्षुरो मूलकृच्छ्रघ्नी वल्यो वृष्योऽनिलापहः ॥

एरण्डकी जड़ शूलनाशक बलकारक वात और कफ नाशक है, गोखरू मूत्रकृच्छ्र नाशक बलकारक वाजीकर वात नाशक है ॥ ३ ॥

उष्णावातकफश्वासकासघ्नी कण्टकारिका ।

बृहती पाचनी सोष्णा आहिणी वातनाशिनी ॥ ४ ॥

कटेरी गरम है वात कफ श्वासकी नाश करनेवाली है, बड़ी कटेरी गरम आहिणी वात नाशिनी है ॥ ४ ॥

शालपर्णी पृश्निपर्णी ग्राहिणी कफपित्तजित् ।

स्निग्धारुच्या बला वृष्या ग्राहिणी वातपित्तजित् ॥५॥

शालपर्णी पृश्निपर्णी ग्राहिणी कफ और वातकी जीतने वाली है खरैटी स्निग्ध रुचिकारक बलकारक बाजीकर ग्राही वात पित्तकी जीतने वाली है ॥ ५ ॥

तद्वन्नागबलात्यर्थं कृच्छे क्षीणे क्षते हिता ।

अश्वगन्धा तु वातघ्नी बल्या वृष्या रसायनी ॥ ६ ॥

हस्तीप्रकार नागबला कृच्छ्र क्षीण और क्षतमें अत्यन्त हित कारक है, असगंध वातनाशक बलकारक बाजीकर और रसायन है ॥ ६ ॥

शतावरीवातपित्तमेहकुष्ठहरासरा ।

हस्तिकर्णः परं वृष्यो मेधायुर्वलवर्धनः ॥ ७ ॥

शतावरी वात पित्त प्रमेह कुष्ठ हरनेवाली सारक है हस्तिकर्ण (पलाश) परम बाजीकर मेधा आयु बलका बढ़ाने वाला है ॥ ७ ॥

वातपित्तहरा सोष्णावल्यावृष्या प्रसारणी ।

मापपर्णी महावृष्या चक्षुष्या मुद्रपर्णिका ॥ ८ ॥

प्रसारिणी (पसरन) वात पित्तकी हरनेवाली, गरम, बलकारक बाजीकर है, मापपर्णी महाबलकारक है मुद्रपर्णी नेत्रोंको हितकारक है ॥ ८ ॥

विशाला कफवातघ्नी चक्षुष्या मूत्रकृच्छ्रजित् ।

शारिवावातपित्तामृक्त्वृद्धिर्द्विज्वरनाशिनी ॥ ९ ॥

विशाला (इन्द्रायन) कफ वात नाशक नेत्रोंको हितकारक मूत्रकृच्छ्रकी जीतनेवाली है शारिवा वात पित्त रुधिर क्षय छर्दि ज्वरकी नाशकरनेवाली है ॥ ९ ॥

अनन्ताग्राहिणी रक्तपित्तप्रशमनीहिमा ।

गुन्द्रापित्तास्रदाहघ्नी चक्षुष्या मूत्रकृच्छ्रजित् ॥ १० ॥

अनन्तमूल ग्राही रक्त पित्त प्रशान्त करनेवाली शीतल है

प्रियंगु पित्त रुधिर दाह नाशक, नेत्रोंको हितकारक मूत्रकृच्छ्र जीतनेवाली है ॥ १० ॥

लोध्रोमृक्कफपित्तघ्नश्चक्षुष्यः शोथजित्सरः ।

तद्वच्चवरलोध्रोपि चक्षुष्यो मृदुरेचनः ॥ ११ ॥

लोध रुधिर कफ और पित्तका नाशक नेत्रोंको हितकारक शोथका जीतनेवाला सारकहै, इसीप्रकार पठानीलोध नेत्रोंको हितकारक मृदु रेचकहै ॥ ११ ॥

मज्जिष्ठाकुष्ठवैस्वर्यशोथघ्नी वर्णदीपनी ।

लाक्षाभग्नवितर्पघ्नी वलया त्वग्दोषनाशिनी ॥ १२ ॥

मजीठ कुष्ठ विस्वर शोथनाशक वर्ण दीप्तिकारकहै, लाख भग्न और वितर्परोगनाशक बलकारक त्वग्दोष नाशकहै ॥ १२ ॥

प्रपौण्डरीकं चक्षुष्यं शिशिरं व्रणरोपणम् ।

जीवन्ती श्वासकासघ्नी स्वर्या च क्षयनाशिनी ॥ १३ ॥

प्रपौण्डरीक शालपर्णीकी बराबर पत्तेवाली (पुण्डरिया) नेत्रोंको हितकारक ठंडी घणरोपण करनेवालीहै जीवन्ती श्वास कास नाशकरनेवाली स्वरकारक क्षयनाशक है ॥ १३ ॥

अष्टवर्गोऽत्रपित्तघ्नो व्रणहा वातपित्तनुत् ।

मधुकं रक्तपित्तघ्नं व्रणशोधनरोपणम् ॥ १४ ॥

अष्टवर्ग (जीरा ऋषभक मेदा महामेदा ऋद्धि वृद्धि काकोली क्षिरिकाकोली) रक्त पित्त नाशक व्रणनाशक वात पित्त नाशक है मुलेठी रक्त पित्त नाशक वृणके शोधन रोपण करने वालीहै ॥ १४ ॥

पार्थः पथ्यः क्षते भग्ने रक्तस्तम्भनकृच्छ्रयोः ।

अस्थिभग्नेऽस्थिसंहारो हितो वल्योऽनिलापहः ॥ १५ ॥

अर्जनवृक्ष क्षतमेंपथ्य भग्नमेंपथ्य रक्तकृच्छ्रमें हितकारक स्तम्भन करनेवालाहै हाडभांगा अस्थिभग्नमें हितकारकहै बलदायक वात नाशक है ॥ १५ ॥

भृङ्गराजस्तु चक्षुष्यः केश्यः पाण्डुकफापहः ।

तद्गुणः केशराजोऽपिवह्निकृच्च रसायनः ॥ १६ ॥

मांगरा नेत्रोंको हितकारी केशोंको हितकारी पाण्डु कफ रोगका दूर करने वाला है उसी प्रकारका केशराज (भंगर) अग्नि कारक और रसायन है ॥ १६ ॥

दण्डोत्पलद्वयं श्वासकासजिद्वह्निदीपनम् ।

रुदन्ती वह्निकृद्गुण्या पित्तघ्नी च रसायनी ॥ १७ ॥

दण्डोत्पल (क्षुप) दोनों श्वासकास नाशक तथा अग्निके दीपन करने वाले हैं रुदन्ती (चनेकेसे पत्तेवाली) क्षुप अग्नि करने वाली बाजीकर पित्त नाशक रसायनी है ॥ १७ ॥

तालमूली हिता वाते ग्राहिणी च रसायनी ।

द्रोणपुष्पी कफाशोभी कामलाकृमिशोथजित् ॥ १८ ॥

ताल मूली श्वातमें हित ग्राहिणी और रसायनी है द्रोणपुष्पी कफ और अर्श रोगकी नाश करनेवाली कामला कृमि और शोथ रोगकी जीतने वाली है ॥ १८ ॥

शोथघ्नी कासदा कण्ठचा विषघ्नी गिरिकर्णिका ।

वृश्चिकालीविषघ्नी तु कासमारुतनाशिनी ॥ १९ ॥

गिरिकर्णिका (विष्णु क्रान्ता) शोथ कास नाशक कण्ठको हितकारक और विष नाशक है वृश्चिकाली (क्षुप बिच्छाटी) विष नाशक खांसी और श्वात नाशक है ॥ १९ ॥

अर्हिस्ताविपशोथघ्नी तद्वर्णैव सुदर्शना ।

भार्गीतुश्वासकासघ्नी गुञ्जाकुष्ठव्रणापहा ॥ २० ॥

सुदर्शना (शुक्ल नाम) अर्हिस्ता विष और शोथका नाश करनेवाला है भारंगी श्वास खांसीकी नाश करनेवाली है चौटली कुष्ठ और व्रण दूर करती है ॥ २० ॥

सूर्यावर्त्तोविवंधघ्नः सैरीयः कफवातजित् ।

आमवातानिलासघ्नौ कोकिलाक्षकुलाहकौ ॥ २१ ॥

दूर दूर विघ्न नाशकहै, झिण्टी कफ और वातकी जीतने वाली है कोकिलाक्ष कुलाहक (लाल तालमखाना) आमवात और रक्तविकारको दूर करनेवालेहैं ॥ २१ ॥

हलिनीकरवीरश्च कुष्ठदुष्टव्रणापहौ ।

कोपातकी कफाशौघ्री पक्वामाशयशोधनी ॥ २२ ॥

हलिनी करवीर (कलिहारी, केनेर) कुष्ठ और दुष्ट व्रणको दूर करते हैं, कोपातकी कफ और अर्श रोगकी हरनेवाली पक्व आमाशय शोधनी है ॥ २२ ॥

मेध्याज्योतिष्मतीतीक्ष्णव्रणविस्फोटनाशिनी ।

वयःसंस्थापनी ब्राह्मी मेधायुर्वलवर्द्धिनी ॥ २३ ॥

ज्योतिष्मती बुद्धि कारक तीक्ष्ण व्रण और विस्फोटक नाशने वाली है, ब्राह्मी वयकी स्थापन करनेवाली, मेधा आयु और बलकी बढ़ानेवाली है ॥ २३ ॥

षचायुष्या वातकफतृष्णाघ्नी स्मृतिवर्द्धिनी ।

शक्राशनन्तु तीक्ष्णोष्णं मोहकृत्कुष्ठनाशनम् ॥ २४ ॥

वच आयुकी बढ़ानेवाली वात कफ तृष्णानाशक स्मृति बढ़ानेवाली है, और शक्राशन (भाग) तीक्ष्ण, गरम, मोह करने वाली तथा कुष्ठ नाशकहै ॥ २४ ॥

बलमेधाग्निकृत् श्लेष्मदोषहारिरसायनम् ।

शंसपुष्पी तु तीक्ष्णोष्णा मेध्याकिमिविपापहा ॥ २५ ॥

बल बुद्धि और अग्निकी करनेवाली, श्लेष्म दोष हरनेवाली रसायनहै शंसपुष्पी तीक्ष्ण उष्ण पवित्र बुद्धि करनेवाली कृमि और विष हरनेवालीहै ॥ २५ ॥

शिरीषो निपवीसर्पस्वेदत्वग्दोषशोथजित् ।

दूर्वा तु रक्तपित्तघ्नी कण्डूत्वग्दोषनाशिनी ॥ २६ ॥

सिरस विष विसर्प त्वचा दोष तथा शोथ रोगका जीतने वालाहै, दूर्वा रक्त पित्त नाशक खुजली और त्वचाका दोष नाश करतीहै ॥ २६ ॥

हरिद्रा कफपित्तघ्नी कण्डू त्वग्दोषनाशिनी ।

तद्वद्दार्वा विशेषेण कफाभिष्यन्दनाशिनी ॥ २७ ॥

हलदी कफ और पित्त नाशकहै, खुजली और त्वचाके दोषको दूर करतीहै, इसी प्रकार विशेषकर दारुहलदी कफ आभिष्यन्द को दूर करतीहै ॥ २७ ॥

अवल्गुजो वातकफपित्तत्वग्दोषनाशनः ।

तद्वदेडगजो गुल्मोदरार्शः कुष्ठजित्कटुः ॥ २८ ॥

सोमराजी घात कफ पित्त और त्वचाके दोषको नष्ट करतीहै इसीप्रकार चकवड़ गुल्म उदर अर्श कुष्ठजित और कटुहै ॥ २८ ॥

करञ्जनिम्बजफलं क्रिमिकुष्ठप्रमेहजित् ।

विडङ्गमीपत्तिकन्तु क्रिमिघ्नं विपनाशनम् ॥ २९ ॥

करंज और नीमके फल कृमि कुष्ठ और प्रमेहरोगको जीतते हैं, वायविडङ्ग कुष्ठ तित्त कृमि और विषकी नाश करने वालीहै ॥ २९ ॥

रेणुकाकफवातघ्नी दीपनी पित्तकृच्छ्रुः ।

भूर्जो वल्यः कफास्रघ्नः शिशपा वातनाशिनी ॥ ३० ॥

रेणुका (विख्यात है) कफ वात नाशक दीपनी पित्त करने वाली तथा लघुहै, भूर्जपत्र बलकारक कफ रुधिर विकारनाशक है, शिशम वात नाशक है ॥ ३० ॥

आस्फोता विषकुष्ठघ्नी तिनिशो दाहपित्तनुत् ।

धातकीकुसुमं शीतं रक्तपित्तातिसारनुत् ॥ ३१ ॥

आस्फोता (हापरमाली) विषकुष्ठ नाशक है, तिनिश (तिरिच्छ) दाह पित्तका दूर करनेवाला है धातकी फूल ठंडे पित्त और अति सारके दूर करनेवालेहैं ॥ ३१ ॥

असनः कफपित्तघ्नः कदरो दन्तदाढ्य कृत् ।

निम्बः पित्त कफच्छर्दिघ्नणहृत् वातकुष्ठनुत् ॥ ३२ ॥

असन कफ पित्त नाशक हैं, श्वेतसैर दांतोंको दृढ करने

वालाहै नीम कफ पित्तछर्दि व्रणका हरनेवाला वातकुष्ठको दूर करता है ॥ ३२ ॥

महानिम्बः परं ग्राही कपायोऽम्लश्च शीतलः ।

भूनिम्बो वातलो रुक्षः कफपित्तज्वरापहः ॥ ३३ ॥

महा निम्ब अत्यन्तग्राही कपेला अम्ल शीतल है, भूनिम्ब (चिरायता) वात कारक सूखा, कफ पित्त और ज्वरका हरने वाला है ॥ ३३ ॥

पर्पटः पित्तहृदाहज्वरजित् कफशोपणः ।

पाठातिसारशमनी लघ्वादोषत्रयापहा ॥ ३४ ॥

पित्तपापड़ा वातका हरने वाला दाह ज्वरका जीतनेवाला तथा कफका शोपनेवालाहै, पाठ अतिसार शान्त करने वाला लघु विदोष दूर करनेवालाहै, ॥ ३४ ॥

कुटजः कफपित्तास्रत्वग्दोषाशोतिसारजित् ।

तद्बीजं ज्वरजित्तिकं रक्तपित्तातिसारजित् ॥ ३५ ॥

कुटज (इन्द्रजा) कफ पित्त रुधिर त्वचादोष अर्श और अतीसारका जीतने वालाहै, उसकाबीज ज्वरका जीतनेवाला तिक्तहै रक्त पित्त तथा अतीसारका जीतने वाला है ॥ ३५ ॥

ह्रीवेरं छर्दि हृल्लासतृष्णातीसारनाशनम् ।

मुस्तकं तिक्तकटुकं वातघ्नं ग्राहिदीपनम् ॥ ३६ ॥

ह्रीवेर (सुगंधवाला) छर्दि हृल्लास तृष्णां अतीसारका नाश करनेवालाहै भोथा तीखा कटुवातनाशक ग्राही और दीपनहै ३६

पाचन्यतिविपातिका ग्राहिणी दोषनाशिनी ।

शृङ्गी कफानिलश्वासकासहिका ज्वरापहा ॥ ३७ ॥

अतीस पाचन तीखा तथा ग्रहणीके दोष नाश करनेवालाहै, फाकड़ासींगी कफ वात श्वास कास हिचंकी ज्वरके दूर करने वालीहै ॥ ३७ ॥

कट्फलं कफरोगघ्नं श्वासकासज्वरापहम् ।

कुष्ठं वातकफश्वासकासहिकाज्वरापहम् ॥ ३८ ॥

कायफल कफरोग नाशक, श्वास कास और ज्वरका नाशक है,
कूठ वात कफ श्वास कास हिचकी और ज्वरका हरनेवाला है ॥ ३८ ॥

शोभाजनः कटुस्तिक्तः शोथविद्रधिगुल्मनुत् ।

यापः सरो ज्वरच्छर्दिश्लेष्मपित्तविसर्पजित् ॥ ३९ ॥

शोभाजन (सेंजना) कटु तीखा शोथ विद्रधि और गुल्मका
दूर करनेवाला है, डुरालभा सारक ज्वर छर्दि श्लेष्मा पित्त विसर्प
रोगोंको जीतनेवाला है ॥ ३९ ॥

कटुकी तु सरारूक्षाकफपित्तज्वरापहा ।

रास्त्रा शोथामवातघ्नी त्रायन्ती कफवातनुत् ॥ ४० ॥

कटुकी रुखी कफ पित्त तथा ज्वरकी हरनेवाली है रास्त्रा शोथ
आमवातकी नाश करनेवाली है, त्रायन्ती (त्रायमाण बला
लता) कफ और घात नाशक है ॥ ४० ॥

वरुणोनिलशूलघ्नो भेदी चोष्णोऽमरीहरः ।

पुष्पं वरुणजं ग्राहिपित्तप्रमामवातजित् ॥ ४१ ॥

वरुणा वात शूलनाशक भेदी गरम पथरीरोग नाशक है
वरनेकाफूल ग्राही पित्तनाशक आमवातका जीतनेवाला है ॥ ४१ ॥

पारिभद्रोऽनिलश्लेष्मशोथमेहक्रिमिञ्जयेत् ॥ ४२ ॥

पारिभद्र (देव दारु) वात कफ मूजन प्रमेह और कृमिका
जीतनेवाला है ॥ ४२ ॥

वासकः कासवैस्वर्ग्यरक्तपित्तकफापहः ।

शुद्धची ग्राहिणी बल्या त्रिदोषघ्नी रसायनी ॥ ४३ ॥

वासक (अदूसा) खांसी विस्वरता रक्त पित्त और कफ
नाशक है गिलोय ग्राहिणी बलकारक त्रिदोषनाशक और
रसायनी है ॥ ४३ ॥

दीपनी ज्वरतृदछर्दिकामलारक्तपित्तनुत् ।

भेदनं पिप्पलीमूलं दीपनं कफनाशनम् ॥ ४४ ॥

दीपनी (अजवायन) ज्वर तृष्णा छर्दि कामला और रक्त
पित्तकी दूर करनेवाली है पीपलामूल भेदन दीपन और कफका
नाश करनेवाला है ॥ ४४ ॥

चविकागजपिप्पल्यौ पिप्पलीमूलवत् स्मृते ।

चित्रकोऽग्निसमः पाके शोधार्शः किमिकुष्ठहा ॥ ४५ ॥

चव्य, गजपीपल, यह पीपलामूलकी समान जानना चीता पाकमें अग्निकी समान सृजन बवासीर कृमि और कुष्ठ रोगको दूर करता है ॥ ४५ ॥

दन्तीसाष्ठीलिकाध्वानगुल्मोदरहरासरा ।

दूषीविषोदरप्लीहगुल्मकुष्ठप्रमेहजित् ॥ ४६ ॥

दन्ती अष्ठीलिका अफारा गुल्म उदररोगहरने वाली सारक है, दूषी विष उदररोग प्लीहा गुल्म कुष्ठ और प्रमेह रोगका जीतने वाला है ॥ ४६ ॥

बहुदोषे प्रयोक्तव्यं वह्नितुल्यं सुधापयः ।

अर्कः किमिहरस्तीक्ष्णः सरोर्शः कफदोषजित् ॥ ४७ ॥

सुधापय (सेंडुडका दूध) बहुत दोषमेंभी देना चाहिये यह अग्नि तुल्य है अर्क (आकवृक्ष) कृमि हरनेवाला तीक्ष्ण सारक और बवासीर कफके दोषोंका जीतनेवाला है ॥ ४७ ॥

तत्पयः किमिदोषघ्नं हितं कुष्ठोदरार्शसि ।

काणकं फल मुतक्लेदितीक्ष्णमुष्णं विरेचनम् ॥ ४८ ॥

उसका दूध कृमि दोषका दूर कर ने वाला कुष्ठ उदर और अर्श रोगमें हित कारक है काणक फल (जमाल गोटा) उत्केदि तीक्ष्ण गरम और विरेचन है ॥ ४८ ॥

धुस्तूरो मदमूर्च्छाकृत्कफघ्नो वह्निपित्तकृत् ।

भल्लातकफलं स्निग्धं किमिदुर्नामनाशनम् ॥ ४९ ॥

धुस्तूर (धतूरा) मद मूर्च्छा का करने वाला है कफ नाशक अग्नि और पित्तका करनेवाला है, भिलावेका फल स्निग्ध कृमि और दुर्नाम (बवासीर) दूर करनेवाला है ॥ ४९ ॥

दन्तस्यैय्यं कर्कशं ग्राहिकपायं मधुरञ्चतत् ।

भल्लातवृन्तं मधुरं पक्वजम्बूफलोपमम् ॥ ५० ॥

दांतोंका स्थिर करनेवाला, ग्राहीक कसेला और मधुरहै और

इसका (कलीकावन्धन) मधुर पक्की जामनके फलके समान होता है ॥ ५० ॥

गुग्गुलुर्दीपनास्तिक्तः सकपायो रसायनः ।

कटुमैदोनिलश्लेष्मकुष्ठघ्नः स्रंसनोलघुः ॥ ५१ ॥

गूगल दीपन है तीखा है कसेला और रसायन है कटु मेद वात श्लेष्मा कुष्ठ नाशक, स्रंसन और लघु है ॥ ५१ ॥

स्निग्धकाञ्चनसङ्काशः पक्वजम्बूफलोपमः ।

नूतनो गुग्गुलुः प्रोक्तः सुगन्धीयश्च पिच्छलः ॥ ५२ ॥

नया गूगल चिकना सुवर्णकी समान पक्के जामनके फलसरीखा होता है और सुगन्धिमान तथा पिच्छल होता है ॥ ५२ ॥

पुराणः शुष्कोदुर्गन्धोमलानां नापकर्षकः ।

अरुणात्रिवृतास्वादुः कपाया मृदुरेचनी ॥ ५३ ॥

पुराना और सूखा गूगल दुर्गन्ध और मलोंको नहीं खेंचता है अरुण त्रिवृता (लाल निसोय) स्वादु कसेली और मृदु रेचक है ५३

रूक्षा च कटुका चैव पाके तित्ता कफापहा ।

तस्याश्चाल्पान्तरगुणा विज्ञेया त्रिवृतासिता ॥ ५४ ॥

कटुका (कुटकी) रूखी पाकमें तीखी तथा कफ नाशक है त्रिवृता (निसोतमे) इससे बहुत थोड़े गुण हैं ॥ ५४ ॥

ज्वरहृद्रोगवातामृगुदावर्त्तादिरोगनुत् ।

राजवृक्षोऽधिकः पथ्यो मृदुर्मधुरशीतलः ॥ ५५ ॥

राजवृक्ष ज्वर हृद्रोग घात रुधिर उदावर्त्त आदि रोगका दूर करने वाला है अधिकपथ्य मृदु मधुर और शीतल है ॥ ५५ ॥

तत्फलं मधुरं वृष्यं वातपित्तहरं सरम् ।

रोहीतकोयकृत् प्रीहगुल्मोदरहरः सरः ॥ ५६ ॥

उसका फल मधुर बलकारक वात पित्त हरनेवाला सारक है रोहित (रोहिडा) यकृत ग्रीहा गुल्म उदर रोग हरनेवाला सारक है ॥ ५६ ॥

रसायनोवृद्धदारः शोयामवातरोगजित् ॥

अपामार्गोऽग्निवत्तीक्ष्णः क्लेदनः संसनः सरः ॥ ५७ ॥

वृद्धदार रसायन है शोथ तथा आम वातरोगको दूर करता है
अपामार्ग (चिरचिर) अग्निकी समान तीक्ष्ण क्लेदी संसन
और सारक है ॥ ५७ ॥

सिन्धुवारो विपश्लेष्मकुष्ठघ्नविषापहः ।

तुलसीपित्तकृद्वातक्रिमिदौर्गन्ध्यनाशिनी ॥ ५८ ॥

सिन्धुवार (निशुंड़ी) विपश्लेष्मा कुष्ठ घ्न और विषका हरने
वाला है तुलसीदल पित्तकारी कृमि और दुर्गन्धका नाशक है ॥

पार्श्वशूलरतिश्वासकास हिक्काविकारजित् ।

मूर्वा तु बृंहणीवल्या कफवातामयान् जयेत् ॥ ५९ ॥

पार्श्व शूल अरति श्वास कास हिचकीके विकारका जीतने
वाला है मूर्वा (मरोस्फली) बलवीर्यकारक है कफ और वातके
रोगोंको जीतने वाली है ॥ ५९ ॥

कपायामधुरारूक्षा वातघ्नी वंशलोचना ।

तुगाक्षीरी क्षयश्वासकासघ्नी मधुरा हिमा ।

दिङ्मात्रं दाशितं ह्येतत् गृह्यतां पण्डितैः परम् ॥ ६० ॥

वंशलोचन कसेला मधुर रूखा और वात नाशक है तवाक्षीर
क्षय श्वास कास नाशक मधुर और शीतल है, यह औषधी
वर्ग दिङ्मात्र दिखादिया है विशेष पंडित लोग महणकर
सकते हैं ॥ ६० ॥

इति श्रीमित्रमुत्सानंद मुनु पंडित ज्वालापसाद मिश्रकृत

भाषाटीकायां वनौषधिर्वर्गः समाप्तः ।

पुस्तकमिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

“ श्रीवैकटेश्वर ” छापाखाना—सेतवाड़ी—(मुंबई.)